बाबू देवकीनन्दन खत्री उपन्यास माला- 2



नरेन्द्र-मोहिनी

हिन्दी के सुप्रसिद्ध एवं बहुचर्चित उपन्यास

बाबू देवकीनन्दन खत्री विरचित

नरेन्द्र-मोहिनी

शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली-110002

सस्करण 1990

मूल्य
35 00

मुद्रक
हिन्दुस्तान प्रिंटर्स यामपुर रोड दिल्ली

प्रकाशक
विजयदेव झारी
शारदा प्रकाशन
16/एफ-3, असारी रोड,
दरियागज, नई दिल्ली- 110002

Narendra Mohini (Novel) by
Devki Nandan Khatri

१

"इस वक्त यह जंगल कैसा भयानक मालूम पड रहा है ! इस चांदनी ने तो और भी रंग जमाया है। पेडो में से छन कर जमीन पर पड़ी हुई दूर तक दिखाई देती है। बीच-बीच में कटे हुए पेडो की थुन्नियां निगाहों के सामने पड कर मेरे दिल के साथ क्या काम करती हैं इसे मैं ही जानता हूँ ! !"

धीरे धीरे यह कहता हुआ बीस बाईस वर्ष के सिन का एक युवा बड़े भारी और डरावने जंगल मे इधर से उधर घूम रहा है। गोरा रंग, हर एक अंग साफ और सुडौल, चेहरे से जवांमर्दी और बहादुरी बरस रही है, मगर साथ ही इसके फिक्र और उदासी भी इसके खूबसूरत चेहरे से मालूम पड रही है।

घूमते घूमते इस नौजवान बहादुर के कान में एक रोने की दर्दनाक आवाज आई जिसे सुनते ही वह चौंक उठा और इधर-उधर ध्यान लगा कर देखने लगा मगर दूसरी बार वह आवाज सुनाई न पडी।

यह दर्दनाक आवाज ऐसी न थी जिसे सुन कर कोई भी अपने दिल को सम्हाल सकता। हमारा यह बहादुर नौजवान तो एकदम ही परेशान हो गया क्योंकि यह जितना दिलेर और ताकतवर था उतना ही नेक और रहमदिल भी था। आवाज कान में पडते ही मालूम हो गया था कि यह किसी कमसिन औरत की आवाज है जिस पर जरूर कोई जुल्म हो रहा है। आखिर इससे रहा न गया और यह आवाज की सीध पर पश्चिम की तरफ चल निकला।

थोडी ही दूर जाने पर फिर वैसी ही दर्दनाक आवाज इस बहादुर के बाईं तरफ से आई जिसे सुन यह बाइं तरफ को मुडा और थोडी ही देर मे उस जगह जा पहुँचा जहा से पत्थर जैसे कलेजे को भी गला कर बहा देने वाली वह आवाज आ रही थी।

वहा पहुँच कर इसकी तबीयत और भी घबडाई खौफ, ताज्जुब और गुस्से से अजब हालत हो गई और कलेजा धक-धक करने लगा क्योंकि उस जगह पर ऐसा ही दृश्य नजर आया।

जिस जगह यह जवान पहुँच कर खड़ा हुआ उसने सामने ही एक बड़ा-सा पीपल का पेड़ था। आधी रात के इस सन्नाटे मे हवा लगने से उस पेड़ की पत्तियां खड़खड़ा रही थी। उसी पेड़ की एक मोटी डाल के साथ एक लाश लटक रही थी जिसके पर मे रस्सी बंधी हुई थी और सिर नीचे की तरफ था। इसी लाश को देखकर हमारे नौजवान बहादुर की वह दशा हुई थी जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं।

उस लाश को देखकर नौजवान ने म्यान से तलवार खैंच ली जो उसके कमर मे बंधी हुई थी और आगे बढ़ा। पास जाने पर मालूम हुआ कि वह लाश एक औरत की है। साड़ी उसकी जमीन पर लटक रही थी और कई जगह से बदन नंगा हो रहा था दोनों हाथ भी नीचे की तरफ लटक रहे थे।

वह बहुत गौर से उस लाश को देखने लगा। इतने म ही हवा का एक तेज झटका आया जिसके सबब से पेड़ की तमाम छोटी-छोटी डालियां हिल हिल कर झोंका खाने लगी। वह डाली भी जो चन्द्रमा की रोशनी को उस लाश तक पहुँचने नहीं देती थी जोर से एक तरफ को हट गई और चन्द्रमा की रोशनी बहुत थोड़ी देर के लिए उस लाश के ऊपर पड़ी। साथ ही नौजवान के बिल्कुल रोंगटे खड़े हो गये क्योंकि उस औरत का चेहरा जो पेड़ के साथ बेहोश उल्टी लटक रही थी उस चांद से किसी तरह कम न था जिसकी रोशनी ने क्षण भर के लिये उसके बदन पर पड़ कर उसकी हालत नौजवान को दिखला दी थी।

नौजवान को चांद की इस रोशनी मे एक बात और भी ताज्जुब की दिखाई पड़ी। वह उल्टी लटकी हुई औरत बिल्कुल जड़ाऊ जेवरों से लदी हुई थी और इस बात को देख कर नौजवान के खयाल कई तरफ दौड़ने लगे।

वह जल्दी से उस लाश के पास जाकर देखने लगा कि इसम कुछ दम है या नहीं। नाक पर हाथ रखा, सांस चल रही थी जिससे मालूम हुआ कि यह नाजुक औरत अभी तक जी रही है। अब इसकी तबीयत कुछ खुश हुई और इसने इस बात पर कमर बांधी कि जिस तरह भी हो सकेगा इसे उतार कर इसकी जान बचाऊंगा और उस शैतान के बच्चे को पूरी सजा दूंगा जिसने इसके साथ ऐसी बुराई की है।

यह सोच कर वह बहादुर नौजवान पेड़ पर चढ़ गया और बहुत होशयारी से साथ उस रस्से का खोला जिससे वह औरत लटक रही थी। उसे धीरे धीरे

जमीन पर छोड़ा और तब आप भी नीचे उतर आया और उसके पैर से रस्सी खोल उसे सीधा कर पेड़ के साथ खड़ा कर दिया, मगर हाथ से थामे रहा जिसमे उसके बदन का तमाम खून जो बहुत देर तक उल्टे रहने के सबब से सिर की तरफ उतर आया था लौट कर तमाम बदन में फैल जाय।

कुछ देर बाद उस औरत ने आख खोली और बैठना चाहा। बहादुर नौजवान ने धीरे से पेड़ के सहारे उसे बैठा दिया और पूछा 'अब मिजाज कैसा है ?" जिसके जवाब में वह कुछ न बोली, हा आख उठा कर चन्द्रमा की तरफ देखा फिर सिर नीचे करके बहुत धीरे धीरे बोलने लगी।

औरत आपने मेरी जान बचाई ! इसका बदला मैं किसी तरह पर नही दे सकती। अगर जन्म भर आपके जूठे बर्तन मांजू तो भी पूरा नही हो सकता।

नौजवान इसके कहने की कोई जरूरत नही, मैंने तुम्हारे साथ कोई नेकी नही की बल्कि मैंने अपनी भलाई की कि अपने को पाप का भागी होने से बचाया। मैंने अपनी जान लड़ा कर तुम्हारी जान नही बचाई, राह चलते इस जगह आ पहुँचा और तुमको इस हालत मे देख कर जो कुछ हो सका किया। मैं तो क्या कोई पत्थर के कलेजे वाला भी इस जगह आकर तुम्हारी-सी औरत को ऐसी दशा मे देखता तो बिना बचाये भला कही जा सकता था ? तिस पर जो जरा भी जानता होगा कि ईश्वर कोई चीज है उससे तो स्वप्न मे भी कभी ऐसा न होगा इसलिए मैंने अपनी ही भलाई की कि अपने को राक्षस कहलाने से बचाया।

इस बीच मे कई दफे हवा के झोंके आये जिन्होंने उस पीपल की डालियों को हटा हटा कर चन्द्रमा की रोशनी को उन दोनो तक पहुँचने दिया जिससे एक को दूसरे ने कुछ अच्छी तरह देखा। हर दफे उस नाजुक औरत ने मीठी-मीठी बातें कहते उस नौजवान की सूरत को देखा मगर देख देख सिर नीचा कर लिया तथा बात खतम होने पर यह जवाब दिया

औरत मुझे इतनी बुद्धि नही है कि आपकी इन बातों का जवाब दूं क्योंकि आखिर तो औरत हूँ, हां मैं इतना जरूर कह सकती हूँ कि आपने मेरे साथ जो कुछ किया उसे मैं ही जानती हूँ, कहने की सामर्थ्य नही और बहुत बातें करने का यह मौका भी नही क्योंकि अगर हम लोग यहा देर तक रहेंगे तो जरूर ही हम तीनो ही की जान बुरी तरह जाएगी।

नौजवान (ताज्जुब से) यहा पर तो सिवाय हमारे तुम्हारे तीसरा कोई भी नही है। तब तुमने यह कैसे कहा कि हम तीनो की जान जायेगी ?

औरत (ऊ ची सास लेकर) हाय ! मेरी बहन भी इसी जगह है।

नौजवान (चौंक कर) हैं यहा पर तुम्हारी बहन भी है ! कहा है ? जल्दी बताओ जिसमे उसके भी बचाव की फिक्र की जाये।

औरत (हाथ से बतला कर) इसी जगह गडी है।

नौजवान अगर जमीन मे गडी है तो वह कब की मर गई होगी !

औरत (चन्द्रमा की तरफ देख कर) नही नहीं, उसे गडे बहुत देर नहीं हुई है, मुझको लटकाने के बाद बदमाशो ने उसे गाडा है। सिवाय इसके वह एक बहुत लम्बे चौडे सदूक म रख कर गाडी गई है, अस्तु जरूर अभी तक जीती होगी।

इतना सुनते ही वह नौजवान उठ खडा हुआ और उस औरत की बताई हुई जमीन को खजर से खोदने लगा, वह नाजुक औरत अपने हाथो से वहां की मिट्टी हटाने लगी।

सदूक बहुत नीचे नही गाडा गया था इसलिए उसके ऊपर वाला तख्ता बहुत जल्द निकल आया।

सदूक म ताला नही लगा था। नौजवान ने आसानी से उसका पल्ला उठा कर किनारे किया और तब दोनो ने मिल कर उस औरत को सदूक से बाहर निकाला जो उसके अन्दर बेहोश पडी हुई थी। इसके बदन के भी कुल गहने जडाऊ थे और साडी भी बेशकीमती थी। चेहरा साफ नजर नहीं आता था तो भी कुछ कुछ पडती हुई चन्द्रमा की रोशनी उसकी खूबसूरती को छिपा रहने नहीं देती थी।

सन्दूक के बाहर निकलने और ठण्डी हवा लगने पर दो घडी के बाद वहीं जाकर उसे होश आया। तब तक वह नौजवान और वह नाजुक औरत अपने रूमाल और आचल से उसके मुह पर हवा करते रहे।

होश मे आते ही उस औरत ने चौंक कर उस नौजवान तथा उस नाजुक औरत की तरफ देखा और धीरे-से बोली, 'बहिन, मेरी यह दशा कैसे हुई ?' उसने जवाब दिया 'यह वक्त इन सब बातो के पूछने का नही है। इस समय हम लोगो को यही चाहिए कि सिवाय भागने के और कुछ न करें बल्कि जब

क दूर न निकल जाएँ बात तक न करें, हा जब ईश्वर हम लोगो को किसी हिफाजत की जगह पर पहुँचा देगा तब सबकुछ वह सुन लेंगे।"

इतना सुनते ही वह उठ कर बठ गई और इधर उधर देखकर फिर बोली, 'बहिन, क्या हम लोग एसी जगह आ फँसे ह कि सिवाय भागन के और कुछ भी नही कर सकते ? अगर ऐसा हो तो मैं भागन क। तैयार हूँ मगर कम से कम इतना तो बता दो कि यह नौजवान जो तुम्हारे पास बठा है कौन ह और रे बगल म यह गडहा कसा है जिसम स दूक स दिखाई पडता है ? '

औरत मैं आप ही नहीं जानती कि यह बहादुर जिसने हम लोगो की जान बचाई कौन है, हा इस गडहे और स दूक का हाल जानती हू मगर इस वक्त सिवाय भागने के मुझे और कुछ नही सूझता। अगर तुम्हारे म भागन की ताकत न हो तो बोलो उठा कर तुम्हारे यहा से निकाल ले जाने की फिक्र की जाए।

दूसरी औरत नहीं नही, अब मैं बखूबी तुम लोगो के साथ चल सकती हूँ लो चलो मैं तयार हूँ।

यह कह कर वह उठ खडी हुई और चलने को तयार हो गई।

२

तीनो उस जगह स धीरे-धीरे रवाना हुए। उस नौजवान औरत ने जो पेड पर से उतारी गई थी कहा, ' मुझे आगे चलने दो क्योंकि मैं बहुत जल्द यहा से निकल चलने का रास्ता जानती हूँ, और तुम दोनो चुपचाप मेरे पीछे पीछे आओ।" नौजवान औरत आगे हुई और सीधे पश्चिम की तरफ चल निकली, ये दोनो भी चुपचाप उसके पीछे पीछे जाने लगे।

लगभग घडी भर चलने के बाद ये तीनो एक नदी के किनारे पहुँचे जिसका पाट बहुत चौडा न था मगर इतना कम भी न था कि किसी का फेंका हुआ पत्थर या ढेला उस पार पहुच सकता।

छोटी छोटी दो खूबसूरत किश्तियाँ किनारे पर खूँटे से बँधी हुई दिखाई पडी जिन पर खेने के लिए हलके-हलके डाँडे भी पडे थे। वह नाजुक औरत उसी जगह खडी हो गई और अपने पीछे आने वाले दोनो से बोली, ' जल्दी इन म से किसी एक किश्ती पर सवार हो जा, देर मत करो।" यह सुन नौजवान

ने कहा — पहिले तुम दोनो सवार हो लो फिर मैं भी सवार हो जाऊँगा।" यह कह अपने हाथ का सहारा दे दोनो औरतो को किश्ती पर सवार कराया मगर जब खुद चढने लगा तब उस नाजुक औरत ने रोका और कहा 'पहिले उस दूसरी किश्ती को किनारे से खोल कर इस किश्ती के साथ बाँध लो तब तुम सवार हो क्योंकि उस किश्ती को भी मैं अपने साथ लेती चलूँगी।"

नौजवान — दूसरी किश्ती को इसके साथ बाँध कर ले चलना बेफायदे है और हमारी किश्ती उसके साथ बंधने से उतनी तेज न चल सकेगी जितनी अकेली।

औरत — नही, जो मैं कहती हूँ उसे करो, इसका सबब तुम्हें मालूम नहीं। बस अब देर करने मे हर्ज होगा। जल्दी उस किश्ती को भी इसके साथ बाँध कर तुम सवार हो जाओ।

नौजवान ने यह सोचकर कि शायद इसमे कोई भेद हो उस दूसरी किश्ती को किनारे से खोल अपनी किश्ती के साथ बाँधा और खुद सवार होकर किश्ती किनारे से हटाने के बाद डांड लेकर खेने लगा।

औरत — अब मेरा जी ठिकाने हुआ और जान बचने की उम्मीद हुई। यह सब आप की बदौलत है। अब आप इस तरफ आकर बैठिये, मैं किश्ती खेकर ले चलती हूँ।

नौजवान — वाह! मैं बैठूं और तुम किश्ती खेओ! यह भी खूब कही! बस तुम दोनो चुपचाप बैठी रहो देखो मैं कितने तेज इसे ले चलता हूँ। तुम लोगो के तो अभी तक होश भी ठिकाने नही हुए होगे। हाँ यह तो बताओ कि अभी तक तो मुझको 'तुम तुम' कह कर पुकारती रही मगर जब से किश्ती पर सवार हुई हो आप कह के पुकारने लगी इसका क्या सबब है? तुम्हारी बातचीत से साफ मालूम होता है कि तुम पढी लिखी हो। अगर ऐसा न होता तो मैं इस बात का खयाल न करता और कभी तुमसे यह सवाल न करता।

उन दोनो औरतो ने इसका जवाब कुछ न दिया बल्कि मुस्कुरा कर सिर नीचा कर लिया।

नौजवान — भला किसी तरह तुम दोनो के चेहरे पर हँसी तो दिखाई दी!

औरत — हम लोग काफी दूर निकल आये हैं। अब अगर यह किश्ती जो हमारी किश्ती के साथ बंधी हुई चली आ रही है डुबा दी जाय तो हम लोग

पूरे तौर पर निश्चित हो जाए।

नौजवान इस दूसरी किश्ती को अपने साथ लाने का सबब अब मैं बखूबी समझ गया, जहा तक हो इसे जल्द डुबा ही देना चाहिये और सो भी इस तर्कीब से कि हमारी किश्ती को कोई नुकसान न पहुचे।

यह कह नौजवान ने डाड खेना बन्द कर दिया और अपनी किश्ती से उतर कर उस किश्ती पर गया जो पीछे बधी हुई थी। इसने अपनी कमर से खजर निकाल एक हाथ जोर से उसकी पेंदी मे मारा जिससे सूराख होकर उसमे पानी आने लगा इसके बाद नौजवान ने अपनी किश्ती मे आकर उसे खोल दिया और धीरे स खेकर अपनी किश्ती कुछ आगे बढा ले गया।

देखते देखते उस दूसरी किश्ती म जल भर आया और वह डूब गई। अब नौजवान न अपनी किश्ती खूब तेजी से आगे बढाई।

नदी का जल बिल्कुल ठहरा हुआ मालूम होता था जसे किसी ने फश बिछा दिया हो। चन्द्रमा भी अपनी पूण किरणो से साफ आसमान म उठा हुआ था। ये तीनो किश्ती पर बैठे चले जा रहे थे। तीनो नौजवान, तीनो खूबसूरत तीनो नाजुकबदन, आपुस मे देख-देख कर खुश होते मुस्कुराते और डाडे चलाये चले जाते थे।

नाजुक औरत ने हस कर हमारे नौजवान बहादुर से कहा, "बस अब हम लोगो को किसी का डर और खौफ नही है, किश्ती को धीरे धीरे बहने दीजिए और मेरे पास आकर बठिए।"

नौजवान भी यही चाहता था कि इन दोनो के पास बैठ कर बातचीत से मालूम करे कि ये दोनो कौन हैं, क्योकि अब बात करने का मौका बहुत अच्छा है, अस्तु उसने डाड खेना बन्द कर दिया बल्कि उन्हें उठा कर किश्ती मे डाल लिया और खुशी खुशी उस जगह आकर बठ गया जहा वे दोनो औरतें बैठी हुई थी।,

३

किश्ती धीरे धीरे बहने लगी। नौजवान ने दोनो औरतो की तरफ देख कर कहा, "अब हम बिल्कुल बेखौफ हैं, मुझे तो किसी का डर न था मगर तुम लोगो के सबब से डरना पडा। अब तुम दोनो का हाल जाने बिना जी बहुत

ही बेचन हो रहा है और इससे अच्छा समय भी बातचीत करने का न मिलेगा।"

नाजुक औरत पहिले आप कहिये कि आपका क्या नाम है, कहां के रहने वाले हैं और उस जंगल में—(कांप कर) ओफ! याद करते कलेजा दहलता है—आप कैसे पहुंचे?

नौजवान पहिले तुमको अपना हाल कहना चाहिए क्योंकि तुम्हारे पूछने के पहिले ही मैं यह सवाल कर चुका हूं सिवाय इसके मेरा कोई विचित्र हाल भी नहीं है, हां तुम दोनों की हालत जब याद करता हूं तो जरूर बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हाय, उसका कैसा कलेजा था जिसने तुम दोनों के साथ ऐसा सलूक किया!

दूसरी औरत (जो जमीन से निकाली गई थी) हां बहिन, पहिले तुम ही अपना हाल कहो क्योंकि मेरी तबीयत भी यह सुने बिना बहुत ही घबड़ा रही है कि मेरी वह दशा किसने की थी।

नाजुक औरत अच्छा पहिले मैं ही अपनी रामकहानी कहती हूं। (नौजवान की तरफ देख कर) आप और कुछ हाल न कहिये तो कम से कम अपना नाम तो बता दीजिये जिसमें बात करने या पुकारने का सुबीता हो।

नौजवान इसमें कोई मुजायका नहीं, सुनो मेरा नाम नरेन्द्र है। बस अब जब तक तुम दोनों का पूरा हाल न मालूम होगा मैं और कुछ न कहूँगा।

नाजुक औरत हां हां अब आप दिल लगा कर मेरा हाल सुनिये, मैं कहती हूं।

इन लोगों ने किश्ती खेना बंद कर दिया था और एक-दूसरे की बात में इतना लीन हो रहे थे कि इन्हें किश्ती की चाल और बहाव का कुछ खयाल न रहा था जिससे वह बहती हुई कुछ किनारे की तरफ हो गई।

अभी नाजुक औरत ने अपना किस्सा कहना शुरू नहीं किया था कि इन लोगों की किश्ती एक घने पीपल के पेड़ के नीचे पहुंची जो नदी के किनारे ही पर था।

इन लोगों की किश्ती उस पेड़ के नीचे पहुंची ही थी कि ऊपर से आवाज आई, "भला नरेंद्र ले जा सका के! अब यारों की फिक्र क्यों होगी! मगर हम भी तुम्हारे ओस्ताद ही निकले रास्ता ही आकर बंद कर दिया! भला अब आगे बढ़ो तो सही देखें कितना हौसला रखते हो!!

इस आवाज के सुनने से वे दोनों औरतें डरीं मगर हमारा बहादुर नौजवान एकदम हँस पड़ा जिससे दोनों औरतों को बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि उस आवाज को सुनकर वे घबरा गई थीं। उनको पूरा विश्वास हो गया था कि कोई हम लोगों का दुश्मन आ पहुँचा और डर के मारे उनका बदन काँपने लगा था, मगर हमारे बहादुर नौजवान नरेन्द्र को हँसते देख उन दोनों की विचित्र हालत हो गई और वे उसके मुँह की तरफ देखने लगीं। नरेन्द्र ने हँस कर कहा— "घबराओ मत, देखो मैं इसे अपनी किश्ती पर बुलाता हूँ।" इतना कह उस पेड़ की तरफ देखा और बोले— "अबे भूतने! अबे पेड़ से उतरेगा भी कि ऊपर ही बैठा रहेगा? आ किनारे पर!!"

आवाज नहीं, अब मैं नीचे नहीं आने का, आओ किश्ती से जाओ! हि हि हि हि किश्ती ने जाना क्या हँसी ठट्ठा है! हूँ, तो ऐसा मन्त्र पढ़ दिया कि सिवाय किनारे लगाने के इस किश्ती को तुम आगे ले जा ही नहीं सकते। बचाजी, तुम तो खूब जान बचा के भागे थे पर अब कहाँ जाओगे? तीन दिन का भूखा प्यासा मैं आज तुम तीनों को खाये बिना थोड़े ही छोड़ूँगा!!"

नरेन्द्र (किश्ती किनारे लगा कर) अबे उतरेगा कि दूँ मिर्चे की धूनी!

आवाज अगर मिर्च के खेत में भी आग लगा दो तो कुछ नहीं होगा!

नरेन्द्र अच्छा मेरे भाई, अब तो उतरो।

आवाज जी हाँ, मैं ऐसा वैसा भूत नहीं हूँ कि जल्दी उतर जाऊँ।

नरेन्द्र अबे उतरता है कि नहीं!

आवाज जाता है कि नहीं!

नरेन्द्र राम राम, इसने तो दिक कर डाला! भला यह तो बताओ तुम उतरते क्यों नहीं?

आवाज भाई जान, तुम रंज क्यों हो गए? जानते ही हो कि मैं कितना फूंक फूंक कर पैर रखता हूँ।

नरेन्द्र तो इस वक्त तुम्हें किस बात का डर है?

आवाज यही कि कहीं नजर न लग जाय।

नरेन्द्र किसकी नजर?

आवाज ये दोनों औरतें मेरी जवानी और पहलवानी पर नजर लगा देंगी।

इतना सुनते ही नरेन्द्र एकदम खिलखिलाकर हस पडा बल्कि वे दोना औरतें भी जो अभी तक डर के मारे काप रही थी हस पडी, मगर फिर सोचने लगी, "यह कौन है ? क्या सचमुच कोई भूत है। अगर यह भूत है तो नरेन्द्र भी कोई पिशाच ही होगे। नही नही, ऐसा नही सोचना चाहिए। नरेन्द्र बहादुर और लासानी आदमी हैं, और फिर अगर भूत-प्रेत या पिशाच होते तो इनकी पर छाही जो चन्द्रमा की रोशनी से इस किश्ती म पड रही है न पडती होती और इनके आखो की पलकें भी नीचे न गिरती ! खर यह सब तो ठीक है मगर वह कौन है जो पेड पर चढा हुआ बोल रहा है और नीचे नहीं उतरता।"

नरेन्द्र ने बहुतकुछ कहा मगर वह शैतान पेड के नीचे न उतरा। आखिर नरेन्द्र हसते हुए किश्ती से नीचे उतरे और पेड के पास जाकर बोले, 'उतरता है या काट डालू पेड को ?" यह कह एक हाथ तलवार का उस पेड पर लगाया साथ ही इसके पेड के ऊपर वाला शतान चिल्लाया, 'हां हां हां हां ! ऐसा काम कभी मत करना ! पेड मत काटना नही तो मैं गिर कर मर जाऊगा ! लो मैं आप ही उतरता हूँ तुम दिक मत करो !!"

नरेन्द्र अच्छा तो फिर उतर जल्दी !

आवाज उतरता हूँ, घबडाते क्यो हो ? क्या जल्दी में गिर कर जान दे दू ?

आखिर धीरे धीरे शतान नीचे उतरा और नरेन्द्र ने उसका हाथ पकड के किश्ती पर ला बैठाया, इसके बाद किश्ती को किनारे से हटा गहरे जल म ले जाकर बहाव पर छोड दिया।

नरेन्द्र ने जब से उस शतान को किश्ती मे लाकर बैठाया तभी से उसकी शक्ल देख देख दोनो औरतों की अजब हालत हो रही थी। मारे हसी के लोटी जा रही थी, क्योकि पेड पर से वह जिस दिलावरी और डरावनी आवाज से बोलता था नीचे उतरने पर वह वसा न पाया गया बल्कि उसकी सूरत ऐसी थी कि जो कोई देखे जरूर हसने लगे।

पचीस तीस वष का सिन, नाटा कद, छोटे छोटे हाथ-पैर, सीतला मुह दाग, एक आख गायब, लाल रग की धोती, लाल ही रग का कुरता और टोपी जिसम गोटा टका हुआ था कांधे पर एक अगोछा, बगल मे एक बटुआ, हाथ मे भांग घाटन का डण्डा, भाग पीसने की कूडी टोपी के नीचे।

ऐसी सूरत देख कर भला किसे हसी न आवेगी ? दोनो औरतों ने मुश्किल से हसी रोक कर नरेन्द्र को हाथ के इशारे से अपने पास बुलाया और धीरे-से पूछा "यह कौन हैं जिसे बडी चाह से तुम इस किश्ती पर लाये हो ?"

नरेन्द्र यह हमारा लडकपन का साथी है।

औरत क्या तुम्हारा ऐसे ही लोगो से साथ रहता है ?

नरेन्द्र नही नही, हम तो दिल बहलाने के लिए इसको अपने साथ रखते रहे हैं बडा खरख्वाह है और जान से ज्याद हमको मानता है। कुछ थोडा-सा बेवकूफ तो है मगर बाज दफे इसे दूर की सूझती है। अब तो यह साथ ही है, इसका बाकी हाल तुमको रास्ते मे मालूम हो जायगा।

औरत इसका और तुम्हारा साथ कब छूटा ?

नरेन्द्र मैं तो अकेला घर से निकला था, यह शायद मुझे ढूंढता हुआ आ पहुचा। देखो मैं इससे हाल पूछता हू, आप ही सब मालूम हो जायगा।

औरत इसका नाम क्या है ?

नरेन्द्र इसका नाम सभी ने बहादुरसिंह रक्खा है।

बहादुरसिंह का नाम सुनकर फिर उन दोनो को हसी आ गई।

बहादुर० क्यो जी नरेन्द्र, यह दोनो औरतें घडी-घडी मुझको देख-देख कर हसती क्यो हैं ? कही मुझे भी गुस्सा आ जाय तो क्या हो?

नरेन्द्र भला इसमे रज होने की कौन सी बात है। जो कोई तुम्हे देखकर खुश हो उससे रज होना क्या मुनासिब है ?

बहादुर० नही, मैंने कहा कि शायद अगर इन दोनो को किसी बात की शेखी हो तो मैं अभी तयार हू आवें कुश्ती लड के जी का हौसला मिटा लें।

नरेन्द्र वाह, औरतो ही से कुश्ती लडकर पहलवानी दिखाओगे ?

बहादुर० जी हा कल के लडके हो, कभी औरतो से पाला नही पडा है। सुन और मेरी नसीहत याद रक्खो, दस मरदो से लड जाना कोई मुश्किल नही मगर एक भी औरत का मुकाबिला करना टेढी खीर होता है।

नरेन्द्र सच है सच है, लेकिन भला यह तो कहो कि तुम इस जगल मे कहा से पैदा हो गए ?

बहादुर० तुम तो चुपचाप घर से निकल भागे समझे कि बस हो चुका अब पता कौन लगाता है। मगर इसको भूल ही गये कि मैं चालीस कम सौ

कोस से तुम्हारी बू पा लेता हू। खोजता खोजता आखिर आ ही न पहुचा। मैं तो डरा (रक कर) राम राम डरा काहे को मैं तो किसी से कभी डरता ही नही कहन की कुछ मुह से निकलता है कुछ।

दोनो औरतें (हस कर) क्या डीग की लेते है, शेखी किए बिना न मालूम क्या बिगडा जाता है! अजी ऐसे जगल बियाबान मे जहा हजारो डाकू घूमते रहते हैं बडे बडे डर जाते है, अगर तुम डरे तो कौन सी बात है।

बहादुर० सच तो कहा, मगर मैं तो कही डरता ही नही, हा यह तो कहो क्या सचमुच इस जगल म डाकू घूमा करते है?

नरेन्द्र बेशक, अभी हमी से डाकुओ से मुठभेड हो गई थी, बारे किसी तरह बच गये।

बहादुर अफसोस, हम नही हुए, नही एक को भी जीता न छोडते, हा यह तो बताओ कै डाकू थे?

नरेन्द्र यही कोई चालीस-पचास।

बहादुर बस इतने ही। इतनो से भला क्या डरना? अच्छा इन सब बातो को जाने दो और मेरी सुनो। अब सवेरा हुआ चाहता है, यह किनारे वाला जगल भी बडा ही रमणीक है चलो किश्ती किनारे लगाओ, मैं भग पीसता हूँ तुम भी पीओ और इन दोनो को भी पिलाओ। यह भी क्या याद करेंगे कि किसी के हाथ की भग पी थी। बस इसी जगह दिसा फरागत, स्नान-पूजा से छुट्टी पाकर फिर जहा चाह चलना।

"अच्छा चलो" कहकर नरेन्द्र न डाड उठाया और किश्ती का मुह किनारे की तरफ फेरा ही था कि किनारे स गीदड के चिल्लाने की आवाज आई।

बहादुर वस वस नही नही इधर नही और आगे चलो। यह जगल किसी काम का नही यगन है आग घन जगल म ठीक रहगा।

इतना सुनन हा दोना औरतें खिलखिला कर हस पडी और नरेन्द्र ने भी मुस्कुरा दिया।

बहादुर वस बात तो साचा नही और हम दिया। क्या तुम लोगो न समझ लिया कि वहादुरसिह गीदड की आवाज सुन कर डर गय? ऐसा ही डरन तो तुमको खाजन क्या निकलत? मुझको आज रास्ते म ऐस एमे जगल ···ा पचासो पड इकट्ठे एक से एक सटे और चिपके दिखाई पडते थे।

बहादुरसिंह की इस बात ने तीनो को और भी हसाया। नरेन्द्र तो जनाते ही थे कि बहादुरसिंह बडा डरपोक है। मगर बात बनाने से नही चूकता। यह तो उनकी मुहब्बत मे घर से निकल पडा नही तो कभी अकेला दूर जाने वाला थोडे ही था।

नरेन्द्र बस जो असल बात थी तुमने खुद कह दी। यह भी मालूम हो गया कि तुम बडे-बडे घने जगलों को पार करते हुए मुझसे मिले हो उस छोटे जगल मे नही पहुँचे जहा मैं फसा था।

बहादुर जी हा, इसमे भी कोई झूठ है। अरे अरे, फिर तुम किनारे ही पर किश्ती लिये जा रहे हो! सुनते नही मैं क्या कहता हूँ!!

नरेन्द्र (झुझला कर) अजब उल्लू है! क्या सैकडो कोस तक जगल ही मिलता जायगा? जगल कब का पीछे छूट गया यह भी कोई जगल है? दस-बीस बेरी के पेड देखे और कह दिया जगल है! अब कौन-सा घना जगल मिलेगा? देखता नही आगे बालू ही बालू दिखाई देता है!!

बहादुर वाह, मुझी को उल्लू बनाने लगे, मैं तो खुद ही कहता हूँ कि आगे किसी जगल के किनारे नाव लगाओ यहा मदान है।

नरेन्द्र बस बस, आगे यह भी नही मिलेगा।

नरेन्द्र ने बहादुरसिंह की बकवाद पर ध्यान न दिया और किश्ती किनारे पर लगा कर बहादुरसिंह से उतरने के लिए कहा मगर वह न उतरा, कहने लगा, "मैं इसी किश्ती पर भग बना लूगा तब उतरूगा, और तुम भी बैठो, जल्दी क्या है, अभी तो अच्छी तरह सवेरा भी नही हुआ।"

औरत अच्छा इनको यहा बैठने दो, चलो हम लोग नीचे उतरें।

नरेन्द्र अच्छा चलो।

नरेन्द्र ने लग्गी गाड के किश्ती बाध दी, तब हाथ का सहारा दे दोनो औरतो को किनारे पर उतारा और उनके बठने के लिए अपनी कमर से चादर खोल जमीन पर बिछा दिया।

जब से नरेन्द्र ने इन दोनो औरतो को फासी और कब्र से बचाया और किश्ती पर सवार होकर पूरे चन्द्रमा का रोशनी मे इनकी सूरत देखी तभी से इन पर जी जान से आशिक हो गये थे। उधर वे दोनो औरतें भी पूरी मुहब्बत की निगाह से इनको देखने लगी बल्कि इनको पाकर अपनी बिल्कुल तकलीफ

भूल गई और सोच लिया कि अब जन्म भर इनका साथ कभी न छोड़ेंगी।

तीनों किनारे पर बठे, नरेन्द्र ने कहा, "उस मंगेड़ी मसखरे की बातचीत मे तुम दोनो का हाल भी न सुना।"

एक औरत क्या हर्ज है लौंडी तो साथ मे हुई है, जब चाहे इसकी राम-कहानी सुन लेना, पर अब तो हाल कहने का मौका है नही।

नरेन्द्र अच्छा, हाल किसी दूसरे वक्त सुन लेंगे मगर अपना नाम तो इस वक्त बता दो।

एक औरत (जो पेड पर से उतारी गई थी) जी, मेरा नाम तो मोहनी है और इसका नाम गुलाब है जिसे आपने जमीन से निकाल कर बचाया।

नरेन्द्र मोहनी ! अहा क्या सुन्दर नाम है !!

इतने मे दूर से कुत्ते के भूकने की आवाज आई जिसे सुन नरेन्द्र ने मोहनी की तरफ देख के कहा, 'मालूम होता है यहा पास ही कोई गाँव है क्योंकि कुत्ते सिवाय आबादी के और कही नही रहते। अच्छी बात हो अगर हम लोग आज का दिन इसी गाव मे काटें क्योंकि दिन की धूप इस खुली हुई छोटी किश्ती मे नही बर्दाश्त होगी।

मोहनी आपका कहना सच है मगर हम लोगो का किसी छोटे गाव मे रहना उचित नही, इससे तो दिन भर की धूप सह कर भी इसी किश्ती पर सफर करते रहना ठीक होगा।

गुलाब (इधर उधर देख कर) देखो वह एक नाव का मस्तूल दिखाई देता है। (उठ के और गौर से देख कर) वाह वाह यह तो बडी भारी छप्पर-दार नाव है अगर इसे किराये पर लिया जाय तो बहुत अच्छा हो। इसी पर सफर करते हुए हम लोग किसी शहर मे बडे आराम के साथ पहुच जायगे।

नरेन्द्र (खडे होकर और उस नाव को देख कर) हा ठीक तो है।

मोहनी बस तो फिर देर क्यो उसी नाव को ठीक कीजिए, चलिए इसी किश्ती पर बठ कर वहा चले चलें।

नरेन्द्र अभी तुम लोगो को वहा ले चलना ठीक न होगा। कौन ठिकाना वह नाव खाली है या किसी का माल लदा है अगर दूसरे के किराये म होगी तो मुझे कस मिल सकेगी ? तुम दोनो अच्छे कपडे और गहने पहिरे हो कोई देखेगा तो क्या समझेगा ? कोई एसी तर्कीब भी नही हो सकती कि तुम दोनो

को छिपा कर वहा तक ले चलू और अगर नाव भरी न हो तो उसी जगह किराये कर लू । इस तरह बहुत आदमियो के बीच मे तुम दोनो को कैसे ले चलू ।

गुलाब चलिये नाव खाली हुई तो सवार हो लेंगे नहीं तो आगे चल कर वहीं ठहरेंगे और आज का दिन डोगी मे ही बिता देंगे ।

नरेन्द्र आगे दूर तक बालू ही बालू दिखाई पड़ता है, कही पेड़ का नाम-निशान नहीं है, कहा ठहरेंगे ?

मोहनी तो फिर आपकी क्या राय है ?

नरेन्द्र मैं चाहता हूँ कि तुम दोनो यहा ठहरो बहादुरसिंह भी तुम्हारे पास हैं, मैं बहुत जल्द जाकर उस नाव को देख आता हूँ । अगर खाली होगी तो तुम लोगो को ले जाकर सवार कराऊगा नही तो इस जगह लौट कर हम लोग दिन बितावेंगे और रात को फिर चलेंगे ।

मोहनी नही नही, अब मैं तुम्हारा साथ न छोड़ूगी, क्या जाने तुम कही

नरेन्द्र वाह, मैं कहा चला जाऊगा? बात की बात मे लौट के आता हू !

मोहनी (आख डबडबा कर) मैं क्या

नरेन्द्र ने मोहनी की आखो मे आँसू डबडबाते हुए देखा । जी बेचैन हो गया, हाथ थाम कर बोला, "हैं यह क्या ? यह आँसू कैसा ?"

मोहनी का जी पूरे तौर से उमड आया, आसुओ की तार बध गई, हिचकी लेकर बोली, "न मालूम क्यो मेरा कलेजा काप रहा है, खुदबखुद रोने को जी चाहता है, बस तुम मत जाओ इसी जगह दिन काटो, जो कुछ होगा देखा जायगा ।"

खैर किसी तरह नरेन्द्र ने बहुत तरह से मोहनी को समझा-बुझा कर इस बात पर राजी किया कि वे जा कर नाव का हाल दर्याफ्त कर आवें ।

हमारे बहादुरसिंह अभी तक भग घोट रहे हैं । दीन दुनिया की कुछ खबर नहीं, यह भी नही मालूम कि नरेन्द्र, मोहनी और गुलाब म क्या-क्या बातचीत हुई । दोना परो से भग पीसने की कूडी पकड़े हुए नीचे के होठ को दातो से दबाय कभी बाई तरफ, कभी दाहिनी तरफ सोंटा घुमा घुमा भग पीस रहे हैं ।

नरेन्द्र ने पुकार कर कहा "अजी ओ बहादुर भगी ! अभी तक तुम्हारी भग तैयार नही हुई ? देखो इधर ख्याल रक्खो हम जाते हैं।"

बहादुरसिंह ने गुस्से की निगाह से नरेन्द्र की तरफ देख कर कहा "बस खबरदार। हमको भगी का कहना इतना बुरा न मालूम हुआ जितना तुम्हारे इस कहने का रज हुआ कि हम जाते हैं। क्या मजाल जो तुम कही जा सको! एक क्या दस करोड नरेन्द्र बन कर आओ तब तो जाने ही न दू ! एक दफे तुम्हें अकेले छोड के फल पा लिया, अब क्या मैं उल्लू हूँ जो घडी घडी ऐसा ही करू ?"

नरेन्द्र अबे कुछ सुनता समझता भी है कि अपनी ही टाय टाय किये जाता है!

बहादुर बस बस, मैं सब सुन चुका और समझ गया बठो सीधे होकर!

नरेन्द्र अजी मैं नाव किराये करने जाता हू और कही नहीं जाता।

बहादुर नाव ! नाव कैसी ? यह क्या छकडा है ?

नरेन्द्र (हस कर) यह भी नाव है मगर मैं बडी नाव छप्पर वाली किराये करने जाता हू।

बहादुर कहा है छप्पर वाली नाव ?

नरेन्द्र (हाथ से इशारा करके) वह देखो।

बहादुर हा है तो (सोटा रख कर) मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

नरेन्द्र (मोहनी और गुलाब को बता कर) तो इनके पास कौन रहेगा ?

बहादुर तुम।

नरेन्द्र और तुम किसके साथ जाओगे ?

बहादुर नरेन्द्र के साथ।

बहादुरसिंह की इस बात ने सब को हसा दिया। मोहनी जो उदास बठी थी वह भी एकदम हस पडी।

बहादुर हसने की कौन बात है ! (कुछ सोच कर) हा हा ठीक है, मुझसे गलती हुई मैं भूल गया अच्छा जाओ सीधे उस नाव की तरफ चले जाओ। मैं देख रहा हू इधर-उधर हटे नहीं कि मैंने डण्डा फेंककर मारा।

अच्छा यही सही !" यह कह कर नरेन्द्र उस बडी नाव की तरफ रवाने हुए। मोहनी और बहादुरसिंह की निगाह बराबर नरेन्द्र की तरफ थी।

४

हमारा बहादुर नौजवान इन तीनों को उसी जगह छोड उस नाव की तरफ चला और यह इरादा कर लिया कि उसे किराये करके आराम से अपना सफर तमाम करेगा। पाठक, इतना तो मालूम ही हो गया कि उसका नाम नरेन्द्रसिंह है, अस्तु अब हमको भी इसी नाम से इस उपन्यास मे लिखना ठीक होगा।

देखने मे वह नाव बहुत पास मालूम देती थी मगर नरेंद्रसिंह के वहा पहुचते-पहुचते पहर भर से ज्यादा दिन चढ आया। पास पहुँच कर उन्होंने किसी आदमी को उस नाव के ऊपर न देखा, इस सबब से नाव के पास जाकर अन्दर की तरफ झाका।

यह नाव बहुत बडी थी और इस लायक थी कि हजार मन से ज्यादा बोझ लाद सके। फूस का छप्पर उसके ऊपर था और चारा तरफ टटियो से घेरा हुआ था। दो चार खिडकिया भी दोनो तरफ इस लायक थीं कि भीतर बैठा हुआ आदमी बाहर की तरफ देख सके। नरेंद्रसिंह को झाकते देख एक आदमी अन्दर से बाहर निकल आया,जिसको सूरत देखने से मालूम होता था कि यह मल्लाह है। उसने इनसे पूछा, "आप क्या चाहते हैं ?"

नरेन्द्र क्या यह नाव किराये पर हो सकती है ?

मल्लाह हाँ हाँ आप जरूर इसे किराये पर ले सकते हैं।

नरेन्द्र इसका मालिक कौन है ?

यह सुनकर मल्लाह ने अन्दर की तरफ मुह कर "बिहारी, बिहारी !" करके आवाज दी। आवाज के साथ ही एक दूसरे मल्लाह ने बाहर निकल कर पूछा, "क्या है ?"

पहिला मल्लाह सर्कार नाव किराए किया चाहते हैं।

दूसरा (नरेन्द्रसिंह की तरफ देख कर) कुछ माल लादा जायगा ?

नरेन्द्र नहीं, हम दो-तीन आदमी हैं जो इस पर सवार होकर सफर किया चाहते हैं।

मल्लाह कहाँ तक जाइएगा ?

नरेन्द्र हम लोग पटने तक जाएगे।

मल्लाह तो आपके और साथी सब कहाँ हैं?

नरेन्द्र (हाथ का इशारा करके) उस तरफ थोडी दूर पर हैं, तुम बात-चीत कर लो तो बुला लावें।

मल्लाह सवारी जनानी भी है या सब मर्दाने ही हैं?

नरेन्द्र हाँ, जनाने भी हैं।

मल्लाह अच्छा आइये यहा आकर भीतर से नाव को देख लीजिये। जनानी सवारी के सुबीते को भी जगह इसमे बनी हुई है।

यह कह मल्लाह ने एक काठ की सीढी नीचे गिरा दी और नरेन्द्रसिंह का हाथ पकड कर ऊपर चढा लिया, तब अपने साथ छप्पर के अन्दर ले गया। नरेन्द्रसिंह न अन्दर लगभग पन्द्रह-बीस मल्लाहो को बठे पाया जिनमे पाच छ तो बडी भयानक सूरत के थे। उनकी काली-काली सूरत और बडी-बडी आखें देखने ही मे डर मालूम होता था। एक तरफ कुछ थोडी-सी कुल्हाडिया गडासे नेजे और तलवारो का ढेर लगा हुआ था और दस-बीस गठडिया भी ऐसी पडी थी कि जो देखने से किसी सौदागर की मालूम होती थी। इन चीजो को देख नरेन्द्रसिह के जी मे कई तरह के खुटके पैदा हुए और इस नाव को किराये करने का मन न किया। मल्लाहो की तरफ देख कर बोले, "हम लोग सिर्फ चार आदमी हैं। नाव बहुत बडी है और सफर भी बहुत दूर तक का है। यह नाव मेरे काम की नही है।" बिहारी ने कहा, "एक नाव बहुत छोटी और पटी हुई हमारे पास और भी है, अगर उस पर आप सफर करें तो सिर्फ एक ही मल्लाह आपको पटने तक पहुँचा सकेगा क्योकि वह नाव चलने मे बहुत सुबुक है। अगर जरा-सा आप यहा ठहरें तो उस नाव को यहा लाकर दिखला दूँ।

नरेन्द्र वह नाव कहा पर है?

बिहारी पास ही है बस वही जहा इस नदी का मोड घूमा है।

नरेन्द्रसिंह को इस बात का शक तो जरूर हुआ कि ये लोग डाकू हैं मगर बिहारी की यह बात सुनकर कि एक नाव और भी है और एक ही आदमी उस पर पटने पहुँचा देगा सोचने लगे कि इसमे हमारा कोई हर्ज नही अगर एक आदमी डाकू भी होगा तो हमारा कुछ न कर सकेगा। बिहारी से कहा, 'अच्छा, जाओ उस नाव को ले आओ, मगर जल्द आना।"

बिहारी ने अपने साथियो की तरफ देख कर कहा—' तुम लोग भी आओ

हो उस नाव को जल्दी खच लावें।"

अपने कुछ साथियो को लेकर बिहारी नाव के नीचे उतरा और थोडी दूर तक दरिया के किनारे-किनारे जाकर पास के जगल मे गायब हो गया।

बिहारी को गए घण्टा भर से ज्यादा हो गया। नरेन्द्रसिंह बैठे-बठे घबडा उठे और दूसरे मल्लाहो से जो उस नाव मे थे बोले, "तुम्हारा बिहारी नाव लेकर अभी तक न आया, हमारे साथी घबडा रहे होगे, हम तो जाते हैं।"

इसके जवाब मे एक मल्लाह ने कहा, "चढाव की तरफ नाव लाने में देर लगती ही है, आप जरा और ठहर जाए, आता ही होगा।"

घण्टे भर तक नरेन्द्रसिंह और ठहरे मगर नाव न आई। घबरा उठे। मोहनी की तरफ जी लगा हुआ था। मल्लाहो की बात पर ध्यान न दिया। नाव से नीचे उतर आए और उस तरफ चले जहा अपने साथियों को छोडा था।

आते वक्त भी उतनी ही देर लगी, यहा तक कि दोपहर हो गया जब उस ठिकाने पहुचे। मगर अफसोस, बेचारी मोहनी और उसकी बहिन गुलाब को वहा न पाया और न अपने लडकपन के दोस्त बहादुरसिंह को ही वहां देखा जिसे भग घोटते छोड गए थे, हा किश्ती ज्यो की त्यो वहा ही बधी थी।

५

मोहनी, गुलाब और अपने दोस्त बहादुरसिंह को न देखने से नरेन्द्रसिंह को कितना ताज्जुब, अफसोस, तरद्दुद, फिक्र, गम और सदमा हुआ यह वही जानते होंगे। घबडा कर चारो तरफ देखने लगे, जब किसी को न देखा तो बोले, "हाय, मैं उसे अकेले क्यो छोड गया! मेरे सिर कसी कम्बख्ती सवार थी जो दूसरी नाव किराए करने गया! हाय जिस किश्ती ने बेचारी मोहनी और गुलाब की जान बचाई और जिस किश्ती पर बठकर हम लोग हसते-खेलते यहा तक पहुँचे, उसी को छोडना चाहा! परमेश्वर ने इसी की सजा दी। हाय, कम्बख्त दिल! उस वक्त धूप की सूझी! बेचारी मोहनी धूप का कुछ खयाल न करके इसी किश्ती, पर सफर करने को तयार थी मगर तुझे गर्मी सताने लगी! अब उसकी जुदाई की आग मे न जाने कब तक तुझे जलना पडेगा। हाय, वह कहां चली गई! क्या मौका पाकर भाग तो नहीं

गई ! नहीं नहीं, उसे छिप कर भागने की जरूरत ही क्या थी ! मैं तो उसे उसके घर तक पहुचा ही देने वाला था, मैंने उसका क्या बिगाड़ा था कि छिप कर भागती ! फिर बहादुरसिंह कहा चला गया ? वह तो मेरा साथ छोड़ने वाला न था ! क्या कोई दुश्मन पहुचा जिसके सबब से बेचारी मोहनी और गुलाब को फिर दु ख भोगना पड़ा ? कहीं उस नाव वाले मल्लाहों की तो बदमाशी नही ? सूरत ही से वे लोग बड़े दुष्ट और डाकू मालूम होते थे। वे किश्ती लेने नही गए, घूम-फिर धोखा दे जरूर यहा आए और तीनों को ले भागे, क्योंकि पहिले ही उन लोगों को मुझसे मालूम हो चुका था कि हमारे साथ औरतें हैं और उन्होंने पूछा भी था कि कहा हैं ? हाय ! मैंने क्यो इशारे से बतला दिया कि इस तरफ हैं ! जरूर उन्ही लोगों की शैतानी है ! खैर, जब मोहनी ही नही तो अब मैं जी कर क्या करूंगा ? इससे तो अब यही बेहतर है कि उन लोगो से लड कर अपनी जान दे दूँ, और कुछ नही तो दो चार की जान तो जरूर ही ले लूगा !!"

यह सोचते सोचते हमारे बहादुर नरेन्द्रसिंह को बेहिसाब गुस्सा चढ आया, बड़ी बड़ी आँखें सुर्ख हो गईं, बदन कापने लगा, घड़ी घड़ी तलवार के कब्जे पर हाथ जाने लगा। थोड़ी देर तक इस हालत मे खड़े रह कर कुछ सोचते रहे, इसके बाद तेजी के साथ उस नाव की तरफ चले।

पहिली दफे नरेन्द्रसिंह जब उस किश्ती की तरफ गए थे तब इनको रास्ते मे बहुत देर लग गई थी मगर अबकी दफे घण्टे ही भर में ये उस नाव के पास आ पहुँचे।

अबकी मर्तबे नाव के ऊपर जाने के लिए काठ की सीढ़ी नहीं लगी थी, मगर बहादुर नरेन्द्रसिंह ने इसका कुछ खयाल न किया, झट म्यान से तलवार निकाल ली और उछल कर नाव के ऊपर चढ गए, मगर वहा किसी को न पाया। उन शैतानो मे से एक भी वहा न था जिन्हे पहिली मर्तबे देखा था, हा कुछ गठड़िया और दस-पाच कुल्हाड़िया इधर-उधर जरूर पड़ी थी।

बहादुर नरेन्द्रसिंह इस गम को बर्दाश्त न कर सके। उनका सिर घूमने लगा और नगी तलवार हाथ मे लिए हुए बदहवास होकर उसी नाव पर धम्म से गिर पड़े।

एक छोटी सी कोठरी मे आले पर चिराग जल रहा है, तीन तरफ दीवार है और एक तरफ लोहे के मोटे-मोटे छड लगे हुए हैं जिसमे एक छोटा-सा दरवाजा लोहे की सीखो का बना हुआ लगा है जो इस समय बन्द है और उसमे बाहर से ताला बन्द है जिसके पास ही एक आदमी बैठा हुआ है, शायद पहरेवाला हो। यह मकान हर तरफ से बन्द है, कही से आस्मान दिखाई नही देता। आजकल शुक्ल-पक्ष है मगर चन्द्रमा की रोशनी भी कही नही दिखाई देती जिससे मालूम होता है कि शायद यह जमीन के अन्दर कोई तहखाना है जहा दिन और रात का भेद कुछ नही जाना जाता। इसी कोठरी के अन्दर बहादुरसिंह बैठा हुआ धीरे-धीरे कुछ बोल रहा है

"हा, कहते थे नालायक से कि मुझे मत सता! मैं ब्राह्मण हूँ, मेरी आह पडेगी तो जल कै भस्म हो जाएगा! मगर सुनता कौन है? अपनी बहादुरी के नशे मे वह मानता किसको है? दौलत के घमण्ड मे वह किसी को समझता ही क्या है! खूबसूरत पाच औरतें क्या मिल गई कि दिमाग आस्मान पर चढ़ गया! रहो बचा, दो औरतें तो छिन गईं बाकी की तीनो भी छिनी जाती हैं! और जगल मे गडी हुई तेरी दौलत भी तेरे हाथ से निकल जाय तब मेरा कलेजा ठण्डा हो! नालायक, मैंने तेरा क्या बिगाडा था कि मुझे राह चलते पकड लिया और साल भर से मुफ्त मे अपनी खिदमत करा रहा है, जान भी नहीं छोडता। हाय! मेरे मां बाप, लडके-बाले, जोरू जाने क्या कहते होग, मुझे कहा-कहा ढूढते होंगे! खैर, उनकी तो कुछ पर्वाह नही मेरा तो शरीर ही सकट म पड गया था दिन मे बीस-बीस मतबे गदहे को भग पीस-पीस के पिलानी पडती थी। चलो उससे तो छुट्टी हुई! मेरा क्या? वहा भी खाने को मिलता था, यहा भी मिलेगा, घोडे को कोई ले जाय खाने को घास तो देहीगा। मेहनत से जान बची, अब इसी कोठरी मे बैठे डण्ड पेलेंगे,। वाह रे बहादुरसिंह! तू भी किस्मत का बडा ही जबर्दस्त है!!"

कोठरी के बाहर बैठा हुआ पहरेवाला अपनी गर्दन नीचे किए हुए बहादुरसिंह की यह भनभनाहट सुन रहा था। जब बहादुरसिंह अपनी बात तमाम चुका तब उसने इनकी तरफ सिर उठा कर देखा और कहा—"

है आपका नाम बहादुरसिंह है।"

बहादुर (चौंक कर) हैं यह आपने कसे जाना ?

पहरे० आपकी बातों ही से मालूम होता है।

बहादुर हमारी कौन सी बातें ?

पहरे० अजी, अभी तो तुम कह रहे थे कि "वाह, बहादुरसिंह, तू भी किस्मत का बडा ही जबदस्त है।"

बहादुर हाँ ठीक है, मेरा नाम बहादुरसिंह है।

पहरे० आप बडे लापरवाह मालूम होते हैं।

बहादुर हा भाई साहब, लापरवाह तो हुई हैं, और फिर आप ही सोचिए कि मेरे जसा आदमी अगर लापर्वाह न होगा तो और दुनिया मे होगा कौन ? जात का ब्राह्मण हूँ कहीं रहूँ, कोई खाने को दे, मुझे ले लेने मे कोई शम नहीं। कमा कर खाने की फिक्र नहीं। ओस के पास कुछ रुपए हैं, वही अपना सौदा-सुलफ बाजार से लाती है, पकाती है, खिलाती है, महीनों तक पीने के लिए भग भी वही बेचारी ला देती है, मैं मजे मे घोंटता हूँ और पीता हूँ। फिर मुझे फिक्र काहे की ? हा थोडे दिन इस नालायक नरेन्द्र के साथ रहना पडा तो असबके कुछ फिक्र ने आ घेरा था, जब जरा आराम से बैठे बस हुक्म हुआ, 'भग पीसो।' यहां तक कि दिन-रात भग पीसते-पीसते जी घबडा गया था, पर अब उससे भी बेफिक्र हूँ। यहां तो काम-काज कुछ करना ही नहीं है बठे-बैठे खाना है हा भग की तकलीफ कहीं न हो जाय, सो खर, आपकी कृपा होगी तो भग भी पीने को मिल ही जायगी। आज मैं अपने हाथ की बूटी पिलाऊँगा। देखो तो उसमे आग स्वय कुछ मालूम पडता है? और सबसे भारी बात तो यह है कि मुझे कुछ लालच नहीं। लालच के नाम ही से मैं कोसों भागता हूँ नहीं तो नरेन्द्र की लाखों रुपए की सम्पत्ति आ मेरी आंखों के सामने रक्खी हुई है ले लेता और मजे म राजा बन बठता। मगर मैं तो सोचता हूँ कि उब राजा न हजार दर्जे बढ़ कर गुणों से मैं अपनी जिन्दगी काट रहा हूँ तब क्यों सामा रुपए बटोर कर अपने ऊपर बम्बख्ती ले।।

पहरे० सच है सच है! (मन म) यह कुछ पागल भी मालूम होता है! अगर नरेन्द्रसिंह का खजाना इसे मालूम है तो फुसला कर पता ले लेना कोई बड़ी बात नहीं है।

बहादुर क्यो भाई तुम भग भी पीते हो कि नही ?

पहरे० मुझे तो भग पीऐ बिना किसी दिन चन नही पड़ता !

बहादुर (खुश होकर) वाह वाह वाह, बडी खुशी की बात तुमने सुनाई, तब तो हम-तुम दोनो एक हैं, बस आज से हमारी-तुम्हारी दोस्ती हो गई। मालूम होता है तुम भी ब्राह्मण या क्षत्री हो।

पहरे० हा मैं क्षत्री हू।

बहादुर आहा हा ! फिर क्या कहना है, आओ जरा गले तो मिल लें!!

पहरे० (मन मे) अब क्या है, इससे नरेन्द्रसिंह की दौलत का पता लगाना बहुत सहज है, अगर वह दौलत मिल जाय तो मैं जन्म भर कमाने से छुट्टी पाऊँ और अपने साथियो को अगूठा दिखा किनारे हो जाऊँ !

बहादुर बस अब सोचते क्या हो ! आओ दोस्त, जल्दी गले मिलो, अब जी नही मानता !!

पहरेवाले ने ताला खोला, खुशी-खुशी अन्दर गया और बहादुरसिंह से खूब गले-गले मिला।

बहादुर (मन मे) फासा साले को, अब क्या है !!

पहरे० भाई बहादुरसिंह, अब तो हमारी-तुम्हारी दोस्ती हो ही गई, मगर इस दोस्ती को छिपाये रखना चाहिये, क्योकि अगर हमारा सर्दार जान गया कि इन दोनो में दोस्ती हो गई है तो झट मुझे यहाँ से हटा देगा और किसी दूसरे को यहाँ पहरे पर बैठा देगा।

बहादुर० उसकी ऐसी तैसी ! कभी मालूम तो होगा नही कि इन दोनो में दोस्ती है, जब वह आवेगा तो घडी भर तक तुमको गालिया ही दिया करू गा, तब कसे समझेगा ?

पहरे० हा ठीक है, ऐसा ही करना मैं भी ऊपर के मन से तुम पर सख्त पहरा रक्खूगा। अब उसके आने का वक्त हुआ है, मैं फिर ताला बन्द करके बाहर जा बैठता हूँ।

बहादुर० जरूर जरूर ! बहुत जल्दी ! पर भला यह तो बता दो कि तुम्हारा नाम क्या है ?

पहरे० मेरा नाम भोलासिंह है।

बहादुर० वाह भाई भोलासिंह, हकीकत मे तुम बड़े ही भोले हो ! खल-

कपट जरा भी तुम्हारे चित्त मे नहीं है ॥

पहरेवाला भोलासिंह बहादुरसिंह से दुबारा गले-गले मिल के बाहर बठ गया, साथ ही बहादुरसिंह उससे धीरे धीरे बातचीत भी करने लगा ।

बहादुर० क्यो दोस्त भोलासिंह ! क्या कभी सूरज या चन्द्रमा का दशन न कराओगे ? इस अधेरे मे बैठे-बैठे तो कई दिन हो गए ।

भोलासिंह दोस्त, घबराओ मत, बन पडा तो आज ही तुम्हें इस तहखाने के बाहर ले चलूगा ।

बहादुर वाह-वाह, तब तो बडा ही मजा हो आएगा ।

भोला क्यो दोस्त, क्या ही अच्छी बात हो अगर नरेन्द्रसिंह की गाडी हुई दौलत हम-तुम दोनो निकाल लें और जन्म भर खुशी से गुजारा करें ।।

बहादुर नही नही नहीं, ऐसा न होगा ! मैं लालच को अपने पास भी कभी न आने दूंगा ! हां तुमको अगर जरूरत हो तो चलो बता दू जितना मर्जी हो निकाल लो, मगर मैं एक पसा न छूऊंगा ।

भोला अच्छा हमी को बता दो ।

बहादुर आज ही चलो, भला यह कौन सी बडी बात है ! और फिर वहां तो इतनी दौलत है कि कोई लाख दो लाख निकाल ले तो भी कुछ पता न लगे ।

भोला ओफ ओह ! अच्छा तो फिर आज ही मौका पाकर हम-तुम निकल चलेंगे ।

बहादुर तुम्हारा अफसर तो अभी तक नहीं आया ।

भोला हा आज देर हो गई अब उसके आने की कोई उम्मीद भी नहीं है ।

बहादुर तो चलो फिर बाहर ही की हवा खाएँ ।

भोला घडी भर और ठहरो तब तक अगर न आया तो फिर आज न आवेगा हा यह तो कहो नरेन्द्र की दौलत गडी कहाँ पर है ?

बहादुर जहा उसका मकान है उसके दो कोस पूरब हट के मगर मुश्किल तो यह है कि मैं कमजोर आदमी न मालूम क दिन मे वहां पहुँचूंगा ।

भोला नहीं नही, मैं जाकर दो घोडे ले आऊंगा । हमारे सरदार के यहा जितने घोड़े हैं सभी तेज चलने वाले हैं, सभों मे से चुन कर दो घोड ल

आऊँगा। कोई अगर हम लोगों का पीछा करेगा तो भी न पकड़ सकेगा। मगर तुम घोड़े पर बैठ सकते हो कि नहीं ?

बहादुर हाँ हा, भला घोड़े पर चढ़ना मुझे न आवेगा ?

थोड़ी देर के बाद भोलासिंह उस तहखाने के बाहर निकला और आधी रात जाने के पहिले ही कसे-कसाए दो उम्दे घोड़े लिए आ पहुँचा। दोनों घोड़ों को तो बाहर एक दरख्त के साथ बाँधा और आप तहखाने में गया। बहादुरसिंह को कैद से निकाल कर बाहर ले आया और दोनों आदमी घोड़े पर सवार हो पश्चिम की तरफ रवाना हुए।

दो दिन तक दोनों जगह-जगह पर टिकते और दम लेते बराबर चले गए। तीसरे दिन ये दोनों एक छोटी-सी नदी के किनारे पहुँचे जिसके दोनों तरफ घना जंगल और किनारे पर बड़े-बड़े साखू के दरख्त थे। यहाँ पर बहादुरसिंह ने अपना घोड़ा रोका और भोलासिंह से कहा "बस अब हम लोगों को इससे आगे न बढ़ना चाहिए। नरेन्द्र की जमा-पूँजी इसी जगह से हाथ लगेगी।"

भोला कहाँ पर है ?

बहादुर पहिले यह बताओ कि जमीन कैसे खोदोगे ? कोई फरसा या कुदाली है ?

भोला फरसा या कुदाली तो साथ लाए नहीं।

बहादुर फिर आये क्या करने ? यहाँ तो आठ-नौ पुरसा जमीन खोदनी पड़ेगी।।

भोला यहाँ कहते तो हम यह भी साथ ले लिए होते !

बहादुर क्या मैंने नहीं कहा था कि जमीन खोद के दौलत निकालनी पड़ेगी ?

भोला हाँ कहा तो था, खैर अब क्या किया जाए ?

बहादुर किया क्या जाए बस इस जगह (हाथ से बता कर) खोदो।

भोला यहाँ से शहर भी तो पास ही मालूम होता है, कहो तो जाकर कुदाली ले आऊँ ?

बहादुर अच्छा जाओ, ले आओ। मगर सुनो तो, क्या मुझे अकेले छोड़ जाओगे ?

भोला जैसा कहो।

पाठक, बहादुरसिंह इस दुष्ट भोलासिंह को धोखा देकर यहाँ तक तो ले आये। अब ये दोनो अपनी अपनी चालाकी में लगे हैं। भोलासिंह सोचता है, कहीं ऐसा न हो कि बहादुरसिंह घपला देकर चलता बने। पीछे हम किसी लायक न रहेंगे, हमारी मण्डली वाले भी बेईमान समझ कर फिर अपने साथ न मिलावेंगे। मगर लालच ने उसे पूरे तौर से फसा लिया था और वह कुछ बेवकूफ भी था। उधर बहादुरसिंह सोचते थे कि इस नालायक को यहाँ तक तो ले आये और हम हर तरह से भाग के जा भी सकते हैं, मगर असल काम तो उन दोनो औरतो का इन हरामजादो की कैद से छुड़ाना है। अगर यह लौट कर फिर वहाँ चला जायेगा जहा से आया है तो मुश्किल होगी, अपने साथियो से कह-सुन कर उन औरतो को किसी दूसरी जगह हटवा देगा तो बड़ा सरदुद होगा, जिस तरह हो इसे यही गिरफ्तार करना चाहिए।

लेकिन असल मे बहादुरसिंह इसे अपने कब्जे मे ले ही आये क्योकि इस वक्त जहाँ दोनो खड़े हैं यह वह जगह है जहाँ नरेन्द्र के छोटे भाई घोड़े पर सवार होकर रोज आया करते हैं और यहाँ से नरेन्द्रसिंह का मकान भी बहुत करीब है।

बहादुरसिंह और भोलासिंह खड़े बातचीत कर ही रहे थे कि सामने से एक सवार हाथ मे नेजा लिए आता हुआ दिखाई पड़ा जो बहादुरसिंह को देख तेजी के साथ लपक कर इनके पास पहुँचा और बोला, "बहादुर! तू कहा चला गया था? और यहाँ खड़ा क्या कर रहा है? कुछ भाई नरेन्द्र का भी पता लगा?"

यही नरेन्द्रसिंह के छोटे भाई जगजीतसिंह हैं। उम्र इनकी अभी अठारह वष की है। खूबसूरत और नाजुक होने पर भी यह अपने शरीर को बहुत मजबूत बनाये रखते हैं। घोड़े पर चढने, हर्बा चलाने और शिकार खेलने का शौक लड़कपन ही से है। इसके सिवाय हर तरह की विद्या म अपने को निपुण बनाये रखने का भी बहुत ज्यादे ध्यान रहता है। यह शौकीन भी बहुत थे मगर जब से नरेन्द्रसिंह चले गये हैं तब से इनको अपने शरीर का ध्यान ही जाता रहा। अच्छे-अच्छे कपड़े पहिरने, शिकार खेलने, घूमने फिरने बल्कि दुनिया से भी ये उदास हो गये। दिन रात यही सोच है कि भाई नरेन्द्र मुझे क्यो छोड़ गये! क्योंकि इनकी और नरेन्द्र की मुहब्बत को जो कोई देखता वह यही कहता कि इससे बढ के भाइयो का प्रेम दुनिया में न होगा। इस समय वह घोड़े पर

सवार होकर हवा खाने या शिकार खेलने नहीं आए हैं। यहां से पास ही एक बनदेवी का स्थान है, उनके नित्य दर्शन करने का इन्होंने प्रण बांधा हुआ है। कुछ दिन से घोड़े पर सवार हो अपने घर से दो कोस चल कर रोज बनदेवी के दर्शन करने आते हैं। जब तक घर रहेंगे नेम न टूटेगा, चाहे पानी बरसे, पत्थर पड़े, आफत आवे, मगर यह बिना दर्शन किये न रहेंगे। यही सबब है कि उन से मुलाकात होने की उम्मीद में बहादुरसिंह उनके रास्ते पर आ जमा है।

बहादुरसिंह ने कहा, "हां ॥ पता जानते हैं, (भोलासिंह की तरफ हाथ से इशारा करके) मगर पहिले इस दुष्ट को पकड़ो जिसकी बदौलत नरेन्द्रसिंह संकट में पड़े हैं।"

बहादुरसिंह की बात सुनते ही वह नया बहादुर भोलासिंह की ओर झुका।

अब भोलासिंह को मालूम हो गया कि बहादुरसिंह उसके साथ चालाकी खेल गये, धोखा देकर यहां तक ले आये और अब फंसाया चाहते हैं।

उनको अपनी तरफ लपकते देख भोलासिंह ने झट म्यान से तलवार खींच ली और इस जोर से उनके ऊपर चलाई कि अगर वह चालाकी से पैंतरा बदल कर हट न जाते तो साफ दो टुकड़े नजर आते। मगर इसके बाद उन्होंने भी अपने नेजेको घुमा कर बड़ी खूबसूरती से एक बार भोलासिंह की टांग पर किया जिसके लगने से वह खड़ा न रह सका और फौरन जमीन पर गिर पड़ा। जमीन पर गिरते ही उसे कब्जे कर लिया और कमरबन्द खोल उसके हाथ-पैर कस एक पेड़ के साथ बांध दिया। इसके बाद बहादुरसिंह से बोले, "हां, अब कहो क्या हाल है! हमारे नरेन्द्र भैया कहां हैं और तुम उनसे कैसे मिले?"

बहादुरसिंह ने कहा, "नरेन्द्रसिंह के चले जाने के बाद उदास होकर बिना सर्कार से कहे मैं भी उनकी खोज में निकला। कई दिन तक खोजता फिरता एक नदी के किनारे पहुँचा। दूर से एक छोटी-सी किश्ती आती दिखाई पड़ी, डर के मारे मैं एक घने पेड़ पर चढ़ गया जो उसी नदी के किनारे पर था। जब वह किश्ती पास आई तब मालूम हुआ कि हमारे बाँके नरेन्द्रसिंह दो खूबसूरत और जवान औरतों को जो सिर से पैर तक जड़ाऊ जेवरों के साथ लदी हुई थीं साथ बैठाये हंसते-बोलते चले आ रहे हैं। देखते ही मेरी तबीयत खुश हो गई। मैंने पुकारा, जब वह किनारे पर आये, मुलाकात हुई, मैं खुशी-खुशी उनके साथ हो लिया।

"सवेरा होने पर किश्ती किनारे लगाई गई। मैं भङ्ग पीसने लगा, उन दोनो औरतो को मेरे सपुर्द कर नरेन्द्रसिंह दूसरी नाव किराये करने चले गये जो बडी थी और वहा से दिखाई दे रही थी।

"नरेन्द्रसिंह के आने मे बहुत देर हुई, इधर कई डाकुओं ने आकर हम लोगों को गिरफ्तार कर लिया और हमारी आँखो पर पट्टी बाँध अपने घर ले गये। यह तो मालूम नही कि उन दोनो औरतो को कहा कैद किया और उन पर क्या गुजरी, हां मुझे एक जेलखाने मे कैद कर दिया और पहरे पर इस नालायक को बठा दिया। वह नरेन्द्रसिंह की दौलत लेने मेरे साथ आया है, पूछो हरामजादे से कि इससे मुझसे कब की मुहब्बत थी जो बेचारे नरेन्द्रसिंह की दौलत मैं इसे दे देता।।'

इसके बाद भोलासिंह को धोखा देने का हाल बहादुरसिंह ने सुनाया जिसे सुन जगजीतसिंह बहुत ही हँसे। भोलासिंह पेड के साथ बधा हुआ सुन-सुन चिढ़ता और जी ही जी मे गालियाँ देता था।

जगजीतसिंह ने भोलासिंह से पूछा, "तुम कौन हो, तुम्हारे सगी-साथी कहाँ रहते हैं, और उन दोनो औरतों को कहा कद कर रक्खा है ?" मगर सिवाय चुप रहने के भोलासिंह एक बात भी न बोला, एकदम गूँगा बन बठा। पूछते-पूछते थक गये मगर अपनी बात का कुछ भी जवाब न पाया बल्कि गुस्से मे आकर भोलासिंह को कई लात भी लगाये मगर उसका कोई भी नतीजा न निकला। आखिर लाचार होकर बहादुर से बोले, तुम इसी जगह ठहरो, मैं इस नालायक को ले जाकर कदखाने मे डाल आता हूँ और खाने-पीने के सामान के साथ दो-चार साथियो को भी ले आता हूँ, तब नरेन्द्र भाई का पता लगाने और उन दोनो औरतो को डाकुओं की कैद से छुडाने के लिए चलू गा।"

बहादुरसिंह ने कहा, "बहुत अच्छा।"

शाम होते-होते अपने दो-तीन साथियो के साथ कुछ खाने-पीने का सामान लिए और सफर की तयारी किए हुए जगजीतसिंह फिर आ पहुँचे। बहादुरसिंह भी भूख से दु खी हो रहा था। उसे भोजन कराया इसके बाद उससे कहा, 'तुम अब घर जाओ और हम लोग नरेन्द्रसिंह की खोज मे जाते हैं क्योंकि तुम न तो हम लोगों के साथ ही चल सकते हो और न लड़ने भिड़ने में ही साथ दे सकते हो।"

बहादुरसिंह ने कहा, "इसमें कोई शक नहीं कि मैं आपके बराबर नहीं चल सकता और लड़ाई से सौ सौ कोस भागता हूं मगर नरेन्द्रसिंह को खोकर मुझसे घर पर न बैठा जाएगा, तुम लोग अपना काम करो, मैं भी चुपचाप इधर-उधर घूम कर उन्हें खोजूंगा।"

उन्होंने जवाब दिया, "खैर जो मुनासिब मालूम हो करो मगर मुझे ठीक-ठीक पता दो कि उन्हें तुमने कहां छोड़ा है और तुम कहां कैद रहे ?"

बहादुरसिंह जगजीतसिंह को पूरा पूरा पता बता कर वहां से दूसरी तरफ रवाना हो गया।

७

आधी रात का वक्त है। चांदनी खूब खिली हुई है। इस खूबसूरत और ऊंचे मकान के पिछवाड़े वाली दीवार पर चांदनी पड़ने से साफ मालूम होता है कि इसमें तीन बड़ी बड़ी दरीचियां हैं और बीच वाली दरीची (खिड़की) में दो औरतें बैठी आपस में बातें कर रही हैं। नीचे की तरफ एक पाईबाग है जिसमें के खुशबूदार फूलों की महक ठण्डी-ठण्डी हवा के साथ मिल कर इस दरीची में आ रही है जहां वे औरतें बैठी बातें करती हुईं घड़ी घड़ी उस बाग की तरफ देखती और ऊंची सांस लेती हैं।

इन दोनों में से एक की उम्र तेरह चौदह वर्ष के लगभग होगी। चांद सा गोरा मुख देखने से यही मालूम होता था कि उस मामूली चांद के अलावे यह दूसरा चांद इस मकान की दरीची से निकला चाहता है। वह दरवाजे के साथ ढासना लगाये अपना दाहिना हाथ दरीची के बाहर निकाले है जिसमें अनमोल हीरे की जड़ाऊ चूड़िया और अँगूठिया पड़ी हुई हैं। बात-बात में ऊँची सांस लेती और आंसू टपका-टपका कर अपने ठीक सामने की तरफ बैठी हुई उस दूसरी औरत से बातें कर रही है जो खूबसूरती और गहने-कपड़े के लेहाज से इसकी प्यारी सखी मालूम होती है।

कुछ देर तक दोनों चुप रहीं, इसके बाद उस चन्द्रमुखी ने अपनी सखी की तरफ मुँह करके कहा, "सखी तारा अब मैं क्या करूँ ?"

तारा प्यारी रम्भा, तुम तो नाहक जिद्द करती हो। अगर अपने पिता का कहना मान लो तो कोई हर्ज नहीं है।

रम्भा नहीं बहिन, ऐसा न होगा। धर्म तो बिगड़े होगा ऊपर से इसमें बदनामी भी बड़ी होगी। दुनिया क्या कहेगी कि रम्भा की शादी नरेन्द्रसिंह से लगी, तिलक चढ चुका था, बारात निकल चुकी थी, मगर नरेन्द्रसिंह ने ब्याह न किया, बारात में से भाग गये, तब रम्भा की दूसरी शादी की गई। क्या मैं दो शादी वाली न कहलाऊँगी ?

तारा सुनते हैं, नरेन्द्र तुम्हारे लायक था भी नहीं, बड़ा ही बदसूरत और एक टांग से लगड़ा भी था, फिर क्यो उसके लिए जिद् करती हो ?

रम्भा सखी, जो हो, लगड़ा लूला, अन्धा, कोढ़ी चाहे जैसा भी हो, आखिर तो मेरा पति हो चुका। अब मैं दूसरी जगह शादी नहीं करने की। पण्डित लोग लाख कसम खायें कि इसमे कोई दोष नही मगर मैं एक न सुनूँगी। ज्यादे जिद् करेंगे तो बाप मा भाई इत्यादि सभो को छोड कही चली जाऊँगी या अपनी जान ही दे दूंगी।

तारा सखी, सच पूछो तो बात तो सही है, जिसके हुए उसके हुए, मगर अफसोस तो यह है कि नरेन्द्रसिंह कहते हैं कि मैं जनमभर शादी ही न करूँगा, चाहे जो हो।

रम्भा अगर उनकी ऐसी मर्जी है तो क्या हर्ज है, मैं भी उनके नाम पर जोगिन बन जन्म गवाऊँगी मगर मुझे निश्चय है कि अगर मेरा सामना नरेन्द्र-सिंह से हो जावेगा और मैं हाथ बांध अपने को उनके परो पर डाल दूंगी तो वह मुझको कभी न त्यागेंगे। मगर क्या करूँ? कहा ढूंढूँ? मैं तो उन्हें पहिचानती तक नही।।

तारा बहिन, अब मुझे निश्चय हो गया कि तुम अपनी जिद् न छोड़ोगी, अपने धर्म को न बिगाडोगी। खर, तो फिर मैं भी बाप-मा को छोड तुम्हारे दु ख-सुख की साथी बनूँगी, क्योंकि अब यहा रहना ठीक नही है।

रम्भा (रो कर) प्यारी सखी, तुम मेरे साथ क्या अपनी जिन्दगी बिगाडती हो ?

तारा (रो कर और हाथ जोड कर) बहिन, क्या तुम समझती हो कि तुम से अलग होकर मैं सुखी रहूँगी?

रम्भा नही मैं तो खैर तुम्हारी जैसी मर्जी।।

तारा मैं कभी तेरा साथ नही छोड सकती।

रम्भा मैं तो आज ही इस शहर को छोड़ देना चाहती हूँ।

तारा अच्छा है, तो चलो फिर, मैं भी तयार बैठी हूँ।

रम्भा भला यह तो बताओ मुझे किस भेष मे यहां से निकलना चाहिए?

तारा इन जेवरो और कपडो को उतार देना चाहिए जो हम लोग पहिने हुए हैं और मैली धोती और एक चादर ले यहा से चल देना चाहिए।

रम्भा मेरी समझ मे एक एक पोशाक मर्दानी भी साथ रख लेना मुनासिब होगा।

तारा जरूर ऐसा करना चाहिए, कुछ दूर आ कर हम लोग मर्दाने भेसे में सफर करेंगे।

रम्भा तो अब देर करना मुनासिब नही है, चलो फिर।

तारा मगर मेरी समझ मे आज चलना ठीक नही होगा।

रम्भा क्यो ?

तारा ईश्वर की कृपा से अगर नरेन्द्रसिंह कहीं मिले भी तो हम लोग उनको कसे पहिचानेंगे ? अगर न पहिचान सके और वह मिलकर भी फिर जुदा हो गये तो बिलकुल मेहनत बर्बाद जाएगी और दौड़-धूप ही मे जिन्दगी बीत जाएगी।

रम्भा फिर क्या करना चाहिए ?

तारा : तुम्हारी मां के पास नरेन्द्रसिंह की तस्वीर है, किसी तरह उसे ले लेना चाहिए।

रम्भा ऐसा ! मगर मुझे कुछ नही मालूम कि वह तस्वीर कब आई और कहा है।

तारा तुम्हारी शादी पक्की होने के पहिले ही वह तस्वीर तुम्हारे पिता लाये थे जो अभी तक मां के पास है।

रम्भा तो उसे किस तरह लोगी ?

तारा कल जिस तरह बनेगा उस तस्वीर को मैं जरूर गायब करूंगी, हां, एक काम और भी करना चाहिये।

रम्भा वह क्या ?

तारा एक नामी खानदान की लडकी का इस तरह यकायक अपने घर से बाहर निकलना ठीक नही है, इसमे बडी बदनामी होगी। चाहे तुम कितनी ही

नेक और पतिव्रता क्यों न बनो मगर कोई भी तुम्हारी नेकचलनी को न मानेगा, यहां तक कि नरेन्द्रसिंह को भी ताना मारने की जगह मिल जाएगी, इससे जरूर किसी मर्द को साथ ले लेना चाहिए।

रम्भा ऐसा कौन है जो मेरे पिता से बरखिलाफ होकर ऐसे वक्त में हम लोगों का साथ देगा और जिसके साथ बाहर जाने में बदनामी भी न होगी ?

तारा तुम्हारा चचेरा भाई अर्जुनसिंह अगर साथ चले तो अच्छी बात है, उसके सङ्ग जाने में किसी तरह की बदनामी नहीं हो सकती। सिवाय इसके वह दिलेर और बहादुर भी है दस-बीस दुश्मनों का मुकाबला करना उसके लिये अदनी बात है, और वह साथ चलने पर राजी भी हो जाएगा क्योंकि तुम्हें बहुत मानता है और तुम्हारी इस दूसरी शादी की बातचीत से उसे भी रन्ज है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि तुम्हें किसी तरह से दुःख हो।

रम्भा बात तो बहुत ठीक कही, मुझे आशा है कि अर्जुनसिंह अवश्य मेरा साथ देगा, अच्छा कल सवेरे जब वह मामूली समय पर मुझसे मिलने आवेगा तब मैं उससे बातें करूँगी, वह नरेन्द्रसिंह को पहिचानता भी है मगर तुम भी तस्वीर लेने से न चूकना और जिस तरह बने कल दिन में उसका बन्दोबस्त जरूर करना।

तारा ऐसा ही होगा।

इसके बाद वे दोनों उसी कमरे में अपनी-अपनी चारपाई पर सो रहीं। तारा को तो नींद आ गई मगर रम्भा की आंख बिल्कुल न लगी। रात भर घड़ियाल की आवाज गिना की और अपने जाने की तयारी तथा दूसरी दूसरी बातें सोचती रही। सवेरा होते ही वह चारपाई से उठी, तारा को भी जगाया, हाथ मुँह धो कर बैठी और अपने भाई अर्जुनसिंह के आने की राह देखने लगी।

थोड़ी ही देर बाद अर्जुनसिंह भी आ पहुँचे। रम्भा को रोज से ज्यादे उदास देख बोले— बहिन आज तुम बहुत ज्यादा उदास मालूम होती हो। इसका मतलब तो मैं जानता ही हूं। क्या पूछूं तो भी कहता हूं कि सब्र करो और घबड़ाओ मत, देखो ईश्वर क्या करता है।"

रम्भा क्या करूं भैया अब तो मैं अपनी जान देने को तयार हो चुकी। पिता मानते नहीं, मां कुछ सुनती नहीं तुम कुछ मदद करते ही नहीं फिर जी ही के क्या (आंसू बहाती है)।

अर्जुन (अपने रुमाल से रम्भा के आंसू पोछ कर) बहिन, मैं तो कई दफे मना कर चुका हू मगर लोभी पण्डितो के फेर मे पड के कोई सुनता ही नही तो क्या करू ? अब जो तुम कहो मैं करने को तयार हू । अपने जीते जी किसी तरह की तकलीफ तुमको न होने दूंगा ।

रम्भा क्या मेरा कहना तुम मानोगे ?

अर्जुन जरूर मानूगा ।

रम्भा अच्छा मुझे इन सभो से दूर चुपचाप काशी पहुँचा दो, मैं वहा विश्वनाथ के चरणो मे अपना पातिव्रत निबाहूगी और देखूंगी कि माई अन्न पूर्णा मेरी कुछ सुनती है या नही ।

अर्जुन क्या हुआ ह, चलो तुमको आज ही यहा से ले चलता हूँ, कहो तो किसी और को भी साथ लेता चलू ?

रम्भा तारा मेरे दुख सुख की साथी होकर चलेगी और किसी को साथ लेना मुनासिब न होगा।

अर्जुन (तारा की तरफ देख कर) क्यो क्या तुम चलोगी ?

तारा जरूर चलूंगी।

अर्जुन अच्छा तो फिर सवारी का क्या बन्दोबस्त किया जाय ?

रम्भा तुम जानते ही हो कि हमलोगो को घोडे पर चढने का खूब मोहावरा है, फिर भागने के लिए इससे बढ कर और कौन सवारी होगी ?

अर्जुन अच्छा तो फिर घोडे का ही बन्दोबस्त हो जाएगा। अब मैं जाता हू क्योकि इस वक्त से फिक्र करनी होगी ।

तारा तुम्हारे पास नरेंद्रसिंह की तस्वीर भी तो होगी ?

अर्जुन हा है तो ।

तारा मुझे दो।

अर्जुन अच्छा मेरे साथ आओ मैं तुम्हें दू ।

तारा (भौंहें मरोड कर) ! वाह तुम्हारे साथ वहा मर्दों मे चलू ! !

अर्जुन (हस कर) अच्छा मैं अपने साथ लेता चलूगा रास्ते मे ले लेना ।

तारा सो हो सकता है ।

अर्जुन अच्छा तो मैं जाता हूँ, अब आधी रात को मुलाकात होगी ।

अर्जुनसिंह वहा से रवाना हुए और अपने घर जाकर छिपे छिपे सफर की

तैयारी करने लगे।

८

शाम होते ही रम्भा और तारा ने भी अपनी तयारी इस तरह पर कर डाली कि किसी लौंडी तक को मालूम न हुआ। इसके बाद कुछ खा-पीकर सोने के कमरे मे जा अपने-अपने पलग पर सो रही। पर नींद काहे को आती थी, यह सोच रही थी कि अर्जुनसिंह आवें और हम लोग यहा से चलते बनें।

आधी रात के बाद बाहर से किसी के पैर की चाप मालूम हुई। दोनों उसी तरफ देखने लगी। अर्जुनसिंह सामने आ खड़े हुए जिनको देखते ही दोनो उठ बैठी और तारा ने पूछा, 'क्या आप तैयार हो आये ?" इसके जवाब म अर्जुनसिंह ने कहा, "हा सब दुरुस्त है अब देर मत करो।'

रम्भा यहाँ आती समय पहरेवालो ने तो जरूर टोका होगा और जाती समय भी टोकेंगे!

अर्जुन क्या पहरे वालो की इतनी मजाल हो गई कि मुझे आते जाते रोक-टोक करें ? हा जाने के बाद जिसका जो चाहे शिकायत करे। अच्छा अब देर मत करो जल्दी चलो।

रम्भा और तारा दोनो को साथ लेकर अर्जुनसिंह घर से बाहर निकले औरपदल ही मदान की तरफ चले। थोड़ी दूर जाकर इन लोगो को एक पुराना बड का पेड मिला जिसके नीचे तीन साईस कसे-कसाये घोडे लिए अर्जुनसिंह के आने की राह देख रहे थे।

तीनो आदमी घोडे पर सवार हुए। अर्जुनसिंह ने तीनो साईसो को कहा, 'अब तुम लोग अपन घर जाओ, जब हम आवेंगे तब बुला लेंगे। घर बठे तुम लोगो के खाने को पहुँचा करेगा।"

तीनो साईस सलाम कर बिदा हुए और इन लोगो ने पश्चिम का रास्ता पकडा।

जब तक रात रही तीनो घोडा फेंके चले गए। जब आसमान पर सफेदी दिखाई देने लगी तब अर्जुनसिंह ने घोडे की बाग रोकी और रम्भा की तरफ देख कर कहा 'बहिन, अब हम लोगो को यहाँ कुछ देर के लिए रुक जाना चाहिये। अदाज से मालूम होता है कि मुसाफिरो के टिकने का स्थान अर्थात चट्टी (पडाव) अब बहुत करीब है मगर हम लोग आगे चलकर किसी दूसरी

घट्टी म डेरा डालेंगे, यहाँ न ठहरेंगे, इसलिए इसी जगह रुक कर घोडो को ठडा कर लेना चाहिए। तुम दोनो औरतों के बदन के लायक मर्दानी पोशाक भी मैं लेता आया हूँ जो तुम लोगो ने घोडों की जीन के साथ असबाब में पीछे की तरफ बँधी हुई है, मुनासिब है कि तुम दोनो भी अपनी मर्दानी सूरत बना लो।''

अर्जुनसिंह की बात रम्भा और तारा ने भी पसन्द की और घोडे से उतर पडी। जीन खोल घोडों को ठडा होने के लिए छोडा और खुद भी जनानी पोशाक उतार मर्दाने कपडे पहिर कर तयार हो गई।

तीनों आदमी चार जामा बिछा कर पेड के नीचे बैठ गये। कुछ देर के बाद रम्भा का इरादा पा तारा ने अर्जुनसिंह से कहा, ''आपने वादा किया था कि नरेन्द्रसिंह की तस्वीर मुझे दिखावेंगे ?''

अर्जुनसिंह ने कहा, 'हाँ हाँ, मैं नरेन्द्रसिंह की तस्वीर लेता आया हूँ लो देखो।'' यह कह अपनी जब से तस्वीर निकाल तारा के हाथ मे दे दी और आप घोडो को कसने लगे।

तारा ने रम्भा के हाथ मे तस्वीर देकर कहा, ''देखो बहिन, ऐसे खूबसूरत और दिलावर नरेन्द्रसिंह के बारे मे लोगो ने कसी-कसी गप्पें उडाई हैं!!''

तस्वीर देखते ही रम्भा की आखें डबडबा आई और जी बेचैन हो गया। अपने को बडी मुश्किल से सम्हाला और तस्वीर तारा के हाथ मे देकर बोली, ''देखना चाहिए इनकी बदौलत मेरी क्या गति होती है !!''

अर्जुनसिंह दो घोडो पर जीन कस चुके, जब अपनी सवारी का घोडा कसने लग तो यकायक कुछ देख कर घोडा भडका और अर्जुनसिंह के हाथ से छूट मदान की तरफ भागा। वे भी उसके पीछे दौडे।

रम्भा और तारा यह देख उठ खडी हुई और उस तरफ देखन लगी जिधर घोडे के पीछे-पीछे अर्जुनसिंह दौड गये थे। घोडा चक्कर लगा लगा कर दौडता और कभी खडा होकर पीछे की तरफ देखता जब अर्जुनसिंह उसके पास पहुचते तो फिर तेजी के साथ भागता था।

दिन बहुत चढ आया मगर वह घोडा अर्जुनसिंह के हाथ न लगा, यहाँ तक कि देखते-देखते वे इन दोनो की नजरो से गायब हो गये। आखिर घबडा कर रम्भा और तारा दोनो घोडो पर सवार हुई और उसी तरफ को चलीं

जिधर घोड़े के पीछे अर्जुनसिंह गए थे, मगर इनका मतलब सिद्ध न हुआ, दिन-भर भूखे प्यासे दौड़ने पर भी अर्जुनसिंह से मुलाकात न हुई और दोनो एक बड़े भयानक मैदान मे पहाड़ी के नीचे पहुँच कर रुक गई।

लाचार दोनो औरतें घोड़ो से नीचे उतरी। घोड़ो की पीठ खाली कर लम्बी बागडोर लगा पत्थर से अटका चरने के लिय छोड़ दिया और खुद एक चिक्ने पत्थर पर बैठ रोने और अफसोस करने लगीं।

रम्भा देखो बहिन, बुरी किस्मत इसे कहते हैं!

तारा परमेश्वर की मरजी न मालूम कैसी है! इस वक्त हम लोग कैसी विवश हो रही है!

रम्भा अर्जुनसिंह के हाथ अगर घोड़ा लग भी गया होगा तो वह उस ठिकाने जाकर हम लोगो को न देख कितना घबड़ाये होंगे।

तारा लेकिन अब हम लोगो का वहा तक पहुचना मुश्किल है।

रम्भा मालूम ही नही कि घूमते फिरते कहा आ गये! अब भूख के मारे जी बेचन हो रहा है।

तारा मुझे विश्वास है कि जीन की खुर्जी म थोड़ा बहुत मेवा अर्जुनसिंह ने जरूर रखवा लिया होगा।

रम्भा देखो तो कुछ है कि नही?

तारा न उठ कर दोनो घोड़ो के जीन की तलाशी ली लगभग दो सेर के मेवा दोनो म पाया जिसमे वह बहुत खुश हुई और पुकार कर रम्भा से बोली, "हम दोनो दुखियो के खाने लायक बल्कि चार पाँच दिन तक जान बचाने लायक मेवा इसम है।"

रम्भा कही पानी मिले तो पहिले मुँह हाथ धो लेना चाहिए!

तारा इस पहाड की सब्जी की तरफ देख कर मैं समझती हूँ कि इसके ऊपर पानी का चश्मा जरूर होगा।

रम्भा अभी तो दिन भी बहुत है चलो पहाडी के ऊपर चढ चलें।

रम्भा और तारा दोनो ने मेवा साथ लिया और पहाड़ी के ऊपर चढने लगी। थोडी दूर ऊपर जाकर पानी के कई सोते इनको मिले। एक झरने के पास बैठ कर इन लोगो न मुँह धोया और किफायत के साथ थोडा मेवा खा कर जी ठण्डा किया जिसके बाद फिर पहाडी पर चढने लगी, यहा तक कि

शाम होते-होते चोटी पर जा पहुँचीं।

पहाड़ के ऊपर कई खूबसूरत और घने जंगली पेड़ थे जो इस समय हवा के झपेटों से हिल-हिल कर झोंके खा रहे थे, और एक तरफ छोटा-सा दालान भी बना हुआ था। शाम हो चुकी थी ये दोनों थकी हुई एक पत्थर पर बैठ चारों तरफ देखने लगीं।

दक्खिन की तरफ एक खूबसूरत इमारत और उसके पास ही दाहिनी तरफ हट कर कोस भर की दूरी पर एक छोटा-सा शहर भी दिखाई पड़ा।

रम्भा ने कहा, "बहिन तारा हम लोग इस शहर में चल के नरेन्द्रसिंह को जरूर ढूँढ़ेंगे। देखो लोगों ने उनके बारे में क्या-क्या गप्पें उड़ाई थीं कि लंगड़े, लूले, काने और बड़े ही बदसूरत हैं। लेकिन अगर वसे भी होते तो क्या था? मेरा सम्बन्ध तो उनसे हो ही चुका था, मेरे पति कहला ही चुके थे, प्रस्तु मेरे लिए परमेश्वर वही हैं, चाहे जैसे हों।

तारा उन लोगों की जुबान में साँप डसे जिन्होंने नरेन्द्रसिंह के बारे में ऐसा कहा था। मैं तो कह सकती हूँ कि ऐसा खूबसूरत और बहादुर दुनिया-भर में न होगा। तुम बड़ी किस्मतदार हो

रम्भा आज की रात इस पहाड़ पर काट कर कल उस शहर में जरूर चलना चाहिए।

तारा ऐसा ही करेंगे।

रम्भा मैं समझती हूँ कि इस मर्दानी सूरत के बदले हम लोग फकीरी हालत में रह कर अपने को इससे ज्यादा छिपा सकेंगे।

तारा इसमें तो कोई शक नहीं, कल उस शहर में चल कर बाजार से कपड़े खरीद कर फकीरी ढंग की पोशाक दुरुस्त करा लूँगी।

ये दोनों बैठी हुई बातें कर रही थीं कि आसमान में काली घटा घिर आई। चारों तरफ अँधेरा छा गया, पानी बरसने लगा, बिजली चमकने और गरजने लगी जिसकी डरावनी आवाज पहाड़ों से टक्कर खा-खाकर दसगुनी होकर इन दोनों बेचारियों के जी को दहलाने लगी। दोनों उठ कर उस दालान में चली गईं जिसका हाल ऊपर लिख चुके हैं।

रात भर पानी बरसता रहा और वे दोनों उसी दालान में बैठी अपनी-अपनी किस्मत की शिकायत करती रहीं। जब सवेरा हुआ, पानी बरसना बन्द

हुआ और धूप निकल आई। वे दोनो भी उठीं और सवेरे के जरूरी कामो से छुट्टी पा एक चश्मे म हाथ मुह धो कुछ मेवा खा कर शहर की तरफ चलने की तैयारी कर दी। तारा ने कहा, "कुछ मालूम नही हमारे दोनो घोडो पर क्या गुजरी रात भर पानी मे दुख उठा मर गये या जीते हैं।"

रम्भा वे घोडे वहाँ न होगे, किसी पेड से तो वह बँधे नही थे, जब बदन पर पानी पडा होगा किसी तरफ भाग गए होगे। फिर हम लोगो को भी तो अब घाडो की जरूरत नही है, पैदल ही चलना ठीक होगा, जहाँ मन मे आया गए जहाँ चाहा पडे रहे मगर हाँ पहाडी के नीचे चल कर उन घोडो को एक बार देखना जरूर चाहिए। अगर अभी भी बँधे हो तो खोल देना ही उचित हागा।

तारा मेरी भी यही राय है।

वे दोनो पहाडी के नीचे उतरी मगर घोडो को वहाँ न पाया। रम्भा ने कहा 'सखी मैं कहती थी कि दोनो घोडे भाग गए होगे। चलो अच्छा ही हुआ बखेडा छूटा, अब यहा ठहरने की कोई जरूरत नही '

इसके बाद वे दोनो शहर की तरफ रवाना हुई।

हाय आज तक जो बडे लाड और प्यार से पली थी उसको धर्म के कठिन रास्ते का दुख भोगना पडा। अभी तक जिसको जमाने की गम सब हवा छू नही गई थी उसको आँधी और लू के झपेटे बर्दाश्त करने पडे। चन्द्रमा की कडी चाँदनी से जिसके सर मे दर्द होता था उसे कडी धूप मे मक्खन से भी कोमल बदन को पिघलाना पडा। जो कभी दस कदम भी जबर्दस्ती से नही चलाई गई थी आज वह कोसों मिट्टी फाँकने के लिए मजबूर की गई। जो भोजन करने के लिए दिन भर मे दस दफे पूछी जाती थी उस काई मुट्ठी भर अन्न देने वाला भी न रहा। जिसकी आख डबडबाई हुई देख कर लोगो का जी बेचन हो जाता था उसके आसू पोछने वाला आज कोई नही। जो हो नरेन्द्रसिंह की बदौलत रम्भा का आज यह सब दुख भोगने पडे। मगर धन्य है बिचारी तारा को जो ऐसे समय में भी अपनी प्यारी सखी का साथ नही छोडती। यह सब प्रेम की बात है नही तो कौन पूछता है।

थोडी थोडी दूर पर धूप से घवडा कर किसी पेड के नीचे टहलती दम लेती, आँसुओं से अपने चेहरे को तर करती दम-दम पर हाय वह मे

जी के बुखार को निकालती हुई दिन ढलते-ढलते अपनी सखी तारा को साथ लिए हुए रम्भा उस शहर के पास आ पहुँची जिसे पहाड़ी के ऊपर से देखा था।

शहर की बाहरी हद पर एक सुन्दर पहाड़ी थी जिसके नीचे हाथो म लटठ लिए बदमाशी ठाठ के कई आदमी दिखाई पड़े। तारा ने चाहा कि किसी से इस शहर का नाम पूछे मगर वे सब के सब बिना कहे इन दोनो के पास पहुचे और इन दोनो से तरह-तरह की बातें पूछने लगे।

कोई कहता है "क्यो साहब! आप किसके यहाँ जाएँगे? हम लोग गयावाल के नौकर हैं। यहा आपका पण्डा कौन है?" कोई कहता है, "लाल जी मया के हम आदमी हैं, हमारे साथ चलिए।" कोई आपस ही मे चिल्ला कर कहता है—"अजी यह पुरबिये हैं, हमारे जजमान हैं, चलो हटो तुम लाग झूठे बखेडा मचाये हुए हो।" कोई इन दोनो के बहुत पास आ के कहता है कि "आप मेरे यहा चलिए वहा टिकने का बडा आराम है और हम यात्रा पिण्डा भी बहुत अच्छी तरह करा देंगे, आइये यह रामसिला है पहिले इसी का दर्शन करना चाहिए नही तो यात्रा सुफल न होगी।" कोई कहता है, "अभी तो यह आप ही लडके हैं, पिण्डा क्या देंगे।"

इसी तरह उन लोगो ने चारो तरफ से रम्भा और तारा को घेर लिया और अपनी-अपनी बकवाद करने लगे। तारा ने उन सभी से कहा कि 'हम लोग यात्री नहीं हैं सौदागर के लडके हैं।" मगर वे लोग कब मानने वाले थे इन दोनो को यहाँ तक तग किया कि दोनो की आँखो मे आसू डबडबा आये और तारा ने झुझलाकर कहा, "तुम लोग बडे शैतान हो बात नही मानते और बेफायदे तग कर रहे हो। हम लोग मुसलमान होकर पिण्डा सिण्डा क्यो देने लगे?"

मुसलमान का नाम सुनकर वे लोग पीछे हटे और बेहूदी बातो के साथ आवाजें कसने लगे। ये दोनों आगे बढी, तब तारा ने कहा "देखो बहिन, ये लोग यात्रियो को कितना दिक्क करते हैं! अगर हम लोग अपने को मुसलमान न बनाते तो इन लोगो के हाथ से बहुत तग होते, तिस पर भी देखो अब ये लोग गालियाँ देने पर उतारू हुए हैं।"

रम्भा ने कहा, 'चुपचाप चली चलो, नालायकों को बकने दो। अब मालूम

हुआ कि यह गयाजी है, ताज्जुब नहीं कि यहाँ नरेन्द्रसिंह से मुलाकात हो जाय।" इतना कह रम्भा ने फिर कर देखा तो उन्हीं शैतानों में से दो आदमियों को पीछे पीछे आता पाया। यह देख रम्भा बहुत घबड़ाई और तारा से बोली, "अभी दुष्ट लोग पीछा किये चले ही आ रहे हैं। बड़ी मुश्किल हुई। इन लोगों के मारे कहीं यह भेद न खुल जाय कि हम लोग औरत हैं और मर्दानी पौशाक केवल अपने को छिपाने के लिए पहिने हैं। अगर ऐसा हुआ तो इज्जत पर आ बनेगी और अपने हाथों अपना गला काटना पड़ेगा!!"

तारा बोली "खर, कदम बढ़ाये चलो। राम करे सो होय। कहीं सराय में चल कर डेरा डालेंगे, फिर देखा जायगा।"

पहर भर दिन बाकी था जब ये दोनों शहर में घुस कर खोजती फिरती एक सराय के दरवाजे पर पहुँची। भठियारी आगे आकर इन लोगों को खातिरदारी के साथ सराय में ले गई एक अच्छी साफ कोठड़ी इन दोनों को रहने के लिए दी, और चारपाई तथा बिछौने का इन्तजाम करके पूछा, "अगर कुछ बाजार से लाने की जरूरत हो तो ले आऊँ?" तारा ने कहा "नहीं, इस वक्त किसी चीज की जरूरत नहीं है।" यह सुन भठियारी वहाँ से हट दूसरे मुसाफिरों की टोह में सराय के बाहर चली गई मगर इन दोनों के पास कोई असबाब न देखकर हैरान थी।

गयावाल पण्डे के दोनों आदमी जो रम्भा और तारा के पीछे पीछे आ रहे थे इन दोनों को सराय के अन्दर जाते देखकर बाहर फाटक पर अटक गये। जब भठियारी इन दोनों को डेरा दिलवा कर फिर सराय के फाटक पर गई तब ये दोनों आदमी भठियारी से धीरे धीरे कुछ बातचीत करने लगे, इसके बाद अपनी कमर से कुछ निकाल कर भठियारी के हाथ में दिया जिसे लेकर उसने कहा "आप बेपरवाह रहिये मैं सब बन्दोबस्त कर दूँगी।"

६

रम्भा और तारा ने वह रात उदासी और तकलीफ के साथ बिताई। सवेरा होते ही बुढ़िया भठियारी उन दोनों के पास गई और सामने बैठ कर बातचीत करने लगी, कहिए, रात को किसी तरह की तकलीफ तो आप लोगों को नहीं हुई?

तारा नहीं हम लोग बड़े आराम से रहे।

भठि० यहाँ आराम तो हर तरह का है मगर आपको तकलीफ जरूर भई होगी क्योंकि मर्द का भेष बना कर अपने को छिपाने के तरद्दुद में आप लोगों ने कुछ खान-पीने का भी इन्तजाम नहीं किया, न बाजार ही से जाकर कुछ सौदा लाये।

तारा (ताज्जुब और घबराहट से रम्भा की तरफ देख कर) लो सुनो! बीबी भठियारी को हम लोगों पर कुछ और ही शक है!!

भठि० (हँस कर) अभी आप इस लायक नहीं हुई कि मुझे धोखा दें। इसी भँगानी में मैंने जन्म बिताया, अपने लड़कपन और जवानी के समय में मैंने कैसे कैसे ढंग रचे कि अच्छे-अच्छे चालाकों की नानी मर गई, अभी आप लोगों की उम्र ही क्या है?

तारा डर कर जी में सोचने लगी, "यह बुढ़िया तो हम लोगों को पहिचान गई, कहीं ऐसा न हो कि कोई आफत लावे!" यह ख्याल करके अपने कमर से एक अशर्फी निकाल उस भठियारी के हाथ में रख कर बोली 'माई, तुम्हें इन सब बातों से क्या मतलब है! हम लोग किसी तरह मुसीबत के दिन काट रहे हैं। दो चार रोज इस शहर में भी रह कर और कहीं का रास्ता लेंगे। इज्जतदार हैं, आवारे और बदमाश नहीं हैं। तुमको चाहिए हर तरह से हमको छिपाओ और हमारी इज्जत का ध्यान रखो।"

बुढ़िया अशर्फी पाकर खुश हो गई और बोली, "नहीं नहीं भला यह कैसे हो सकता? कि हमारे सबब से आप लोगों को किसी तरह की तकलीफ हो। क्या मजाल कि किसी को आपका भेद मालूम हो जाय!!'

इतनी बातें हो रही थीं कि सराय के अन्दर घोड़े पर चढ़ा हुआ एक लड़का बीस बाईस वर्ष के सिन का खूबसूरत और बेशकीमत भड़कीली पोशाक पहिरे आता दिखाई पड़ा जिसे देखते ही भठियारी उठ खड़ी हुई। रम्भा और तारा की निगाह भी उस पर पड़ी। देखा कि हाथ में लम्बे लम्बे लट्ठ लिए कई आदमी भी उसके साथ हैं जिनमें वे दोनों आदमी भी हैं जो कल उन दोनों के पीछे पीछे आये थे और भठियारी से बातचीत करके उसके हाथ में कुछ दे गये थे।

यह देखते ही तारा और रम्भा का माथा ठनका। तरह-तरह के शक

उनके दिल मे पदा होने लगे और डर के मारे कलेजा कांपने लगा। वह सवार बराबर वहा तक चला आया जहा रम्भा और तारा कोठरी के दरवाजे पर बैठी थी।

वह सवार इन दोनो की तरफ गौर से देख कर भटियारी से बोला, ' मुझे टिकने के लिए कोई जगह दो।"

भठि० आपके रहने लायक जगह इस सराय मे कहा? चलिए कोई उम्दा निराला मकान आपके रहने के लिए दूँ।

भठियारी उनको साथ ले सराय के बाहर चली गई और घण्टे भर तक न आई।

जब भठियारी फिर सराय मे लौटी तो सीधे रम्भा और तारा के पास चली गई और बैठकर कहने लगी, ' यह बहुत बड़े आदमी हैं, साल मे दो-तीन दफे हमारे यहाँ आकर टिका करते हैं, अमीरों और रईसो के टिकने के लिए मैंने कई मकान भी बनवा रक्खे है जिनमे सजा हुआ कमरा और हर तरह का सामान भी दुरुस्त रहता है, उन्ही मकानो म से किसी म इन्हें टिकाया करती हूँ। यह जब तक रहते हैं एक अशर्फी रोज देते हैं। तुम भी किसी आली खान दान की लड़की मालूम होती हो, अगर कहो तो तुम्हें भी एक अलग मकान टिकने के लिए दूँ और बाजार से सौदा वगरह लाने के लिए किसी हिन्दू मज दूरनी का भी बन्दोबस्त कर दू, क्योकि इस जगह आप लोगो को हर तरह की तकलीफ होगी और भेद खुलने का खौफ भी बराबर बना रहेगा, आखिर सवेरे सवेरे आपने मुझे एक अशर्फी दी है उसी की बदोलत एक और अमीर का भी डेरा मेरे यहा आया, सो मुझे भी चाहिए कि जहा तक बने आप लोगो के आराम के साथ रहने का बन्दोबस्त करू।"

तारा ने कहा "इस सवार के पियादो मे कई आदमी ऐसे हैं जिन्हे मैं पहिचानती हूँ क्योकि कल शहर के बाहर पहाडी से यहाँ तक वे लोग हमारे पीछे-पीछे आये थे।"

भठि० हाँ, वे गयावाल पण्डो के नौकर है, उनका काम ही है कि शहर के बाहर की उस पहाड़ी के नीचे जिसका नाम रामसिला है बठे रहते है, और जब कोई मुसाफिर आता है तब उसे अपने मालिक का जजमान बनाने के लिए कोशिश करते हैं। इन्ह अपना जजमान बना आज इन्ही के साथ वे लोग आये

होंगे जिन्हें कल आपने देखा था ।

तारा खैर, अगर हम लोगों के लायक कोई उम्दा मकान हो तो दो ।

यह सुनकर भठियारी वहां से उठ सराय के बाहर चली गई और थोडी-भर के बाद फिर लौट कर तारा से बोली "चलिए सब दुरुस्त कर आई हूं ।"

तारा और रम्भा को साथ ले भठियारी सराय के बाहर हुई और थोडी दूर जाकर एक सुनसान गली मे घुसी । कई मकान आगे बढ वह एक छोटे-से मकान के बन्द दरवाजे पर खडी हो गई और चाभी से उसका ताला खोला जो उसके आचल के साथ बधी हुई थी ।

दोनो के लिए हुए मकान के अन्दर घुस गई । वह मकान अन्दर से भी बहुत साफ और सुथरा था, कुल चीजें जरूरत की इसमे मौजूद थी, एक कमरे मे कई शीशे लगे हुए थे, जमीन पर फर्श और उसके ऊपर दो चारपाइयां बिछी हुई थी जिनके बिछौने की चादर सब्ज रेशम की डोरियो से खूब कसी हुई थी ।

रम्भा और तारा को ज्यादे चीजो की जरूरत न थी मगर इस मकान को देख कर खुश हो गई । तारा ने भठियारी से कहा, ' मकान तो तुमने बहुत अच्छा दिया, अगर एक हिन्दू मजदूरनी का भी बन्दोबस्त कर दो तो पानी वगैरह का भी इन्तजाम हो जाय और वह दो चार जरूरी बरतन भी बाजार से खरीद कर ले आवे ।"

भठियारी दौडी हुई गई और थोडी ही देर मे एक हिन्दू मजदूरनी भी ले आई जो गले मे तुलसी की कण्ठी पहिने हुए थी ।

भठियारी चली गई । जिन जिन चीजो की जरूरत थी सब मजदूरनी की मारफत बाजार से मगवा ली गई । इस मकान मे कूआ न था इसलिए पानी भी बाहर से ही मगवाना पडा ।

दोनो ने स्नान किया, इसके बाद खाना बना कर भोजन करने के बाद मकान का दरवाजा बन्द कर पलग पर जा लेटी । नीद आ गई । जब थोडा दिन बाकी रह गया तब उठी । रम्भा ने तारा से कहा, "बहिन, आज रात को मर्दाने भेष मे घूम कर नरेन्द्रसिंह की टोह लगानी चाहिए ।" तारा ने कहा, 'जरूर आज रात को हम लोग घूमेगे ।'

हाथ मुंह धोने के लिए पानी की जरूरत पडी, मजदूरनी को पुकारा, वह मौजूद न थी । तारा ने रम्भा से कहा, "देखो, हमने उस नालायक से कह दिया

था कि बिना पूछे बाहर न जाइयो मगर वह चली गई, मैं पहिले जाकर दरवाजा बन्द कर आऊ।"

यह कह तारा नीचे उतरी। दरवाजा खुला हुआ था। दरवाजे के बाहर लट्ठ लिए हुए कई आदमी दिखाई पड़े जिनमे वे दोनो भी थे जो रामसिला पहाड़ी से रम्भा और तारा के पीछे पीछे आये थे और दूसरी दफे सवार के साथ साथ सराय मे दिखाई पड़े थे।

तारा इन सभों को दरवाजे पर देख कर घबड़ा गई और कई तरह की बातें सोचने लगी। अन्दर से दरवाजा बन्द करना चाहा मगर न हो सका क्योंकि वह ज़ंजीर टूटी हुई थी जिससे दरवाजा पहिली मरतबे बन्द किया था। अब वह और घबड़ाई, इतने मे दरवाजे के बाहर खड़े हुए कई आदमियो मे एक ने कुछ हँस कर कहा, "अब यह दरवाजा भीतर से बन्द नही हो सकता।"

यह सुनकर तारा के हाश जाते रहे। दौड़ी हुई ऊपर आई और रम्भा से बोली, "लो बहिन, गजब हो गया! इज्जत बचाने की कोई सूरत नजर नहीं आती। हरामजादी भठियारी ने पूरा धोखा दिया। अब हम लोगों को चाहिए कि अपने को कैदी समझें और जान से हाथ धो बैठें।"

रम्भा ने घबड़ा कर पूछा, "क्यो, क्यो, क्या हुआ?" इसके जवाब मे घबड़ाई हुई तारा ने जल्दी से सब हाल कहा जिसे सुन रम्भा का कलेजा धक-धक कापने लगा और दोनो आंखो से आंसुओ की बूंदें टपाटप गिरने लगीं। तारा ने इस पर कहा 'बहिन, अब रोने से कोई काम न चलेगा, जान बचाने की कोई फिक्र करनी चाहिये।'

रम्भा जान बचाने की फिक्र क्या की जाय?

तारा जहां तक हो सब चिल्लाना चाहिए जिसमे इधर-उधर से बहुत से आदमी इकट्ठे हो जाय और हम लोगो को अपना दुःख कहने का मौका मिले।

रम्भा यह मकान ऐसी गली मे है कि सड़क तक आवाज भी न जाएगी।

तारा तो भी पड़ोस के कुछ आदमी तो इकट्ठे हो ही जायगे।

रम्भा दरवाजा तो इस लायक उन्होंने नहीं रखा कि बन्द किया जाय मगर सीढ़ी की किवाड़ियों का क्या बिगड़ा है! उन्हें तो बन्द कर दो फिर रोने चिल्लाने की सोचना।

'हां, यह तो मुझे याद हो न रहा।" यह कहती हुई तारा दौड़ी गई और

सीढी के किवाड खूब मजबूती से बन्द कर आई। इतने ही मे धमधमाते हुए कई आदमी नीचे के चौक (आगन) मे आ पहुँचे। तारा ने झाँक कर देखा कि वही गयावाल पण्डा जिसे सराय मे देखा था कई और आदमियो को लिए जिनम वे दोनो भी थे जिन्होने रामसिला पहाडी से रम्भा और तारा का पीछा किया था आ पहुँचा है और सभो को नीचे छोड आप ऊपर चला आ रहा है।

सीढी के किवाड बन्द थे इसलिए वह यकायक इन लोगो के पास न पहुच सका और जजीर खोलने के लिए आरजू-मिन्नत करने लगा। यह देख रम्भा और तारा मकान की छत पर चढ गई। इस मकान के साथ ही सटा हुआ एक दूसरा मकान देखा जिसकी छत इससे नीची न थी। ये दोनों उसी मकान म कूद पडीं।

१०

दोपहर का समय है। एक छोटे-से जगल मे घने पेड के नीचे आठ दस आदमी बठे आपस मे कुछ बात चीत कर रहे हैं। ये सब कौन हैं इसके लिए साफ ही कह देना ठीक है कि ये लोग वे ही मल्लाह हैं जिनसे नरेन्द्रसिंह से उस समय बातचीत हुई थी जब वे मोहनी, गुलाब और बहादुरसिंह को छोटी किश्ती के पास छोड बडी नाव किराये करने गये थे। इन लोगो मे एक बहुत बुड्ढा है जिसे नरेन्द्रसिह ने पहिले नही देखा था, शायद यह उन सभों का सरदार हो।

एक बडी भूल तो यह हो गई कि नरेन्द्रसिह को न पकड लिया।

दूसरा हाँ, अगर उनको भी गिरफ्तार कर लेत तो बस चारो ही को ठिकाने पहुँचा देते, फिर कोई पूछने या पता लगाने वाला भी न रहता, अब तो एक चिन्ता सी लगी रह गई।

बूढा अजी ईश्वर ने अच्छा किया जो उस समय तुम लोगो को नरेन्द्रसिह के पकडने का हौसला न दिया नहीं तो एसी हालत मे जबकि हमारे साथी को भुलावा देकर बहादुरसिह ले गया है बडी मुश्किल होती। हम लोगो को खौफ तो इस समय भी बहुतकुछ है क्योंकि नरेन्द्रसिह का बाप बड़ा ही जालिम है, भोला और बहादुरसिंह जरूर उससे जाकर सब हाल कहेंगे और हम लोगो का पता देंगे।

चौथा इसमे तो कुछ भी शक नही । फिर क्या करना चाहिए ?

पाँचवाँ हम लोगो को तो जमा-पूँजी से मतलब था, सो दोनो औरतो के गहने उतार ही लिये, इतनी भारी रकम जन्म से आज तक हाथ न लगी थी, अब उन दोना को जमीन के अन्दर पहुँचाइये, बस हो गया ।

बूढा न मालूम तुम लोगो की बुद्धि कहा चरने चली गई ! दोनो औरतो को मार कर क्या अपनी जान बचा लोगे? नरेन्द्रसिंह तुम लोगो को छोड देगा? नही जानते कि उसके यहा कैसे कसे बेढब पता लगाने वाले जासूस मौजूद हैं? नरेन्द्रसिंह को उतने गहनो की परवाह नही है जो हम लोगो ने उन दोनो औरतो के उतार लिये हैं, मगर उनकी जानो पर आफत आते ही हम लोगो की जड-बुनियाद तक बाकी न रहेगी इसे खूब समझ लेना ।

पहिला तब फिर क्या किया जाय ?

बूढा बस इस वक्त यही मुनासिब है कि वे दोनो औरतें छोड दी जाय घूमती फिरती आप ही नरेन्द्रसिंह को मिल जायगी, उनके मिलने पर फिर वे हम लोगो की इतनी खोज भी न करेंगे । इसके साथ ही यह मकान भी हम लोगो को खाली कर देना चाहिए, उसे अब उजडा ही हुआ समझो ।

तीसरा हम लोग तो हुक्म के मुताबिक काम करेंगे, नफा नुकसान आप समझ लीजिए ।

बूढा हम खूब सोच चुके, इस काम मे अब देर करना अच्छा नही है ।

इसके बाद सब उठ कर एक तरफ को रवाना हुए ।

११

मल्लाहो का पता न लगने से मोहनी और गुलाब के गम मे नरेन्द्रसिंह बेहोश होकर गिर पड़े । घण्टे भर के बाद उन्हें होश आया । उठ कर तलवार म्यान मे की और नाव के नीचे उतरे । मोहनी गुलाब और बहादुरसिंह के लिए तबीयत बेचैन थी, वहाँ से धीरे धीरे एक तरफ को रवाना हुए मगर यह नहीं जानते थे कि किस तरफ जा रहे हैं और आगे जगल मिलेगा या शहर ।

जगली फलो पर गुजारा करत हुए कई दिनो के बाद वे एक घने जगल के किनारे पहुँचे । बिना कुछ ख्याल किए यह उस जगल मे घुसे । जसे-जसे आगे जाते थे जगल रमणीक और सुहावना मिलता जाता था, यहा तक कि शाम

होते होते वे एक ऐसे ठिकाने जा पहुँचे जहा जगल को लम्बा-चौडा बाग ही कहना मुनासिब है। साखू, आसनतेंद, पारजात वगरह खुदरो (आप से आप उगने वाले) दरख्तो के अलावे कायदे से हाथ में लगाये हुए खुशबूदार फूलो के पेड भी दिखाई पड़े और जमीन भी वहा की साफ और सुथरी नजर आई। दाहिनी तरफ कुछ दूर पर पेडो की झिलमिलाहट म एक सफेद इमारत भी दिखाई पडी।

इस जगह पहुँच कर हमार नरेन्द्रसिंह अड गये और कुछ गौर करने लगे। इतने ही मे इनकी निगाह बाई तरफ जा पडी। देखा कि कुछ दूर पर कई कमसिन औरतें खूबसूरत लिबास पहने अठखेलियाँ करती इधर-उधर टहल रही हैं। कभी धीरे-धीरे चलती हैं, कभी दौडकर एक-दूसरे को पकडती या धक्का देती हैं, कभी कोई सीटी या ताली बजा कर खूब जोर से हस देती है।

ऐसे दु ख की अवस्था मे भी नरेन्द्रसिंह का जी उस तरफ जा फसा। गौर के साथ देखने लगे, चाहा कि उधर न जायें,मगर जी न माना, धीरे धीरे उसी तरफ बढे। जब उन लोगो के पास पहुँचे तो रुक गये। इतने मे उनम से कई औरतो की निगाह नरेन्द्रसिंह पर जा पडी। वे सकपका कर इनकी तरफ देखने लगी यहा तक कि कुल औरतो ने इन्हें ताज्जुब की निगाह स देखा और आपस मे इशारे से बातचीत करने लगी जिससे नरेन्द्रसिंह को भी मालूम हो गया कि उनके आने पर सभा को आश्चय है।

इन सभो मे से एक औरत चाल-ढाल, पौशाक-जेवर और खूबसूरती के हिसाब सभो म सरदार मालूम होती थी। यो तो सभी चञ्चल और खूबसूरत थी मगर उसके मुकाबिले की एक भी न थी जिसने उदास और गमगीन नरेन्द्रसिंह का दिल भी अपनी तरफ खैच लिया क्योंकि नरेन्द्रसिंह को यह धोखा हुआ कि यह मोहनी है।

मोहनी का खयाल बंधते ही नरेन्द्रसिंह उसकी तरफ लपके जिससे उन औरतो को और भी आश्चर्य हुआ। इन्होंने जल्दी से पास पहुच कर पूछा, "क्या मोहनी, तुम यहा कसे पहुची ? मैं कब से तुम्हारी खोज म परेशान हो रहा हूँ।"

उस औरत ने इनकी बात का कोई जवाब न दिया और अपनी हमजोलियो की तरफ देख कर सिर नीचा कर लिया। नरेन्द्रसिंह ने फिर पूछा, "क्यो चुप

क्यो हो ?''

वह फिर भी कुछ न बोली पर आखो से आसू की बूदें टपाटप गिराने लगी।

ऐसी दशा देख नरेन्द्रसिंह और भी बेचन हो गये और बोले, "क्या सबब है जो तुम अपना हाल कुछ नही कहती और रो रही हो! तुम्हारी वह सूरत नही रही, चेहरे मे भी फर्क पड गया, मालूम होता है बर्षों बाद मुलाकात हुई हो, मारे गम के तुम्हारी जवानी भी तुमसे रुज होने लगी। मैं तो समझता था मुझसे मिल कर तुम खुश होगी मगर तुम्हें रोते देख जी और बेचन हो रहा है—कहो गुलाब तो अच्छी तरह है, वह तुम लोगो के साथ दिखाई नही देती, कहा है ?''

गुलाब का नाम सुन कर वह और भी रोने लगी बल्कि उसकी सहेलियो की भी आखें डबडबा आई जिसे देख नरेन्द्रसिंह को विश्वास हो गया कि जरूर गुलाब किसी आफत म फस गई या जान ही से गुजर गई।

नरेन्द्रसिंह के कई मतबे पूछने और जिद्द करने पर वह अपन आचल से आसू पोछ कर बोली, सब कुशल है, गुलाब भी अच्छी तरह से है बाकी हाल मैं इस समय न कहूँगी। जल्दी क्या है आप भी थके मादे आए है, चलिए मकान मे आराम कीजिए जो कुछ कहना है निश्चिन्ती मे कहूगी, लेकिन पहिले आप जरा देर इसी जगह ठहरिये मैं अपनी सखियो को एक काम सौप लू तब आपके साथ चलू।'

इतना कह वह नरेन्द्रसिंह को उसी जगह छोड इशारे से अपनी सखियो को बुला कर एक किनारे चली गई और आधी घडी तक आपुस म कुछ बातें करती रही, इसके बाद फिर नरेन्द्रसिंह के पास आई और बोली चलिय मकान म क्योकि अब अधेरा हो गया और यहा ठहरने का मौका नही रहा।''

नरेन्द्रसिंह को साथ लिये हुए वह उसी मकान मे गई जिसे उन्होने कुछ दूर पेडो की आड म चमकता हुआ देखा था।

इस मकान के दरवाजे पर कई सिपाही नगी तलवार लिए पहरा दे रहे थे जो एक नये आदमी के साथ अपने मालिक का आते देख उठ खडे हुए। नरेन्द्र सिंह का हाथ पकडे हुए मोहनी मकान के अन्दर गई, पीछे उसकी सखिया भी पहुची।

फाटक के अन्दर जाकर एक लम्बे चौड़े बाग में पहुंचे जिसकी रविशें निहायत खूबसूरती के साथ बनाई हुई थी। पहाड़ी और जंगली फूल-पत्तियों के इलावे खुशबूदार फूलों के पेड़ भी बेशुमार लगे हुए थे जिनकी खुशबू से तमाम बाग गमक रहा था। सामने ही एक लम्बा चौड़ा दोमंजिला मकान बना हुआ नजर आया।

नरेन्द्रसिंह का हाथ पकड़े हुए मोहनी उसे उस मकान के ऊपर वाले खण्ड में ले गई और एक सजे हुए कमरे में ले जाकर बैठाया।

नरेन्द्रसिंह को इस वक्त बड़ी ही खुशी थी मगर साथ ही इसके गुलाब को देखे बिना जी बेचैन था। बैठते ही पूछा, "क्यों मोहनी गुलाब कहां है? उसे जल्द बुलाओ मैं देखूंगा।"

मोहनी आज आप उसे नहीं देख सकते।

नरेन्द्र क्यों?

मोहनी इसका सबब फिर आपसे कहूंगी।

नरेन्द्र अच्छा यह तो बताओ कि तुम्हारी सूरत ऐसी क्यों हो गई? मालूम होता है कि सात-आठ वर्ष के बाद तुम्हें देख रहा होऊं!

मोहनी (ऊंची सांस लेकर) एक तो तुम्हारी जुदाई, दूसरे बहिन के गम ने मेरी यह हालत कर दी!

नरेन्द्र क्या गुलाब के सिवाय और भी तुम्हारी कोई बहिन थी?

मोहनी जी नहीं।

नरेन्द्र फिर किसका गम हुआ?

मोहनी उसी गुलाब का।

नरेन्द्र (चौंककर) गुलाब को क्या हुआ? वह कहां गई?

मोहनी (आंसू गिराकर) बैकुण्ठ चली गई!

गुलाब के मरने का हाल सुन नरेन्द्रसिंह की अजब हालत हो गई। बहुत देर तक रोते रहे।

नरेन्द्र अफसोस, अभी तक तुम्हारा कोई हाल भी नहीं मालूम हुआ कि तुम कौन हो और किस सबब से तुम्हारी वह दशा हुई थी।

मोहनी क्या इतने दिन अलग रहकर भी आपको मेरा हाल कुछ मालूम न हुआ?

नरेन्द्र कुछ भी नही।

मोहनी अच्छा तो मैं जरूर अपना हाल कहूगी।

नरेन्द्र भला इतना तो बता दो कि उस किश्ती पर से तुम लोग कहा गायब हो गए और बहादुरसिंह कहा चला गया ?

मोहनी इसका हाल भी अपने हाल के साथ ही कहूगी, इस समय आप कुछ भोजन करके आराम कीजिए क्योकि आपके चेहरे से थकावट और सुस्ती बहुत मालूम होती है।

नरेन्द्र तुम्हारे मिलने ही से थकावट और सुस्ती बिल्कुल जाती रही मगर अफसोस, बचारी गुलाब

इतना कहते कहते फिर उसकी आखो मे आसू आ गए। मोहनी ने बहुतकुछ समझाया और कुछ खाने के लिये जिद्द की मगर नरेन्द्रसिंह ने कुछ न सुना। लाचार उनको चारपाई पर लिटा और उनसे विदा हो वह नीचे उतर आई और एक दूसरे कमरे मे गई जहा उसकी सखिया बठी उसकी राह देख रही थी और शराब से भरी हुई कई बोतलें भी उस जगह रक्खी हुई थी जिनमे से थोड़ा थोडा गिलास मे डालकर वे सब पी रही थी। मोहनी को आते देख वे सब उठ खडी हुई और हसकर बोली, "मुबारक हो, ईश्वर ने तुम्हारे लिए क्या खूबसूरत जवान भेज दिया!"

मोहनी (हस कर) देखिए! जब रह जाय तब तो!

एक तेरे पजे मे फसा हुआ कब निकल सकता है हा तू खुद निकाल बाहर करे तो बात दूसरी है!

मोहनी नही नही इसके साथ कभी वसा न करूगी जसा दूसरो के साथ किया है क्योकि ऐसा खूबसूरत और बहादुर जवान अभी तक मुझे कोई भी नही मिला था। मुझे तो मालूम होता है यह जरूर किसी राजा का लडका है।

एक इसमे कोई शक नही! आओ बठो कहो क्या-क्या बातचीत हुई ?

मोहनी इस वक्त कोई विशेष बातचीत तो नही हुई, सिर्फ गुलाब का हाल पूछा सो मैंने कह दिया कि मर गई। यह सुन बहुत रोये पीटे फिर पूछा कि तुम अपना हाल बताओ कि तुम्हारी यह दशा कसे भई थी, किश्ती पर से कहा चली गई और बहादुरसिंह कहाँ गया। इसका जवाब भला क्या देती? मुझे कुछ मालूम तो था ही नहीं, और न मैं बहादुरसिंह को ही जानती थी कि

यह कौन बला है, आखिर यह कह के टाल दिया कि कल कहूँगी।

दूसरी उनको यह पूरा विश्वास हो गया कि मोहनी तुम ही हो।

तीसरी इनकी शक्ल-सूरत भी तो मोहनी ही की सी है, फर्क इतना ही है कि उससे यह उम्र मे सात वर्ष बडी हैं।

मोहनी अब मुझे यह फिक्र है कि कल अपना क्या हाल कहूगी ?

एक पेड से लटकी हुई मोहनी और जमीन मे गडी हुई गुलाब की जान जरूर इन्होंने बचाई है या इनसे उन दोनो की किसी तरह मुलाकात हो गई है।

दूसरी जरूर ऐसा ही हुआ है लेकिन उससे क्या, जो जी म आवे बना कर अपना हाल कह देना।

तीसरी अगर मोहनी पहिले अपना हाल कुछ कह चुकी हो तब ?

मोहनी नही मोहनी ने अपना हाल कुछ नही कहा, क्योंकि बात ही बात में यही दरियाफ्त करने के लिए मैंने पूछा था कि मुझसे जुदा होकर भी मेरा हाल तुमको नहीं मालूम हुआ ? जिसके जवाब मे वे बोले कि 'कुछ भी नही।' इसके इलावा पहिले ही उन्होने कहा था कि मुझे अभी तक यह नही मालूम हुआ कि तुम कौन हो' इन सब बातो को खयाल करके मैं समझती हू कि मोहनी अपना हाल कुछ कहने न पाई और फिर इनसे अलग हो गई।

एक तुम्हारा सोचना बहुत ठीक है।

मोहनी मुझे तो इनका नाम भी नही मालूम !

दूसरी कल तुम उनसे कहना कि तुमने भी तो अपना ठीक-ठीक नाम और हाल अभी तक नहीं बताया, तब वे खुद ही कहेंगे कि मेरा नाम ठीक फलाना ही है और अपना हाल भी कुछ कुछ कहेंगे।

इतने म एक सखी ने शराब का गिलास भरकर मोहनी के हाथ म दिया और कहा, "लो आज बडी खुशी का दिन है रोज से दूनी पीनी चाहिए, पीयो और हम लोगो का भी कुछ खयाल रक्खो। ईश्वर न इनको यहाँ भेज दिया है तो ऐसा न हो कि इनके आन का सुख अकेली तुम ही लूटो।'

इसके जवाब म मोहनी ने हसकर कहा 'क्या मैं तुम लोगो को रोकती हू ? इसमे मेरा बस है या उनका ?"

थोडी देर तक हँसी-खुशी की शैतानी दिल्लगी रही इसके बाद लौडियां

खाने-पीने का सामान उस जगह ले आई, सब मिल कर खाने और शराब पीने लगी, यहा तक कि नशे मे मस्त हो उसी जगह सब की सब बेहोश होकर जमीन पर लेट गई और किसी को तनोबदन की सुध न रह गई।

मोहनी की इन सखियो मे दो ऐसी थी जो शराब को हाथ से भी नही छूती थी और हर तरह से नेक और दयालु थी। दिन रात का ज्यादे हिस्सा ईश्वर के भजन और ध्यान ही म गँवाती थी। यह शैतान मण्डली उन्हें भली नही मालूम होती थी मगर क्या करें लाचर होकर साथ रहना पडा था। इनका नाम श्यामा और भामा था।

मोहनी तो अपनी सखिया के साथ शराब के नशे मे ऐसी बेहोश पडी कि पहर दिन चढे तक तनोबदन की सुध न रही मगर बेचारी श्यामा और भामा कुछ रात रहते ही उठी और जरूरी कामा से छुट्टी पा नहा-धो, साफ कपडे पहिर नरेन्द्रसिंह के पास पहुँची और दिलोजान से उसकी खिदमत करने लगी।

मोहनी की सूरत म फक क्यो पड गया ? सूरत ही नही बल्कि चाल चलन, निगाह चितवन बातचीत सभी दूसरे ढग की नजर आती है।' आखो मे उतनी हया भी नही है। सिवाय इसके शहर छोड जगल म रहना इसने क्यो' पसन्द किया ? और अन्दाज से यह भी मालूम होता है कि मुझसे जुदा होकर इसने मेरी खोज बिल्कुल नही की ! नरेन्द्रसिंह ने इसी सोच और खयाल म वह दूसरी रात बिता दी और घडी-घडी उठ कर देखते रह कि सवेरा हुआ या नही।

अभी अच्छी तरह आसमान पर सुफेदी नही फली थी यद्यपि एक तरह पर सवेरा हो चुका था। नरेन्द्रसिंह पलग पर लेटे-लेटे दरवाजे की तरफ देख रहे थे कि हाथो मे जल का लोटा लिए श्यामा और भामा वहा पहुची। उसी रास्ते से होकर दूसरे कमरे म चली गई और लोटा रखकर लौट गई। थोडी देर बाद मुह हाथ धोने के लिए पानी, दतुअन मजन और धोती-गमछा इत्यादि कुल सामान लेकर आई और उसी कमरे मे जिसम जल का लोटा रख गइ थी इन चीजो को भी रखा इसके बाद नरेन्द्रसिंह के पलग के पास पहुची। इनको पास आत देख नरेन्द्रसिंह न जान बूझकर आँखें बन्द कर ली और अपने को सोता हुआ-सा बना लिया।

श्यामा पैर दबाने और भामा पखा झलने लगी। थोडी देर बाद नरेन्द्रसिंह उठ बैठे और उन्होने पूछा, "सवेरा हो गया ?"

श्यामा जी हाँ, उठिये मुह-हाथ धोइए।

नरेन्द्र (उठ कर) मोहनी कहाँ है ?

श्यामा मोहनी कौन ?

नरेन्द्र तुम्हारी मालिक।

श्यामा जी हा, वह अभी तक सोई हुई है।

नरेन्द्र बहुत देर तक सोया करती हैं !

श्यामा अब उनके उठने का समय हो ही गया है, तब तक आप चाहें तो स्नान-सन्ध्या से छुट्टी पा सकते हैं।

नरेन्द्र मैं भी यही चाहता हूँ।

इतना कह नरेन्द्रसिंह पलग के नीचे उतरे। श्यामा और भामा दोनो दिलोजान से खिदमत करने पर मुस्तैद हो गई। इनकी होशियारी और फुर्ती के साथ काम करने के सबब से नरेन्द्रसिंह जरूरी कामो से छुट्टी पाकर दतुअन-कुल्ला, स्नान-सध्या इत्यादि स बहुत जल्द निश्चित हो गये, किसी बात की जरा भी तकलीफ न हुई।

श्यामा और भामा जिस प्रेम के साथ उनकी खिदमत कर रही थी उसे देख यह दग हो गए और सोचने लगे कि ऐसी सलीके वाली ~ ड्या तो आज तक मैंने नही देखी। सिवाय इसके इन्हें लौंडी कहते भी सकोच मालूम होता है। चाहे इनकी पौशाक बेशकीमत न हो फिर भी बातचीत और चाल-ढाल से ये छोटे दर्जे की औरतें नहीं मालूम होती। इन दोनो का र ् ~ङ सांवला है तो क्या हुआ मगर इनके रूपवान होने मे कोई शक नही, तिसमे यह एक जो अपना नाम श्यामा बताती है परम सुन्दरी है और लक्षणो से मालूम होता है कि अभी कुआरी है। अहा! क्या ही सुन्दर मुख और कैसी बडी रतनार आँखें हैं! अभी तक मैंने इसकी सुन्दरता पर ध्यान नही दिया था मगर अब जो गौर करके देखता हूँ तो यही कहने को जी चाहता है कि यह श्यामा खूबसूरती म किसी तरह भी मोहनी से कम नही है बल्कि गुण और शील मे उससे बढकर है। इसे तो सामने से जाने देने का जी ही नही चाहता! न मालूम क्यो इसकी तरफ मेरा चित्त खिचा जाता है। मोहनी आवे तो पूछू

दोनो कौन हैं।

इसी तरह की बातें सोच रहे थे कि इतने ही में नींद से जाग जमुहाई लेती हुई मोहनी भी आ पहुँची। इसका खुमार अभी सब उतरा न था, आते ही नरेन्द्रसिंह के पास बैठ गई और गले में हाथ डाल कर बोली, "क्या अभी सोकर उठे हो? स्नान न करोगे?"

मोहनी के मुंह से शराब की ऐसी बुरी भभक निकली कि नरेन्द्रसिंह का जी बिगड़ गया। मोहनी का हाथ अपने गले से निकाल झट उठ खड़े हुए और बोले मैं तुम्हारी इन दोनो होशियार लौंडियो की बदौलत स्नान पूजा आदि सब चीजो से छुट्टी पा चुका हूँ। तुम शायद अभी सोकर उठी हो!"

मोहनी को अपना हाथ गले में से निकाल कर एकाएक इस तरह नरेन्द्रसिंह का उठ जाना बहुत ही बुरा मालूम हुआ और वह लाल-लाल आँखें कर नरेन्द्र सिंह की तरफ देखने लगी।

नरेन्द्रसिंह भी अपने दिल में सोचने लगे कि मोहनी को यह क्या हो गया! यह तो बातचीत से बहुत नेक और शरीफ खानदान की लड़की मालूम होती थी मगर इसका रंग-ढंग बिलकुल बदला हुआ देखता हूँ। जब मैंने गुलाब का हाल इससे पूछा तो बोली कि 'वह मर गई!!' लेकिन अभी मुझसे इसका संग छूटे पन्द्रह दिन भी नहीं हुए, तो क्या इसी बीच में गुलाब के मरने का गम इसके दिल से जाता रहा और यह हंसी-खुशी में दिन बिताने लगी? क्या किसी शरीफ खानदान की कुआरी लड़की का ऐसा करना मुनासिब है? यह तो बिल्कुल असभ्य और कुलटा मालूम होती है। अगर इसकी चालचलन ऐसी ही है तो मैं इसकी मुहब्बत से बाज आया। मैं ऐसी बदचलन औरत से बात भी करना पसन्द नहीं करता। वाह! मेरे गले में हाथ डालते इसे जरा भी शर्म न मालूम हुई!!

थोड़ी देर तक दोनो अपने अपने मतलब की सोचते रहे, आखिर मोहनी से न रहा गया। बोली, 'क्यो साहब आपने तो मेरी बड़ी बेइज्जती की!!'

नरेन्द्र वह क्या?

मोहनी मैं आपकी मुहब्बत से आपके पास आकर बैठूं और आप इस तरह मुझे दुतकार कर उठ जायें?" क्या इसी को सभ्यता कहते हैं?

नरेन्द्र अगर औरतें सौ दफे इस तरह के नखरे करें तो कोई हर्ज नहीं

मगर मर्द एक ही दफे के खरे मे खराब समझा गया !!

बस नरेंद्रसिंह के इतना ही कहने से मोहनी का खयाल बदल गया और वह हँस के बोली "खैर तो आइए बैठिए।"

नरेंद्र मेरा कायदा है कि नहाने के बाद मैं उस आदमी के पास नही बैठता जो बिना नहाया हो।

मोहनी क्या छूत लग जाती है ?

नरेंद्र चाहे छूत न लगे तो भी ऐसा कायदा रखने से बहुतकुछ फायदा है।

मोहनी (उठ कर) खैर साहब मैं जाकर नहा आती हूँ।

नरेंद्र हा, इसके बाद फिर हमसे बातचीत होगी।

मोहनी (श्यामा की तरफ देखकर) मैं नहाने जाती हूँ तब तक तुम इनके खाने पीने का कुछ बंदोबस्त करो।

श्यामा बहुत अच्छा।

मोहनी चली गई, इसके बाद श्यामा ने हाथ जोड कर नरेंद्रसिंह से कहा, "मुझे मालिक का हुक्म हुआ है कि आपके वास्ते खाने-पीने का बंदोबस्त करूँ मगर मेरा जी यहा से जाने को नही चाहता क्योकि आपसे एक बात कहनी बहुत जरूरी है। अगर मैं यहा से जा कर आपके भोजन का बंदोबस्त करूँ तो फिर बात करने का मौका न रहेगा क्योकि तब तक वह फिर आ जाएगी और मेरी बात ऐसी है कि सिवाय आपके अगर कोई दूसरा सुन ले तो मेरी जान जाने मे कोई शक न रहे।

नरेंद्र वह कौन-सी बात है, कहो।

श्यामा इस तरह मैं नही कहने की, हाँ आप इस बात की कसम खाएँ कि किसी दूसरे से न कहेंगे तो मैं जो कुछ गुप्त भेद है उसे कह डालूँ।

गुप्त भेद का नाम सुनते ही नरेंद्रसिंह चौंक पडे। वह बात कौन-सी है जिसके लिए श्यामा कसम खिलाया चाहती है, यह जानने के लिए जी बेचन हो गया। कुछ गौर करने के बाद नरेंद्रसिंह ने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली और श्यामा से कहा "देखो मैं क्षत्री हूँ मेरे लिए इससे बढ के कोई कसम नही है। इसे हाथ मे ले मैं कसम खाता हू कि तुम्हारी बात कभी किसी से न कहूगा।'

श्यामा बस बस, मेरा जी भर गया, पर फिर भी मैं आपसे एक वादा और कराया चाहती हू।

नरेन्द्र वह भी कहो।

श्यामा अगर मेरी बात सुनकर आप यहाँ से भागा चाहें तो हम दोनो को भी यहा से निकालने की फिक्र करें नही तो आपके जाने के बाद हम लोग किसी तरह बच नही सकेंगी।

नरेन्द्र (ताज्जुब से) ऐसी कौन-सी बात है जिसे सुन मैं यहा से भाग जाऊँगा ?

श्यामा वह ऐसी ही बात है।

नरेन्द्र खैर मैं इस बात की भी कसम खाता हूँ कि अपने साथ तुम दोनो को भी यहाँ से बाहर करूँगा। हाँ पहिले यह कह दो कि क्या मेरे लिए तुम अपने मालिक का साथ छोडोगी ?

श्यामा ईश्वर न करे ऐसी बदकार औरत की नौकरी कभी करनी पड़े न मालूम मैंने कौन से ऐसे पाप किए हैं जिनके बदले कई दिन इसके पास रहने का दु ख परमेश्वर ने मुझे दिया ! मैं इसकी लौंडी नही हू मगर वक्त को क्या करूँ ? यह सब आपकी

इतना कहते कहते आखो से टपाटप आसू की बूँदें गिरने लगी कण्ठ भर आया और आवाज बन्द हो गई।

नरेन्द्र (हाथ थाम कर) हाँ हाँ, यह क्या ! रोती क्या हो ? मैं वादा करता हूँ कि जहाँ तक होगा तुम्हारा दु ख दूर करने से बाज न आऊँगा।

श्यामा आपके तो जरा सा निगाह ही कर देने से मेरा जन्म भर का दु ख दूर हो जाएगा, नही मरी हुई तो हुई हूँ।

नरेन्द्र इसके लिए भी मैं वही कसम खाता हूँ कि अगर मेरे किए तुम्हारा दु ख दूर हो जाएगा तो मैं कभी मुह न फेरूँगा।

श्यामा (आसू पोछ कर और अपने को खूब सम्हाल कर) अब ध्यान देकर सुनिए। पहिले तो यही बता देना ठीक होगा कि यह मोहनी नही है जिसे आप मोहनी समझे हुए हैं।

नरेन्द्र (चौंक कर) हैं ! क्या यह मोहनी नही है ?

श्यामा नही।

नरेंद्र हाय हाय ! इस नालायक ने तो पूरा धोखा दिया ! पहिले ही मेरा जी इससे खटका था। औरतें भी क्या ही आफत होती हैं ! ऐसो ही की शतानी और बदकारी किताबो मे देख देख कर और लोगो से सुन-सुन कर मने दिल मे निश्चय कर लिया था कि कभी शादी न करूँगा। इसी सबब से मने अपना देश छोडना मजूर किया, फिर भी मोहनी की मुहब्बत मे फस गया और दु ख उठाना ही पडा ।

श्यामा नही, आपका ऐसा सोचना मुनासिब नहीं है। सभी औरतें ऐसी बदकार आ' नालायक नही होती, एक के सबब से सौ को बदनाम करना धम-विरुद्ध है।

नरेंद्र खर यह सब जाने दो और यह बताओ कि अगर यह मोहनी नही ता कौन है ? क्या यह अपनी सूरत बदले हुए है ?

श्यामा यह मोहनी की बडी बहिन है।

नर द्र इसके बारे मे जो कुछ तुमको मालूम है खुलासा कहो।

श्यामा सुनिए मैं सबकुछ कहती हूँ। इ ही कई दिनो मे जब से मैं यहा आई इन लोगो का पूरा इतिहास जान गई हूँ। इसका नाम केतकी है। गुलाब मोहनी और केतकी तीना एक ही मा के पेट से पदा हुई हैं। गुलाब को सात महीने की छोड इनकी मा मर गई थी। ये तीनो अपने बाप के बडे लाड-प्यार से पली हैं जिसका नाम हजारीसिंह था और जो गया के बहुत बडे जमीदारा म गिना जाता था।

नरेंद्र अच्छा फिर ?

श्यामा केतकी जब जवान हुई तब इसने बदचलनी पर कमर बाँधी जिससे इसके बाप को बहुत रज हुआ और उसने एक अच्छे खानदान म लडके से इसकी शादी कर दी, मगर इस हरामजादी ने उसे जहर देकर मार डाला। यह देख इसके बाप को और भी रज हुआ और उसने केतकी को मार डालने का पूरा पूरा इरादा कर लिया। यह खबर केतकी को लग गई और उसन रसोई बनाने वाले ब्राह्मण से मिल कर जिसके साथ यह फँसी हुई थी अपने बाप को जहर दिलवा दिया और उसके मरने बाद कुल जायदाद की मालिक बन बठी।

नरेंद्र ईश्वर ऐसी औरत से बचाये! अच्छा फिर क्या हुआ?

श्यामा कुछ दिन म मोहनी और गुलाब भी होशियार हुई और इसकी चालचलन देख देख चिढ उठी। मोहनी और गुलाब दोनो बहुत ही नेक और सूधी थी। दोनो मे प्रेम भी बहुत था, इसलिए दोनों ने अपने बाप के माल मे से अपना अपना हिस्सा अलग कर लेना चाहा।

नरेन्द्र क्या और कोई इनका बडा बुजुग नही था ?

श्यामा कोई नही।

नरेन्द्र अच्छा तब ?

श्यामा हिस्सा देना केतकी को बहुत बुरा मालूम हुआ। कई बदमाश से मिल कर वह मोहनी और गुलाब दोनों को धोखा देकर जगल म ले गई जहाँ सुनते हैं कि दोनो को फांसी देकर मार डाला, मगर ताज्जुब यही है कि अगर वे दोनो मर ही गई तो आपने उन्हें कसे देखा ?

नरेन्द्र मौत से उन्हें मैंने ही बचाया था।

श्यामा ठीक है खैर, यह केतकी अपने बाप की बेहिसाब दौलत को ऐयाशी मे उडाने लगी। यह मकान उसके बाप ही का बनवाया हुआ है। अब यह ज्यादेतर इसी मे रहा करती है, यहाँ इसन कई आदमियो का साथ किया और थोडे थोडे दिन के बाद सभो की जान लेती गई। बस इसके सिवाय और कुछ नही जानती। हा, आप मोहनी का हाल कहिए कि वह क्योकर बची ?

नरेन्द्र मोहनी का हाल कहने के पहिले मुझे अपना हाल भी कहना पडेगा कि घर से क्यो बाहर निकला।

श्यामा नहीं वह तो मैं जानती हूँ कि आप शादी के खिलाफ होकर ठीक बारात वाले दिन भाग निकले थे।

नरेन्द्र (ताज्जुब से) यह तुम्हे कैसे मालूम हुआ ?

श्यामा मेरा घर भी उसी शहर म है और उस दिन मैं भी आपके ससुराल मे ही थी। बदकिस्मती से यहा तक की नौबत पहुँची। अच्छा, अब आप मोहनी का हाल कहिये।

नरेन्द्र म घर से भागा हुआ जगल जगल घूमता फिरता रात के वक्त वहाँ पहुचा जहा एक पेड के साथ मोहनी उलटी लटकी हुई थी। उसे उतारा, जब होश मे आई तब उसी की जुबानी मालूम हुआ कि गुलाब भी उसी जगह गाडी गई है अस्तु उसे भी निकाला। सन्दूक मे रख कर वह गाडी गई थी

इसलिए बच गई। वहाँ से पास ही एक नदी थी, और एक किश्ती भी किनारे मौजूद थी। हम लोग उस पर सवार होकर वहाँ से रवाने हुए। सुबह होने पर मैंने किश्ती किनारे पर लगाई। वहाँ पर मेरे लड़कपन के एक साथी बहादुरसिंह से मुलाकात हुई। वहाँ से कुछ दूर पर एक बड़ी नाव दिखायी पड़ी, बहादुरसिंह को मोहनी और गुलाब की हिफाजत के लिए छोड़ मैं वह नाव किराये करने गया मगर वहाँ से जब लौटा तो तीनों में से किसी को भी न पाया, न मालूम वे सब वहाँ गायब हो गये थे। उन्हीं को खोजता खोजता यहाँ तक आ पहुँचा हूँ।

इससे ज्यादा और कुछ बात न होने पाई क्योंकि उसी समय केतकी आ पहुँची जिसे देख नरेन्द्रसिंह ने अपनी कहानी का सिलसिला छोड़ दिया और मुस्करा कर केतकी से कहा, 'आइये, मैं आप ही की राह देख रहा हूँ।'

केतकी क्या बात है जो श्यामा और भामा सवेरे से ही आपके पास अड़ी हैं।

नरेन्द्र ये दोनों बेचारी बड़ी नेक हैं और दिल से मेरी खिदमत कर रही हैं इनके रहने से मुझे बड़ा आराम मिला। तुम्हारे जाने के बाद अकेले बैठा क्या करता, इन्हीं से बातचीत करता रहा।

केतकी तो क्या आपने अभी तक भोजन नहीं किया?

नरेन्द्र भोजन करने की इच्छा नहीं हुई इसीलिए मना कर दिया।

केतकी और ये दोनों भी आफत की मारी चुप हो रहीं।

नरेन्द्र तो क्या करतीं? मुझी को भूख न थी तो इनका क्या दोष?

केतकी (श्यामा की तरफ देखकर) जाओ भोजन ले आओ।

श्यामा बहुत अच्छा।

नरेन्द्र नहीं नहीं, मैं अभी कुछ न खाऊँगा।

केतकी यह तो न होगा।

नरेन्द्र मेरी तबीयत आज ठीक नहीं है। तुम्हारी खोज में बहुत दूर तक पैदल घूमना पड़ा। आदत तो थी नहीं इससे पैरों में बहुत दर्द है और कुछ-कुछ पेट भी दुख रहा है। इस समय अगर मैं कुछ भी खाऊँगा तो जरूर बीमार पड़ जाऊँगा। तीन चार घण्टे मुझे और छोड़ दो, जब थोड़ा दिन बाकी रह जाएगा तब मैं जरूर भोजन करूँगा। तुम मेहरबानी करके इन दोनों को

हुक्म दो कि जल्द भोजन कर आवें क्योंकि मैं अपनी ' त के लिए इन्ही दोनो को पसन्द करता हूँ।

केतकी जसी मर्जी आपकी ! (श्यामा और भामा रफ देखकर) अच्छा जाओ, तुम लोग जल्दी अपनी छुट्टी करके आओ।

श्यामा और भामा भोजन करने चली गई। अब केतकी और नरेन्द्रसिंह मे बातचीत होने लगी।

नरेन्द्र हा मोहनी, अब मौका बहुत अच्छा है, अब अपना हाल कहो।

मोहनी नही, पहिले आप ही अपना हाल कहिए।

नरेन्द्र नही नही, पहिले तुम्ही को कहना पड़ेगा। हा बोलो जगल मे तुम्हारी जान किसने बचाई ?

केतकी (कुछ सोचकर) घूमते-फिरते एक साधू जगल मे आ गये। उन्ही की बदौलत मेरी जान बची इसके बाद आपसे मुलाकात हुई '

अब तो जो कुछ थोड़ा-बहुत शक नरेन्द्रसिंह के मन म था वह भी जाता रहा। फिर केतकी से कोई सवाल न किया, केतकी के पूछने पर कुछ झूठ-सच अपना नाम-पता आदि बता कर ऊपर के दिल से घण्टे भर तक उससे बातचीत करते रहे। तब तक श्यामा और भामा भी आ गई। तब नरेन्द्रसिंह उठ कर चारपाई पर चले गये। केतकी चारपाई के नीचे उनके पास आ बैठी, श्यामा पैर दबाने और भामा पखा झलने लगी। नरेन्द्रसिंह थोड़ी देर तक केतकी से हसी-दिल्लगी करते रहे इसके बाद सो रहे।

नरेन्द्रसिंह ने जान-बूझ कर आँखें बन्द कर ली। केतकी समझी कि इन्हे नीद आ गई। थोड़ी देर बैठ कर चली गई, तब इन्होने अपनी आँखें खोलीं और हस कर श्यामा की तरफ देखा।

श्यामा (मुस्कुरा कर) आपको तो खूब नीद आई !

नरेन्द्र क्या कहूँ, उससे तो बात करने को भी जी नही चाहता, अब तो मुझे भागने की फिक्र पड़ी है।

श्यामा होशियार रहिये, केतकी को अगर जरा भी शक हो जायगा कि आप भागना चाहते हैं तो बिना आपकी जान लिये न छोड़ेगी ! वह हमेशा से ऐसा ही करती आई है न मालूम कितने बेचारे इसी कमरे म अपनी जान दे चुके हैं।

नरेन्द्र उसके उस्ताद को तो पता लगेगा ही नहीं !

श्यामा देखिये मेरा खयाल रखिएगा ! कहीं ऐसा न हो कि आप मुझे यहीं छोड जाय और मैं पीछे कुत्तो से नुचवाई जाऊँ ! !

नरेन्द्र वाह वाह ! क्या तुमने मुझे ऐसा बेमुरौवत समझ लिया है

श्यामा आपके बेमुरौवत होने मे क्या कोई शक है ?

नरेन्द्र (जोश मे आकर) क्या दो ही घण्टे की जान-पहिचान मे मुझे तुमने बेमुरौवत भी समझ लिया ?

श्यामा जी नही, मगर मैं आपकी तारीफ सब सुन चुकी हूँ। मेरी मौसी आप ही के शहर मे रहती हैं और उनकी चिट्ठी-पत्री बराबर आया करती है, इस सबब से आपका कोई हाल मुझसे छिपा हुआ नही है।

नरेन्द्र तो क्या तुम्हारी मौसी ने लिखा है कि नरेन्द्र नालायक है ?

श्यामा नही मगर उन्होंने रम्भा का हाल जरूर लिखा है।

नरेन्द्र रम्भा कौन है ?

श्यामा जिससे आपने शादी की है।

नरेन्द्र मेरी शादी तो हुई ही नही ! मैं तो बारात म से ही निकल भागा था !

श्यामा आप जो चाहे समझें मगर आपके निकल भागने स होता ही क्या है। रम्भा तो समझ चुकी कि आपके साथ उसकी शादी हो गई, अब क्या वह दूसरी शादी करेगी।

नरेन्द्र क्या उसका बाप उसकी दूसरी शादी न करेगा ?

श्यामा उसके बाप ने तो बहुत कोशिश की थी कि उसकी दूसरी शादी करे मगर रम्भा ने साफ इन्कार कर दिया और कह दिया कि 'मेरे पति तो नरेन्द्र हो चुके ! !'

नरेन्द्र फिर क्या हुआ ?

श्यामा उसके बाप ने बहुत कोशिश की और कई आदमियो से उसे कहलाया कि नरेन्द्र बडा ही बदमाश और बदसूरत था, क्या हुआ जो चला गया पण्डित लोग कहते है दूसरी शादी करने म कोई हर्ज नही, मगर रम्भा ने एक न मानी और बोली कि नरेन्द्र चाहे कैसे ही खराब स खराब क्यो न हो मगर मेरे लिए बहुत अच्छे हैं। जब लोगो ने उसे बहुत तग किया तब वह अपनी एक

सखी और चचेरे भाई अजु र्नसिंह को साथ ले आपको खोजने निकली। अब न मालूम वह कहां कहां टक्करें मारती और मुसीबत झेलती होगी। उस औरत को देखिये कि अपने धर्म का उसे कैसा खयाल रहा और बिना देखे आपके प्रेम मे कैसी उलझ गई, इसके खिलाफ आप अपने को देखिये कि कहा तो यह शेखी कि शादी ही न करूंगा कहा मोहनी को देख एसा मस्त हुए कि बस उस रग-ढंग का किसी को देखा मोहनी ही समझ लिया और इश्क का पिशाच आपके सिर पर सवार हो गया! अब कहिये आपके बेमरौवत होने म कोई शक है! आप मेरी बातो से खफा न होइयेगा, मुझसे साफ-साफ कहे बिना नहीं रहा जाता, क्या करूं!

नरेन्द्र नही नही, खफा क्यो होने लगा, मगर श्यामा, तुम तो गजब की औरत हो। न मालूम कहा-कहा की बातें तुम्हे मालूम हैं। अगर सचमुच रम्भा ने एसा किया जसा तुम कहती हो तो जरूर मुझे उसके आग शर्मिन्दा होना पड़ेगा।

श्यामा जी हा, मैं जो कुछ कहती हूँ बहुत सही कह रही हू। अब उसके बाप ने बहुत से आदमी उसकी खोज म इधर-उधर रवाना किये हैं। मेरी मौसी ने जब बेचारी रम्भा का हाल लिखा तो पढ कर मुझे बडा ही रज हुआ। मैंने अपनी मौसी से उसकी तस्वीर माग भेजी। उसने बडी कोशिश कर के उसकी तस्वीर उसके घर से लेकर मुझे भेजी है, उसी के साथ आपकी तस्वीर भी आई थी, अभी परसो ही तो वह तस्वीर मुझे मिली है। हाय, उसके देखने से कितना रज होता है!

नरेन्द्र उसकी तस्वीर कहा है, मुझे दिखाओ!

श्यामा उसको देखकर आप क्या कीजियेगा, आपको तो औरतो से नफरत ही है!

नरेन्द्र भला देखें तो सही कि वह कसी है जिसने मेरी इतनी कदर की।

श्यामा खर उसने जो मुनासिब समझा किया आपको तो उसकी गरज ही नहीं है फिर तस्वीर देखकर क्या कीजियेगा!

नरेन्द्र तुमने उसका हाल मुझे ऐसा सुनाया कि मेरे रोगटे खड़े हो गये। मैं तुम्हारा बडा ही अहसान मानूगा अगर तुम उसकी तस्वीर मुझे दिखा

दोगी।

श्यामा (भामा की तरफ देखकर) अच्छा बहिन, रम्भा की तस्वीर लाकर इन्हें दिखा दो।

भामा वहाँ से चली गई और बहुत जल्द रम्भा की तस्वीर ले कर आई। घबराहट के मारे नरेन्द्रसिंह ने खुद उठ कर बल्कि कुछ आगे बढ़ कर रम्भा की तस्वीर भामा के हाथ से ले ली और एक निगाह उस पर डाली। वह तस्वीर थी या कोई आफत कि देखते ही नरेन्द्रसिंह की हालत बदल गई, चारपाई पर बैठना भूल गए और उसी जगह जमीन पर बैठ तस्वीर देखने और आँसू बहाने लगे। तब कई सायत के बाद बोले, 'ओह! क्या यही वह रम्भा है जिसको मैंने एकदम त्याग दिया और जिसके साथ शादी करने से इन्कार कर दिया! हाय, इस दुनिया में कोई भी मेरे ऐसा कम्बख्त न होगा जिसने आती हुई लक्ष्मी को लात मारी! अहा, यह खूबसूरती! इतना पढ़ा-बढ़ा हुस्न! ऐसा दिमागदार चेहरा! तिस पर इतनी नेक और पतिव्रता!! हाय! बदनसीब नरेन्द्र! तैंने बहुत ही बुरा किया जो ऐसी को सताया। जरूर इसी पाप का फल भोग रहा है। बिना देखे और जांचे किसी की बेकदरी करना बड़ी भारी भूल है। क्या ऐसी गुणवाली औरत तुझे और कहीं मिल सकती है? हाय! अगर मेरी आँखों में शील और मुरौवत और हृदय में दया होती, तो इसके सामने किसी का कभी नाम भी न लेता! मगर नहीं, उसका खयाल अगर दूर कर दूंगा तो पक्का बेईमान और बेमुरौवत कहलाऊँगा और दुनिया में मेरी कुछ भी कदर न रहेगी। मगर क्या मोहनी की रम्भा ऐसी नेक औरत की खिदमत करने में कुछ उज्र होगा? कभी नहीं! खैर जो कुछ होगा देखा जाएगा, अब तो रम्भा को खोजना ही मेरा पहला काम हुआ! अच्छा अगर वह न मिली तो मैं क्या करूंगा? इसके कहने की कोई जरूरत नहीं, किसी दूसरे का नहीं तो अपनी जान का तो मैं आप मालिक हूँ!!"

इसी तरह की बातें घण्टों तक नरेन्द्रसिंह कहते तथा बकते, झकते, रोते-कलपते और अफसोस करते रहे। दूर ही से श्यामा और भामा इनकी दशा देख देख मुस्कराती रही। मगर आखिर श्यामा से न रहा गया, जो उमड़ आया, बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाला और नरेन्द्रसिंह के सामने आकर बोली, "आप यह क्या कर रहे हैं! बिल्कुल बनी-बनाई बात बिगाड़ा चाहते

हैं ! कहीं केतकी आ जाय और इस तरह पर आपको देखे तो कहिए क्या हो ! अब उसके आने का वक्त भी हो गया है, लाइए यह तस्वीर मुझे दीजिए। लेकिन आप घबराइए नहीं, मैं वादा करती हूँ कि आपको रम्भा से मिला दूंगी। मैं उसका बहुतकुछ हाल जानती हूँ और यह भी जानती हूँ कि इस समय वह कहाँ है।"

नरेन्द्र (सिर उठा के श्यामा की तरफ देख कर) हैं ! क्या तुम जानती हो कि इस समय रम्भा कहाँ है और तुम वादा करती हो कि मुझे उससे मिला दोगी?

श्यामा हाँ, हाँ, मैं जानती हूँ और वादा करती हूँ कि आपको रम्भा से मिला दूँगी मगर इस बात पर कि जो कुछ मैं कहूँ आप उससे इन्कार न कीजिए।

नरेन्द्र मुझसे कसम ले लो जो मैं कभी तुम्हारे कहने के खिलाफ चलूँ। हाय ! इस वक्त तुम भी मुझको भली मालूम होती हो क्योंकि (तस्वीर देख कर) रम्भा की बहुत सी बातें तुममे पाई जाती हैं।

श्यामा (भामा की तरफ देख कर और मुस्कुरा कर) बहिन, जरा इनकी बातें तुम भी याद रखना !

भामा मुझे तो यही डर है कि कहीं केतकी न आ पहुचे।

नरेन्द्र केतकी भला मेरा क्या कर लेगी ? क्या मैं मर्द हो कर औरत से डरूँगा ? केतकी की मजाल है जो मुझे रोक सके !!

श्यामा राम राम, ऐसा न कहिए ! चाहे केतकी आपका कुछ न कर सके मगर उसका बंदोबस्त ऐसा है कि आप ऐसे दस को भी वह कुछ नहीं समझती। इसका हाल तो मैं जानती हूं। लाइए यह तस्वीर मुझे दीजिए और चारपाई पर आकर लेटिए। अब तो मैं इस बात का बीडा ही उठा चुकी हूं कि आपको रम्भा से मिला दूँगी, फिर क्या है ? अगर आप मेरी बात नहीं सुनते तो लीजिए फिर मैं जाती हू, आप जानिए आपका काम जाने !

नरेन्द्र नहीं नहीं, तुम जो कहोगी मैं वही करूंगा, लो तस्वीर लो, मगर फिर जब मैं मागूं तब दे देना।

श्यामा हां यह हो सकता है।

नरेन्द्रसिंह ने रम्भा की तस्वीर श्यामा के हाथ में दे दी और पलग पर

आकर लेट रहे मगर उनकी क्या दशा थी यह वही जानते होंगे।

थोड़ी ही देर में सीढ़ी पर चढ़ते हुए किसी आदमी के आने की आहट मालूम हुई। तीनों की निगाह दरवाजे पर जा लगी, देखा तो केतकी आ रही है।

मगर इस समय केतकी का रंग बदला हुआ था। गुस्से के मारे उसका गोरा मुंह सुर्ख हो रहा था आंखें लाल नजर आती थीं, और बदन कांप रहा था। आते ही वह कड़क कर बोली "क्या रे श्यामा! क्या तूने मुझको छोकड़ी समझ लिया है? अरे तेरे जैसे पचास को चरा के रख दूं, तू क्या मुझसे चालाकी खेलेगी? वाह री लौंडी! अच्छा खिदमत करने के बहाने मुझ पर बिजली गिराने लगी। वह दिन याद नहीं कि कहीं बैठने का ठिकाना तुझको नहीं मिलता था? मैंने अपने यहां रख लिया यह क्या तेरे साथ कोई बुराई की? मगर पांच ही सात दिन में तेरे गुण जाहिर हो गए। मैं नहीं समझती थी कि तू आस्तीन की नागिन बन जाएगी! अरे शैतान की बच्ची! तुझको जरा भी मेरा डर न हुआ! क्या तू नहीं जानती थी कि मैं कौन हूं! क्या तुझे यह खयाल न हुआ कि केतकी अगर कहीं छिप कर सुनती होगी तो मेरी क्या दशा करेगी? अरे, मैं तो पहले ही ताड़ गई थी कि इनके पास तेरा बैठना-उठना और खिदमत करना बेसबब नहीं है, जरूर कुछ दाल में काला है। अगर छिप के सब बात न सुनती तो मुझे भला क्या मालूम होता कि तू जहर की बुझी कटारी है! यह खूबसूरती और यह कसाईपन! अरे मैंने तो समझा था कि यह किसी बड़े खानदान की नेक लड़की है किसी आफत के सबब मारी-मारी फिर रही है इसे रख लो, मैं क्या समझती थी कि तू मेरे लिए ही काल हो जाएगी? अच्छा तूने तो मेरा भण्डा फोड़ ही दिया अब ले तू भी क्या याद करेगी कि किसी से काम पड़ा था!!"

इतना कह फुर्ती से नरेंद्रसिंह की बगल से तलवार उठा ली और श्यामा के ऊपर चलाई मगर नरेंद्रसिंह ने झपट कर उसकी कलाई थाम ली और इतना उमेठा कि तलवार का कब्जा उसके हाथ से छूट गया इसके बाद एक लात ऐसी मारी कि वह दूर जाकर धम से गिर पड़ी और बड़े जोर से चिल्लाई।

केतकी के चिल्लाते ही पचासों सिपाही नंगी तलवारें हाथों में लिए हुए इस तरह आ पहुंचे मानो वे लोग सीढ़ी पर तैयार ही थे और केतकी की

आवाज की राह भर देख रहे थे।

इनको देखते ही नरेन्द्रसिंह ने झट तलवार उठा ली और देखने लगे कि ये लोग क्या करते हैं। उन सिपाहियों में से दस तो श्यामा और भामा की तरफ झुके और बाकी नरेन्द्रसिंह के अगल-बगल हो गए। जब श्यामा और भामा की मुश्कें कसी जाने लगीं तब श्यामा ने आँखों में आँसू भर कर नरेन्द्रसिंह की तरफ देखा और कहा "प्राणनाथ! अब तो मैं जाती हू, लेकिन आप रम्भा की खोज में दुःख न उठाइएगा, क्योंकि आपकी दासी वह कम्बख्त रम्भा मैं ही हूँ और प्यारी सखी तारा यही मेरे साथ है। मैं चाहती थी कि किसी अच्छे मौके पर अपना भेद खोलूँ मगर हाय विधाता, तैंने कुछ करने न दिया!"

इतना सुनते ही नरेन्द्रसिंह को जोश चढ़ आया। गरज कर जवाब दिया कि 'क्या मजाल है किसी की जो मेरे जीते जी रम्भा को सता सके! इतना कह उन दसों सिपाहियों पर टूट पड़े जो रम्भा और तारा (श्यामा और भामा) की मुश्कें बाँध कर उठा ले जाया चाहते थे। फुर्ती से दो आदमियों का सिर धड़ से अलग किया, इतने में सबके सब नरेन्द्रसिंह पर टूट पड़े।

इस समय नरेन्द्रसिंह की बहादुरी देखने लायक थी। जैसे शेर बकरियों के झुण्ड में उछलता हो वही हालत इनकी थी। इनके बदन में कई जख्म लगे मगर उन्होंने देखते देखते दस बारह आदमियों को काट के गिरा दिया जिससे कुल सिपाहियों के हौसले पस्त हो गए। मगर इतने ही में गिरी हुई एक तलवार उठा कर केतकी ने पीछे से नरेन्द्रसिंह की पीठ पर मारी जिसके साथ ही नरेन्द्रसिंह ने पीछे फिर के देखा। उसी वक्त एक सिपाही ने ऐसी तलवार इनके सिर में मारी कि यह ठहर न सके और चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़े।

१२

रम्भा के भाई अर्जुनसिंह क्या हुए? रम्भा और तारा गयाजी से यकायक इस शैतान की बच्ची केतकी के यहाँ कैसे आ पहुँची? नरेन्द्रसिंह की अब क्या गति होगी? बहादुरसिंह इस समय कहाँ और किस फिराक में हैं? बेचारी मोहनी और गुलाब कहाँ टक्कर मार रही हैं? रम्भा जब घर से निकल काशी जो रवाना हुई तो उसके घर में क्या धूम मची? नरेन्द्रसिंह के भाई जगजीतसिंह उनकी खोज में निकले थे वह कहाँ गए? इत्यादि बहुत-सी बातें जानने

के लिए इस समय पाठक उत्कंठित हो रहे होंगे इसलिए हम नरेन्द्रसिंह, रम्भा, तारा और केतकी को इसी दशा में छोड़ दूसरी तरफ झुकते हैं और पहले जगजीतसिंह की कथा सुनाते हैं।

जगजीतसिंह ने भाई की खोज में जाने के पहले ही बहादुरसिंह से सब हाल पूछ लिया था और उस तहखाने का भी पता मालूम कर लिया था जिसमें बहादुरसिंह कैद थे।

बहादुरसिंह से जुदा होकर जगजीतसिंह कई आदमियों को साथ लिए बन-देवी के मन्दिर में पहुंचे और माई का दर्शन कर बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहे। इसके बाद मन्दिर के बाहर आ अपनी मामूली पोशाक उतार दी और साधुओं के कपड़े जो घर से लेते आए थे पहन लिए। बदन में सिर से पैर तक विभूति मल ली, लंगोटा कस कर एक छोटी सी दुनाली पिस्तौल गोली भर कमर में छिपा ली और कुछ गोली-बारूद अलग भी रख ली। ऊपर से गेरुए रंग लम्बा लबादा पहिर हाथ में एक बड़ा-सा चिमटा ले लिया और अपने साथ दो बहादुरों को भी ऐसी ही सूरत बना उनकी कमर में भी एक-एक पिस्तौल और छुरी छिपा ऊपर से गेरुआ लम्बा अंगा पहिरा उनके हाथ में भी एक-एक भारी चिमटा दे दिया। सब सिर्फ इन्हीं दो आदमियों को साथ ले बाकी सभी को घर की तरफ लौटा पैदल वहां से रवाना हुए और पहिले उसी तहखाने की तरफ चले जिसमें बहादुरसिंह कैद था।

कुछ रात जा चुकी थी जब ये तीनों आदमी बनदेवी के मन्दिर से रवाना हुए। चन्द्रमा निकल आया था, उसकी सुन्दर चांदनी चारों तरफ फैल गई थी। आस्मान पर छोटे-छोटे बादल के टुकड़े मन्द मन्द हवा के झोकों से धीरे-धीरे दौड़ रहे थे। कभी थोड़ी देर के लिए चन्द्रमा बादलों में छिप जाता मगर तुरत ही उस टुकड़े के हट जाने से फिर निकल आता था।

एक पहर रात जाते-जाते ये तीनों आदमी उसी नाले के किनारे पहुंचे जहां बहादुरसिंह से मुलाकात हुई थी। जगजीतसिंह के दोनों साथियों का नाम जयसिंह और हरीसिंह था। ये दोनों बड़े बहादुर और लड़ाई के फन में यकता थे। नरेन्द्रसिंह के बाप उदयसिंह के दरबार में इन दोनों की अच्छी कदर थी और लड़ाई भिड़ाई के काम में इन दोनों से बराबर राय ली जाती थी। जय-सिंह की उम्र पचास वर्ष से ऊपर थी मगर हरीसिंह अभी पचीस वर्ष का दिलावर

होनहार बहादुर था।

जयसिंह ने कहा, "देखिए आसमान पर बदली गहरी होती जाती है, थोड़ा देर में पानी जरूर बरसेगा। ऐसे समय दूर का रास्ता पकड़ना मुनासिब नहीं है, पास ही आपकी शिकारगाह है, वहां चलिए। शिकार खेलने का तहखाना भी आज साफ है उसी में डेरा दें। अगर पानी बरसा तो रात उसी जगह काटेंगे नहीं तो चांदनी निकल आने पर उधर का रास्ता पकड़ेंगे जहां जाने का निश्चय कर चुके हैं।

जगजीतसिंह ने इस बात को पसन्द किया और रात उसी तहखाने में काटी। पानी भी सवेरे तक खूब बरसता रहा। दूसरे दिन सवेरे पानी खुलने पर ये लोग वहां से रवाना हुए। जगजीतसिंह ने सोचा कि पहिले उस ठिकाने चलना चाहिए जहां बहादुरसिंह कैद था जरूर कुछ न कुछ पता लग ही जाएगा।

जगजीतसिंह को इस बात का डर न था कि वहां डाकुओं की मण्डली भारी होगी और हम लोग कुल तीन ही आदमी हैं क्योंकि एक तो यह तीनों अपने साज सामान और ताकत के ऐसे पूरे थे कि दस बीस आदमियों को भगा देना इन लोगों के सामने कोई बड़ी बात न थी, दूसरे जगजीतसिंह अरहड़ा की तरह सिर्फ दो ही आदमी साथ लेकर नरेन्द्रसिंह की खोज में नहीं निकले थे बल्कि उन्होंने बहुत कुछ सामान अपने लिए करके तब घर से बाहर पैर निकाला था। उन्होंने और क्या सामान किया था इसके कहने की अभी कोई जरूरत नहीं समय पड़ने पर आप ही मालूम हो जाएगा।

रास्ते में कोई घटना नहीं हुई और चौथे दिन दोपहर को ये तीनों उस तहखाने के पास पहुँच गए जिसमें बहादुरसिंह कैद था।

इस जगह कोई इमारत न थी न कोई मकान ही था, कोई ऐसा निशान भी नहीं दिखाई देता था जिससे मालूम हो कि वहां जमीन के अन्दर कोई तहखाना है हां बहादुरसिंह ने तहखाने की पहचान जगजीतसिंह को बता दी थी इसलिए इनको मालूम हो गया कि यही वह तहखाना है जिसमें बहादुरसिंह कैद था।

इस जगह एक निहायत उम्दा बहुत बड़ा सगीन कुआं देखने में आया जिसकी कुर्सी जमीन से तीन हाथ ऊंची थी। कुए के ऊपर जाने के लिए चारों तरफ पत्थर की सीढ़ियां बनी हुई थीं।

हरी॰ यही वह कुआ मालूम होता है।

जगजीत॰ इसमे कोई शक नही कि यह वही कुआ है जिसे बहादुरसिंह ने तहखाने का दरवाजा कहा था। चारो तरफ की सीढियों को अच्छा तरह देखो, किसी सीढी के नीचे बगल मे दरवाजा होगा।

जय॰ (चारो तरफ देखकर और एक सीढी के पास खडे होकर) दरवाजा तो कोई नही है मगर यहाँ दरवाजा होने का एक निशान जरूर मालूम होता है, आप जरा इधर आइये और देखिए।

जगजीत॰ (जयसिंह के पास आकर और देखकर) क्या निशान है ?

जय॰ यह जमीन नम (गीली) मालूम होती है, मैं समझता हूँ डाकुओ ने यह जगह छोड दी और ईंट से यह दरवाजा बन्द कर चूना चढा बराबर कर दिया है। (चिमटे से खोद और एक ईंट निकाल कर) देखिए अब साफ मालूम होता है।

जगजीत॰ छोड दो, अब इसका खोदना व्यर्थ है।

जय॰ खोदना व्यर्थ न होगा, चाहे डाकुओ ने यह जगह छोड दी हो, मगर हाल चाल लेने के लिए कोई न कोई डाकू यहा जरूर आता होगा क्यो कि उन लोगो को भोलासिंह के फस जाने से बहुत कुछ डर पैदा हो गया होगा। मेरी राय है कि दरवाजा साफ कर दिया जाय और इसी कुए पर हम लोग डेरा डालें। जब डाकुओ म से कोई पता लगाने के लिए यहा आएगा इसको खुदा हुआ देख उसे जरूर शक होगा। उस समय हम लोग उसका सूरत और आकृति ही से पहिचान जाएगे कि यह डाकू है।

जगजीत॰ बात तो ठीक है अच्छा ऐसा ही करो।

हरीसिंह और जयसिंह ने मिल कर अपने बडे-बडे चिमटो से खोद कर वह दरवाजा साफ कर डाला। चौखट, किवाड और बन्द ताला भी निकल आया। यह दरवाजा बहुत बडा न था बल्कि ऐसा कि बिना अच्छी तरह झुके कोई उसके अन्दर नही जा सकता था। जयसिंह ने ताला तोड डाला।

जगजीत॰ चलो इसके अन्दर चल कर देखें कि क्या है ?

जय॰ ऐसा भूल के भी न कीजिएगा।

हरी॰ क्यो ?

जय॰ हम लोग इसके अन्दर चले जाए, उधर कोई डाकू यहा आवे और

शक करके बाहर का दरवाजा बन्द कर दे तो बस हम लोग इसी के अन्दर ही सड़ा करें। यह कोई बुद्धिमानी नहीं है।

जगजीत० यही सब सोचने के लिए तो तुम्हें साथ ले आए हैं।

हरी० अच्छा आप दोनों आदमी खड़े रहिए, मैं जाता हूँ।

जय० बिना रोशनी के भीतर जाकर क्या देखोगे? इस समय रहने दो फिर देखा जाएगा।

शाम हो गई। तीनों ने उस कुएं पर आसन जमाया और अच्छी तरह सलाह कर ली कि अब क्या करना चाहिए।

अभी अंधेरा नहीं हुआ था कि एक देहाती उस कुएं के पास पहुंचा और जगजीतसिंह को झुक कर सलाम करने के बाद हरीसिंह और जयसिंह को सलाम करके खड़ा हो गया।

जगजीत० कहो क्या हाल है? तुम्हारे और साथी सब कहां हैं?

देहाती सब इधर-उधर फैले हुए हैं जब किसी को कुछ हाल मिलेगा तब वह आपके हुक्म मुताबिक इसी कुएं पर पहुंचेगा।

जय० तुम्हें क्या कोई हाल मिला है जो यहां आए हो?

देहाती दो बातें मेरे देखने में आई हैं।

जय० वह क्या?

देहाती आप लोग तो चक्कर देते हुए इधर आए और मैं सीधा गयाजी चला गया। वहां से फल्गू पार हो पूरब की तरफ चला। लगभग तीन कोस जाने के बाद जंगल में एक भारी इमारत नजर आई मैं उसी तरफ मुड़ा और वहां पहुंच कर उसके इर्द गिर्द घूमने लगा।

जय० फिर?

देहाती जब रात हुई तो बहुत-से आदमी उस मकान से बाहर निकले और सीधे दक्खिन का रास्ता लिया। मैं भी चक्कर दे उस भीड़ में मिल गया। देखा कि वे लोग कई लाशों को उठाए लिए जा रहे हैं। मैंने सोचा कि बिना कारण एकदम इतने नहीं मर सकते, इस मकान के अन्दर जरूर कुछ न कुछ खून खराबा हुआ है। आखिर यही बात निकली। वे लोग आपस में धीरे धीरे बातें करते जा रहे थे। कुल बातें तो मेरी समझ में न आईं हां इतना मालूम हुआ कि उस मकान में जिसमें से वे लोग निकले थे गया के जमींदार उसी

हजारीसिंह की लड़की रहती है जिसने हाजियों की लड़ाई में आपके पिता को मदद दी थी और ये सब आदमी हमारे नरेन्द्रसिंह के हाथ से मरे हैं जिनकी लाशें वे लोग उठाए लिए जा रहे थे।

जय० खाली बातों से तुमने कैसे निश्चय कर लिया कि वे सब नरेन्द्र सिंह के हाथ से मरे थे?

देहाती जी हाँ, उन्ही में से एक बोल उठा, "आखिर नरेन्द्रसिंह बिहार के प्रतापी और बहादुर राजा उदयसिंह का पुत्र है, वह अगर मैदान पाता तो और भी कितनों ही की जान लेता!" यह सुन दूसरा बोला "नरेन्द्रसिंह का गिरफ्तार कर लेना भी केतकी के हक में ठीक न होगा, खर यहा तक तो नमक की शर्त अदा कर दी, अब ऐसे की नौकरी कभी न करूँगा!" इसके सिवाय और भी बहुत सी बातें सुनने में आई जिससे मुझे निश्चय हो गया कि वे सब नरेन्द्रसिंह के हाथ से मरे हैं, मगर इतनों को मारने के बाद आखीर में वे खुद भी गिरफ्तार हो गए।

जग० पिताजी को यह खबर कहला भेजनी चाहिए।

जय० कोई जरूरत नहीं मालूम होती।

देहाती ताज्जुब नहीं कि उन्हें यह खबर लग गई हो।

जय० मैं यही ख्याल करता हूँ, क्योंकि उनकी चाल और नीति भी बड़ी ही टेढी है।

जगजीत० अच्छा तो अब यहाँ ठहरना ठीक नहीं है।

जय० जी हा चलिए हम लोग भी उसी तरफ चलें। (देहाती की तरफ देख के) हरी, देखो हम तुम्हें दो-तीन काम सुपुर्द किए देते हैं, जहाँ तक हो उन्हें जल्दी करना।

हरी जो हुक्म।

जयसिंह ने देहाती को जिसका नाम हरी जासूस था, कई बातें समझाईं और इसके बाद तीनों आदमी वहा से उठ कर केतकी के मकान की तरफ रवाना हुए।

१३

अब हम फिर नरेन्द्रसिंह और केतकी का हाल लिखते हैं। जब उनको केतकी की शैतानी का हाल मालूम हुआ तब यह सोच कर कि गुलाब और मोहनी के दुःख का कारण यही है, उन्हें उसके ऊपर बहुत ही गुस्सा आया। उसी समय श्यामा और भामा की जुबानी रम्भा के प्रेम का हाल सुन उनकी और ही दशा हो गई और उस रम्भा से मिलने का शौक हद से ज्यादा पैदा हुआ। जब गिरफ्तार होती समय श्यामा ने कहा कि मैं ही रम्भा हूँ तब तो उनकी आंखों में खून उतर आया और अपनी जान से हाथ धो केतकी के आद मियों से लड़ गए, मगर क्या हो सकता था, यह अकेले और वे बहुत थे आखिर कई आदमियों को मार कर खुद भी गिरफ्तार हो गए।

हरामजादी केतकी नरेन्द्रसिंह, रम्भा और तारा के खून की प्यासी बन बैठी। उसने तीनों को कैद में डाल दिया मगर कई दिनों तक नरेन्द्रसिंह को समझाती और कहती रही कि मोहिनी, गुलाब और रम्भा का ध्यान छोड़ मेरे साथ शादी कर लो बल्कि मेरे सामने अपने हाथ से रंभा का सिर काट डालो तो तुम्हें कैद से छुट्टी मिल जाएगी, मगर नरेन्द्रसिंह इसे कब मंजूर करने लगे, जवाब में सिवाय चुप रहने के वे और कुछ भी न बोले। आखिर लाचार हो केतकी ने मन ही मन निश्चय कर लिया कि आज रात को अपने हाथ से नरेन्द्रसिंह, रंभा और तारा का सिर काट कलेजा ठण्डा करेगी।

यह केतकी लड़कपन ही की शैतान थी। इसी तरह इसने कई आदमियों को फंसा फंसा कर अपने हाथ से मार डाला था। इसने पहिले तो सोचा कि थोड़े दिन तक और भी नरेन्द्रसिंह को कैद रख कर समझावे-बुझावे। मगर यह खयाल करके कि यदि यह भेद राजकर्मचारियों को मालूम हो गया तो बड़ी मुश्किल होगी उसने ज्यादा दिनों तक इनको कैद रखने का हौसला न किया।

एक दिन चांदनी रात में वह छत पर बैठी बाग की बहार देख रही थी उसकी सखियां भी पास ही बैठी हुई थीं और नरेन्द्रसिंह की खूबसूरती पर रहम खा उन्हें छोड़ देने के लिए समझा रही थीं। मगर इस संगदिल का दिल नरम न हुआ और इसने झुंझला कर कैदी नरेन्द्रसिंह को हाजिर करने का हुक्म दिया।

यह मकान, जिसमे केतकी रहती थी शहर से बहुत दूर था। यहा से गया जी लगभग तीन चार कोस के हाथी, पास मे और कोई दूसरा शहर या कस्बा न था। इस मकान के चारो तरफ कोसो तक जगल ही-जगल था। यहाँ तक कि किसी आदमी के पहुँचने का बहुत कम मौका पडता, इसीलिए वह यहाँ बहुत ही स्वतन्त्रता से रह कर बेखौफ अपने दिन ऐयाशी मे बिताया करती थी।

नरेन्द्रसिंह केतकी के सामने लाये गये। उसने अपने हाथ म तलवार ले ली और उन्हें धमकाना शुरू किया। मगर उसी समय पूरब तरफ मे शोरगुल की आवाज आती सुन वह ठिठक गई और खडी होकर देखने लगी। मालूम हुआ कि सैकडो आदमी गरजते हुए इसके मकान की तरफ ही चले आ रहे है। देखते-ही-देखते उन सभो ने जो अन्दाज म पाँच सौ से कम न होगे पास पहुच कर चारो तरफ से इस मकान को घेर लिया।

केतकी के सिपाहियो ने इन्हें रोकना चाहा मगर ऐसा कब हो सकता था वे पचास से ज्यादा न थे और घेरा डालने वाले पाच सौ से भी ज्यादा आखिर आए हुए आदमियो के हुक्म से उन्ह फाटक से हट ही जाना पडा।

लगभग सौ आदमी नगी तलवारें लिए कोठी पर चढ गए। जो कुछ माल असबाब या हर्बा उस मकान म पाया सब लूट लिया, एक पैसे की जमा या छटाक भर लोहा उस मकान म न छोडा, यहा तक कि केतकी और उसकी सखियो के बदन से भी कुल जेवर उतार लिए और जाते समय रोती चिल्लाती रंभा और तारा को भी लेते गये, मगर रस्सियो से जकडे हुए नरेन्द्रसिंह को ज्यो का त्यों छोड गए। इन सभो के मुह पर नकाब पडी हुई थी इसलिए कुछ भी जान न पडा कि ये कौन थे, कहा से आए थे या केतकी के साथ इनकी कब की दुश्मनी थी।

१४

हम ऊपर लिख आये हैं कि केतकी के मकान पर बहुत-से आदमी चढ गए और सब-कुछ लूट लिया, यहाँ तक कि जाते समय रम्भा और तारा को भी लेते गये।

इन लुटेरो के पहुँचने और इस तरह की कारवाई करने से केतकी की अजीब हालत हो गई। जान बची इसी को उसने गनीमत समझा और वहीं

फिर वे लोग पहुच कर कुछ और दु ख न दें इस खौफ से वहा ठहर भी न सकी। नरेन्द्रसिह को उसी हालत मे छोड नीचे उतर आई और यह कहती हुई मकान के बाहर निकल गई कि 'जिसको मेरा साथ देना मन्जूर हो चला जावे, अब मैं इस मकान मे एक सायत भी नहीं टिक सकती।'

उसकी कुछ सखियो और दो चार सिपाहियो ने तो साथ दिया, बाकी सभी ने अपना अपना रास्ता लिया क्योकि इसकी चालचलन से सभी नाराज थे, मगर उन लोगो को लाचारी थी जिनको कल के लिए खाने का ठिकाना न था और तनखाह भी कम पाते थे, इस लिए ऐसो ही ने इसका साथ दिया।

अब सिर्फ नरेन्द्रसिह इस मकान मे रह गए सो भी इस हालत मे कि न कही जा सकते हैं और न कुछ कर सकते हैं क्योकि हाथ पैर कैदियो की तरह बधे हुए थे। चारों तरफ जगल के बीच मे यह मकान तो था ही तिस पर इस सन्नाटे ने और भी गजब किया ऊपर से रम्भा की जुदाई ने तो मौत की ही सूरत दिखा दी जो उनके (नरेन्द्र के) देखते देखते जबदस्ती माल असबाब की तरह उन लुटेरो के हाथ मे पड गई थी।

क्या वे लोग डाकू थे? नही, अगर डाकू होते तो सिर्फ माल असबाब से मत लब रखते, रम्भा और तारा को उठा ले जाने से वास्ता? शायद औरतो को भी उन्होंने माल ही समझा हो और उन्हें भी बेच कर रुपये वसूल करने की नीयत हो? नही नही, अगर ऐसा होता तो केतकी को क्यो छोड जाते? केतकी के सिवाय उसकी कई खूबसूरत सखिया भी तो इस मकान मे थी उनको भी ले जाते! बेशक रम्भा और तारा के ले जाने का कोई खास मतलब है। हाय, रम्भा के सच्चे प्रेम ने तो मुझे और भी दु ख मे डाल दिया। उस बेचारी ने मेरे लिए कितनी तकलीफें उठाई! बाप-माँ को छोडा, तनोबदन की सुध भुला दी, अपने देश और बाँधवो को लात मार मेरी खोज म चल खडी हुई! किसी तरह मुझ तक पहुची भी तो हाय किस्मत ने एक नया ही गुल दिखाया। आज उसकी मुसीबत का क्या कुछ ठिकाना होगा!!

इन्ही बातो को सोच-सोच कर नरेन्द्रसिह आँसू बहा रहे थे। थोडी-थोडी देर पर लम्बी सासो से कलेजा ठण्डा करना चाहते थे मगर क्या हो सकता था। ज्यो-ज्यो आसमान के तारे घसके जा रहे थे त्यो त्यो इनके जिगर की चिनगारियो मे भी चमक बढती जा रही थी, यहाँ तक कि सुबह की नम ठढी

और खुशबूदार हवा चलने लगी। आफत के मारे बेचारे नरेन्द्रसिंह के सर पर से अब तारों ने भी अपना साया हटा लिया और गम की फौज का लाल झण्डा पूरब तरफ के आसमान पर दिखाई देने लगा।

अभी सूर्य अच्छी तरह नहीं निकला था कि फिक्र के दरिया में गोते खाते हुए नरेन्द्रसिंह को किसी आने वाले के पैरों की आहट ने सहारा दिया। मुंह फेर कर देखा तो तीन साधुओं पर नजर पड़ी जिनमें एक की उम्र बहुत कम थी।

इस कम उम्र साधु ने दौड़कर नरेन्द्रसिंह के हाथ-पैर खोले और गले से लिपट कर रोने लगा। नरेन्द्रसिंह के आंसू भी न रुके क्योंकि खून ने जोश में आकर कह दिया कि यह तेरा छोटा भाई जगजीतसिंह है जो तेरी खोज में न मालूम कब से और कहां-कहां घूम रहा है। थोड़ी देर में दोनों अलग हुए और बातचीत होने लगी—

जग० भाई, आपने तो एकदम ही हम लोगों से मुंह फेर लिया!

नरेन्द्र क्या कहूं, अफसोस, बड़ी भूल हो गई!

जग० खैर अब घर चलिए।

नरेन्द्र अब हिम्मत और मर्दानगी के साथ साथ किसी की सच्ची मुहब्बत ने मुझे इस लायक ही नहीं रक्खा कि घर जाऊं। जब तक तुम मेरा हाल न सुन लो मेरे बारे में कुछ राय नहीं दे सकते।

जग० मैं वहां तक आपका हाल सुन चुका हूं जब बहादुरसिंह और दो औरतों को दरिया के किनारे छोड़ आप दूसरी नाव किराए करने चले गए थे। आगे का हाल मुझे कुछ नहीं मालूम।

नरेन्द्र यह हाल तुमसे किसने कहा?

जग० बहादुरसिंह ने।

नरेन्द्र क्या बहादुर घर पहुंच गया? तो वे दोनों औरतें भी उसके साथ होंगी?

जग० जी नहीं! वे दोनों औरतें और बहादुरसिंह डाकुओं की कैद में फंस गए थे। बहादुर तो निकल भागा मगर उन दोनों का हाल कुछ नहीं मालूम। अब आप घर चलें, किसी-न किसी तरह उन दोनों का भी मैं पता लगाऊंगा।

नरेन्द्र अगर सिर्फ उन्ही दोनों औरतो का खयाल रहता तो मैं बेशक तुम्हारे साथ चला चलता मगर मुझे तो उस सायत ने मार डाला जिस सायत मे मैं रन्ज हो कर घर से निकल भागा था। मै नही जानता था कि रम्भा पतिव्रता कहाने मे एक ही होगी।

जग० बेशक रम्भा ऐसी ही थी। आपके बारात से चले जाने के बाद उसके बाप ने दूसरे के साथ उसकी शादी करनी चाही मगर उसने मन्जूर न किया और जबदस्ती के खौफ से न मालूम कहा निकल भागी, अफसोस!

नरेन्द्र यही तो रन्ज है! रभा मेरे लिए घर से निकल भागी और मुझ से मिली भी, मगर किस्मत को कोई क्या करे!

इसके बाद नरेन्द्रसिंह ने अपना कुल हाल जगजीतसिंह से कहा जिसे सुन उन्हें भी जोश चढ आया और वे बडे गम्भीर भाव से बोले, "भाई, मैं जान गया कि बेचारी रम्भा पर जुल्म करने वाला कौन है। मुझे यह भी मालूम हो गया कि इस वक्त रम्भा कहाँ होगी। अब मै आपको यह न कहूँगा कि घर चलिए और न मै खुद ही घर जाऊगा जब तक रम्भा को दुष्टो के हाथ से न छुडा लूगा। क्या हमारी जिन्दगी रहते रम्भा को कोई दूसरा ले जायगा? मैं उसी दिन अपने को मर्द और दुनिया मे मुह दिखाने लायक समझूगा जिस दिन अपने घर मे रम्भा का 'भाभी' कह के पुकारूगा। अब आप उठिए और मेरे साथ चलिए, इस बारे मे जो कुछ मैं जानता या समझता हूँ रास्ते मे कहूँगा। आप यह न समझिये कि मैं सिर्फ (हाथ का इशारा करके) इन्ही दोनो जयसिंह और हरीसिंह को साथ ले कर घर से निकला हूँ। मैं अपने पूरे बन्दोबस्त मे हूँ और जो कुछ कर सकता हूँ या करूँगा वह आपसे कुछ छिपा न रहेगा।"

अपने छोटे भाई की यह बात सुन नरेन्द्रसिंह को बहुत ढाढस हुई और वे फौरन उठ खडे हुए।

इस बैठकी के मकान के साथ अस्तबल भी था जिसमे अच्छे-अच्छे कई घोडे मौजूद थे। नरेन्द्रसिंह, जगजीतसिंह, जयसिंह और हरीसिंह चारो आदमी घोडो पर सवार हुए और जगजीतसिंह की राय के मुताबिक तेजी के साथ एक तरफ रवाना हुए।

१५

पटने से पूरब सालिग्रामी नदी के उस पार किनारे ही पर हाजीपुर आबाद है। इस समय तो वह एक कस्बे की तरह मालूम होता है मगर हम जब का हाल लिख रहे हैं उस जमाने में यह एक छोटे से मगर खूबसूरत शहर की तरह रौनक पर था। इसी तरह गण्डक के किनारे ही एक छोटा मगर संगीन और मजबूत किला भी था जिसमें वहाँ के राजा दौलतसिंह रहा करते थे। पहिले वे हाजीपुर के नामी जमींदारों में थे मगर अपनी चालाकी और बहादुरी से अब वहाँ के राजा बन बैठे थे। इन्हीं के लड़के प्रतापसिंह से नरेंद्रसिंह के चले जाने बाद रंभा की शादी होने वाली थी जिसके खौफ से वह बेचारी अपने चचेरे भाई अर्जुनसिंह और तारा को साथ ले घर से बाहर निकल गई थी।

इन सब बातों को जगजीतसिंह जानते थे और इसीलिए इन्हें यकीन हो गया कि केतकी का मकान लूटकर रम्भा और तारा को ले जाने वाले बेशक राजा दौलतसिंह के ही आदमी होंगे। घोड़े पर सवार जाते-जाते रास्ते में जगजीतसिंह ने यह सब हाल मुख्तसर में नरेंद्रसिंह से कहा और अपना खयाल जाहिर किया।

नरेंद्र तुम्हारा खयाल बहुत ठीक है। मुझे भी विश्वास होता है कि यह काम सिवाय दौलतसिंह के दूसरे का नहीं, मगर ताज्जुब इस बात का है कि उसे पता कैसे लगा?

जग० किसी तरह मालूम हो गया होगा अपने जासूस चारों तरफ दौड़ा दिए होंगे। और फिर यह भी तो सोचिए कि सिवाय दौलतसिंह के इस तरफ ऐसा जबर्दस्त दूसरा और कौन है?

नरेंद्र बेशक यह उसी का काम है।

जग० इसीलिए हम लोग हाजीपुर की तरफ चल रहे हैं, अभी वे लोग बहुत दूर न गए होंगे।

चारों आदमी दोपहर तक बराबर घोड़ा फेंके चले गये। जब धूप बहुत तेज हुई वहीं ठहर कर सुस्ताने और घोड़ों को ठंडा करने का इरादा किया और चारों तरफ निगाह दौड़ा कर देखने लगे। सड़क के दाहिनी तरफ कुछ दूर पर आम की एक बाड़ी थी जिसमें बहुत से फौजी आदमी उतरे हुए थे। वह बाड़ी

पर चढे हुए इधर उधर घूम फिर भी रहे थे। पेडो म से छनकर ऊपर को तरफ उठते हुए धुएँ मे मालूम होता था कि वे सब रसोई बना रहे हैं। जगजीत-सिंह ने कहा, 'बेशक वे लोग इसी बाडी म उतरे हुए हैं जिनकी खोज मे हम चले आ रहे हैं।"

नरेन्द्र तुम तीनो आदमी साधुओ की सूरत बने हुए हुई हो, एक आदमी घोडा छोड कर चले जाओ और पता लगाओ।

जग० (हरीसिंह की तरफ देखकर) घोडा इसी जगह छोड दो और जाकर देखो वे ही लोग हैं या दूसरे ?

हरी० बहुत अच्छा।

सडक के किनारे पीपल का एक पेड था। तीनो आदमी उसके नीचे खडे हो गए। हरीसिंह ने अपना घोडा पेड के साथ बाँध दिया और बडा सा चिमटा हाथ म हिलाते हुए उस बाडी की तरफ चले गए। थोडी ही देर बाद लौट आकर वे बोले, "हाँ वे ही लोग है और दो डोलियाँ भी उनके साथ हैं जिनके अन्दर से रोने की आवाज आ रही है।"

नरेन्द्र (जयसिंह की तरफ देखकर) अब क्या इरादा है ?

जयसिंह बिना लडे भिडे काम चलेगा नही और हम लोगो के पास कोई हर्बा नही, तीन आदमियो के पास सिर्फ बडे बडे चिमटे हैं जिन्हें साधुओ का भेष बनाने के लिए रख छोडा है, और आपके पास वह भी नही। केतकी के मकान म इन लुटेरो ने कोई हर्बा छोडा ही नही जो साथ ले लेते, इसलिए अपना सामान दुरुस्त करने के लिए हमको एक दिन अर्थात कल तक और सब्र करना चाहिए।

नरेन्द्र कल तक क्या बन्दोबस्त कर सकोगे ?

जग० बन्दोबस्त होना कोई मुश्किल नहीं। हमने अपने बहुत-से फौजी आदमियो को निशान बता कर चारो तरफ फैला दिया है जिनम से थोडे-बहुत जरूर इकट्ठे हो सकते हैं।

नरेन्द्र अगर ऐसा है तो फिर तरद्दुद ही क्या है ?

जग० जयसिंह, तुम बस घोडा दौडाय चले जाओ और अपने सिपाहियो को बटोर लाओ। वह टीला यहा से बहुत दूर भी तो न होगा जहाँ एक अड्डा हमने कायम किया है।

जयसिंह तो भी आठ कोस से क्या कम होगा ! इसी खयाल से मैंने कहा था कि कल तक सब्र करना चाहिए। अब आप एक काम कीजिये । मैं तो यह सब बन्दोबस्त करने जाता हूँ और आप तीनो आदमी लुके छिपे इन लोगो के साथ-साथ चले जाइए । कल इन लोगो को पुनपुन नदी पार करनी होगी जो इनके रास्ते मे पडेगी । आजकल उस नदी म पानी ज्यादा है, बिना नाव के पार उतरना मुश्किल है, इसलिए ये लोग जरूर कल रात को वहाँ डेरा डालेंगे और सबेरा होने पर पार उतरेंगे । वहाँ सिर्फ एक ही नाव होगी, ये लोग जल्दी किसी तरह नही कर सकते ।

जग० बस ठीक है मैं समझ गया । तुम अपना बन्दोबस्त करके उसी जगह पहुँच जाओ, हम तीनो आदमी धीरे-धीरे चलते हैं । (हरीसिंह की तरफ देखकर) क्यो हरीसिंह, वे लोग कितने आदमी होंगे जिन्हे अभी तुम देखे आते हो ?

हरी० पाँच सौ के करीब होंगे ।

नरेन्द्र जयसिंह, अगर तुम्हे पचास आदमी भी मिलें तो तुम लेकर चले आओ ! देख लेना हम लोगों की एक-एक तलवार दस-दस का सिर काट के दम लेगी ।

जयसिंह इसमे क्या शक है !

जगजीत खैर जो भी मिलें ले आओ, यो तो हमारे और भी बहुत से आदमी फैले हुए हैं पर वक्त पर जो मिल जाय वही ठीक है ।

जयसिंह अच्छा तो मैं जाता हूँ ।

जग० जाओ ।

१६

*पुनपुन नदी के किनारे ही मैदान म यह लश्कर पडा हुआ है जिस पर नरेन्द्रसिंह और जगजीतसिंह आज छापा मारने वाले हैं । इस लश्कर को यहाँ पहुँचे अभी आधा घण्टा भर नही हुआ है इसलिए रात की पहिली अंधेरी छा जाने पर भी लश्करी आदमी निश्चिन्त नही है । सभी को खाने-पीने की फिक्र

* पुनपुन बाँकीपुर से चार कोस दक्खिन गयाजी के रास्ते पर की एक छोटी नदी है ।

पडी है कोई जमीन खोद कर चूल्हा बना रहा है, कोई इधर-उधर से सूखी मूखी लकडिया बटोर रहा है थोडे आदमी जलावन की फिक्र मे गाव की तरफ चले जा रहे हैं, कुछ आदमी बनिये की खोज मे दौड रहे हैं। इस जगह सिफ एक ठीकेदार मल्लाह की मडई पडी हुई है, बनिये की कोई दूकान नही, हल वाई का नामनिशान, नही खाने पीने की कोई चीज मिल नही सकती, नदी के पार कुछ दूर पर गाँव है उसी गाव मे खाने पीने का सामान मिलेगा इसलिए सभो को उस पार जाने की जल्दी पडी है। बरसात का मौसम होने के कारण इस बरसाती नदी मे पानी भी खूब आया हुआ है मगर सिवाय एक छोटी सी नाव के पार उतरने का कोई सहारा नही है इसलिए घाट पर एक मेला सा लगा हुआ है और कद कर लोग नाव पर पहिले चढने के लिए उतावले हो रहे हैं।

पाँच सौ आदमिया की भीड कुछ कम नही होती! इतने आदमिया के खाने पीने का सामान गाँव के दो एक बनियो से पूरा होना बहुत मुश्किल है इसलिए गाव मे भी हर तरफ हुज्जत हो रही है। जमीदार और किसाना के मकान पर लोग धूम मचा रहे है। "आटा हो आटा ही दे दो, चावल हो चावल ही दे दो, चना हो चना ही दे दो, जो चाहे दाम ले लो मगर दो नही दोगे तो हम जबदस्ती लूट लेंगे।" ऐसी ऐसी बातो को सुन-सुन कर जमीदार ठाकुर लोग भी बदहवास हो रहे है। जिससे जो बनता है देता है और हाथ जोडता है मगर कोलाहल किसी तरह कम नही होता।

दो घण्टे रात जाते-जाते तक इन पाँच सौ आदमियो मे से अपनी-अपनी फिक्र मे चार सौ आदमियो के लगभग पार उतर गये और आसपास के गाँव मे फल गये और सिफ एक सौ आदमी उन डोलियो का घेरे रह गये जिनमे बेचारी रम्भा और तारा अपने दु ख की घडियाँ गिन रही थी। इन लोगो के खाने पीने का सामान इनके सगी-साथी ले आवेंगे डोली की हिफाजत कम न होने पावे इसीलिए जरूरी समझ कर ये सौ आदमी छोड दिए गए हैं पर इस हुल्लड म यह कुछ भी मालूम नही होता कि इन पाँच सौ आदमियो का सर्दार कौन है।

क्या नरेन्द्रसिंह और जगजीतसिंह इसी सोच म थे कि इन पाँच सौ आदमिया म से अपनी-अपनी फिक्र मे बहुत से इधर उधर टल जायँ तो यकायक बचे हुए सिपाहिया पर छापा मारें? बेशक वे इसी फिक्र म थे। वह देखिए चालीससवारो

को साथ लिए दोनो भाई दक्खिन तरफ से घोडे फेंके चले आ रहे हैं जिन्होंने ग्गत की बात मे डोली के पास पहुच कर तलवारो को खून चटाना शुरू कर दिया।

बेसरोसामान निश्चित बठे हुए सौ आदमी ऐसी हालत मे भला क्या कर सकते थे ? आधी घडी मे आधे से ज्यादे मारे गए और बाकी बचे हुओ को सिवाय भागने के दूसरी बात न सूझी। देखते-देखते मदान साफ हो गया और सिर्फ वे दोनो डोलियाँ रह गई जिनके लिए इतना खून-खराबा मचाया गया था। डोलियो मे से दोनो औरतें बाहर निकाल ली गई, एक को नरेन्द्रसिंह ने अपने घोडे पर और दूसरी को जगजीतसिंह ने अपने घोडे पर बैठा लिया तथा जिधर से आये थे उधर ही को जाते हुए दिखाई देने लगे।

हमे इससे कोई मतलब नही कि इस खून खराबे के बाद उन लोगो की क्या दशा हुई और उन चार सौ फैले हुए आदमियो ने बटुर कर क्या किया या किस धुन मे लगे ? हमे तो इस समय रम्भा और तारा ही का हाल लिखने मे मजा आ रहा है, मगर अफसोस, कुछ दूर निकल जाने पर नरेन्द्रसिंह सिंह को मालूम हुआ कि इन दो औरतो म रम्भा नही है, एक तो तारा ह और दूसरी गुलाब।।

मगर हैं ! यह गुलाब कहा से आ पहुँची ! और रम्भा कहा चली गई ?

१७

अब हम अपने पाठको को एक घने जगल मे ले चल कर पत्ता का झोपडी मे फटे कपडे पहिरे और तमाम अग मे भस्म लगाये जलती हुई धूनी के पास उदास सर झुकाए बठी हुई एक योगिनी से मुलाकात कराते हैं। चाहे इसकी अवस्था कसी ही खराब क्यो न हो मगर फिर भी इसकी जवानी, खूबसूरती और अगों की सुडौली देखने वालों के दिल पर कुछ एसा असर करती है कि बिना घण्टो तक देखे जी नही मानता, योगिनी कहते कलेजा कापता है और सूरत देखते ही जी बेचैन होकर इस सोच मे डूब जाता है कि दुनिया से हाथ धो इस अवस्था म पहुँच कर भी यह अपनी आँखो से आँसुओ की धारा क्यो बहा रही है।

आसमान गहरे बादलो से घिरा हुआ है, पानी अच्छी तरह बरस रहा है, पछमा हवा के झपेटो ने पेड-पत्तो से बगावत मचा रक्खी है और उन्ही के कारण यह झोपडी भी जड-बुनियाद से उखड कर किसी दूसरी ही जगह जा

पड़ने को तयार है। यह मालूम ही नही होता कि सुबह है या शाम। झोपडी के अन्दर बठी सर्दी के मारे आग सेकती हुई उस बेचारी योगिनी के लिए यह समय और भी दुखदायी हो रहा है। वह रह-रह कर ऊँची सासें लेती और कभी कभी फट फूट कर रो देती है, मगर किसी तरह भी उसके जी की बेचनी नही होती।

अचानक इसी समय किसी मुसाफिर ने झुक कर झोपडी के अन्दर झाका जिसकी सूरत से साफ मालूम होता था कि इस आधी-पानी से दुखी होकर यह कोई आड की जगह ढूंढ रहा है।

योगिनी कौन है ? चले आओ कोई हर्ज नही, क्यो पानी मे जान दे रहे हो यह तो उस गरीबिन की कुटी है जो दिन रात दूसरों के ही हित का ध्यान रखती है।

मुसाफिर हा भाई आता हूँ, आपकी कृपा से जान बच जायगी नही तो इस तूफान ने तो बस मार ही डाला है।

मुसाफिर झोपडी मे आकर बठ गया बल्कि दो चार दम लेकर बदहवास की तरह आग के पास लेट गया, मगर वह योगिनी इस तरह उसकी तरफ देखने लगी जस उस पहचानती हो। इस मुसाफिर के कपडो पर कई जगह खून के दाग थ और चेहरे पर के दो चार निशान यह भी कहे देते थे कि आज ही कल म इसने गहरी तलवार की चोट खाई है। घटे भर बाद उसका जी ठिकाने हुआ और वह उठ बठा। योगिनी ने उससे बातचीत शुरू कर दी।

योगिनी क्या किसी डाकू का मुकाबला हो गया था ? ये जख्म कसे लगे ?

मुसा० जी, एक बहादुर के हाथ से मेरी तरह कई सिपाही जख्मी हुए।

योगिनी० वह कौन बहादुर था ?

मुसा० नरेन्द्रसिंह।

नरेन्द्रसिंह का नाम सुन योगिनी ने एक लम्बी सास ली और सिर नीचा कर लिया। थोडी देर बाद कुछ सोच कर उसने पूछा, 'तुम लोगो को नरेन्द्रसिंह से लडने की क्या जरूरत आ पडी ?"

मुसाफिर हम लोगो को उनसे लडने की कोई जरूरत न थी, मालिक ने उन्हे गिरफ्तार करने का हुक्म दिया था इसी से उनसे लडना पडा, मगर वह बहादुर यकायक क्यो हाथ आने वाला था !!

योगिनी तुम तो केतकी के नौकर हो न ?

मुसा० (चौंक कर) जी हाँ, लेकिन आप केतकी को क्योंकर पहिचानती हैं ?

योगिनी मैं कई दफे घूमती फिरती ऐशमहल* तक पहुँच चुकी हूँ। मुझे खूब याद है कि वहाँ तुम्हे पहरा देते देखा था।

मुसा० (गौर से कुछ देर तक योगिनी की सूरत देखकर और पैरो पर गिर कर) वाह वाह क्या खूब, क्या मैं ऐसा अन्धा हूँ कि इतने पर भी अपने मालिक को न पहिचान सकूगा ? बेशक आपका नाम मोहनी है ! लेकिन इतने दिनो तक आप कहाँ थी ? केतकी ने तो हौरा उडा दिया था कि रात के समय मोहनी और गुलाब चुपचाप न मालूम कहाँ निकल भागी !

मोहिनी केतकी तो मेरी जान की दुश्मन हो चुकी थी और मुझे मार डालने मे भी उसने कोई कसर न छोडी थी मगर उसी बचारे नरेन्द्रसिंह की बदौलत मेरी जान बची जिसके हाथ से तुम जख्मी हुए हो। खैर अपना खुलासा हाल मैं फिर किसी समय कहूगी, इस समय तो तुम यह बताओ कि नरेन्द्रसिंह केतकी के मकान पर कैसे पहुचे और केतकी को उनसे दुश्मनी क्या पदा हुई। जसी वह कुचाल है उस हिसाब से तो बल्कि उसे खुश होना चाहिए था फिर ऐसी नौबत क्यो आ पहुँची ?

मोहनी देखो लालसिंह, हमारे यहा तुम सब सिपाहियो मे जमादार और अफसर थे, हमारे पिता तुम्हें कितना मानते थे इसे तुम भूल न गए होगे। तुम खूब जानते हो कि केतकी कितनी खराब औरत है बाप का नाम उसन मिट्टी मे मिला दिया और मुझको तथा गुलाब को अपने हिसाब मार ही डाला। मुझको अब उसकी कुछ भी मुहब्बत नही है बल्कि जहा तक मैं समझती हूँ तुम भी उसे बुरा ही समझते होगे।

लालसिंह बेशक मैं उसे बहुत बुरा समझता हू मुझे नरक मे रहना कबूल है मगर उसके साथ रहना मन्जूर नही।

*"ऐशमहल" उसी आलीशान मकान का नाम था जिसमे नरेन्द्रसिंह और केतकी की मुलाकात हुई थी या जहाँ रम्भा और तारा उनसे मिली थी।

मोहिनी ठीक है, तब मैं यह भी उम्मीद करती हूं कि तुमको उसका जो कुछ हाल मालूम है साफ-साफ कह दोगे और मैं जो उस हरामजादी से अपना बदला लिया चाहती हूं उसमे मेरा साथ ही नही दोगे बल्कि मेरी मदद करोगे।

लालसिंह मैं हर हालत मे आपका साथ दूंगा और जो कुछ हाल केतकी का मुझे मालूम है कुछ भी न छिपाऊँगा।

मोहिनी अच्छा तो फिर कहो कि नरेन्द्रसिंह और केतकी म तकरार होने की नौबत क्यो आ गई ?

लालसिंह नरेन्द्रसिंह तुमको खोजते हुए अकस्मात ऐशमहल तक जा पहुँचे और केतकी को देख उन्हें धोखा हुआ कि यह मोहनी है शायद तकलीफ के सबब से उसकी सूरत इतनी बदल गई है। उस समय केतकी मैदान म टहल रही थी, नरेन्द्रसिंह बेधड़क उसके पास चले गए और 'मोहनी' कह कर पुकारा।

मोहनी केतकी के तो मन की भई होगी !

लाल० जी हाँ, बातचीत होने पर उसने भी अपने को मोहनी ही बतलाया और जाल फैलाने मे कोई बात उठा न रक्खी।

मोहनी फिर क्या हुआ ?

लाल० इस बात के कुछ ही दिन पहिले घमती फिरती दो कमसिन और खूबसूरत औरतें भी वहा आ पहुची थी जिनको केतकी ने अपनी सखियो म भरती कर लिया था।

मोहनी वे कौन थी ?

लाल० हाँ सुनिए मैं सब हाल कहता हू। वे दोनो औरत नरेन्द्रसिंह की खूब खिदमत करने लगी। केतकी का और तुम्हारा हाल हम लोगो ने मिल-जुल कर उन दोनो ने अच्छी तरह मालूम कर लिया था।

मोहनी तब तो उन्होने जरूर नरेन्द्रसिंह को भड़काया होगा ?

लाल० हाँ ऐसा ही हुआ। उन दोनो ने जिनका नाम श्यामा और भामा था, केतकी का, आपका और साथ ही अपना हाल ठीक-ठीक नरेन्द्रसिंह को कह सुनाया जिसे केतकी ने छिप कर अच्छी तरह सुन लिया बल्कि धीरे-धीरे हम लोगो को भी मालूम हो गया।

मोहनी तभी केतकी बिगड़ी !

लाल० जी हाँ, मगर एक बात और भी हुई।

मोहनी वह क्या ?

लाल० आपको यह तो मालूम ही होगा कि नरेन्द्रसिंह अपने घर से क्यों निकल भागे थे ?

मोहनी बिल्कुल नहीं। उनसे बातचीत करने की तो नौबत भी नहीं आई और हम लोग अलग हो गए।

लालसिंह मैं नरेन्द्रसिंह को पहिले से पहिचानता था और थोड़ा बहुत उनका हाल भी जानता था क्योंकि तुम्हारे बाप की जिन्दगी में कई दफे उनके घर जाने की नौबत पहुँची थी, मगर बेतकी के खोफ से कुछ बोल न सकता था।

मोहनी तब तो और भी खुलासा हाल मुझे मालूम होगा।

लाल० सुनिये मैं सब कहता हूँ। नरेन्द्र बिहार के राजा उदयसिंह के लड़के हैं। उनकी शादी पटने के नामी जमींदार गुलाबसिंह की लड़की रम्भा से पक्की हुई, मगर नरेन्द्रसिंह कहते थे कि मैं जन्म भर शादी न करूँगा। खैर, उन्होंने चाहे जो कुछ भी कहा सुना हो पर उनके बाप ने उनकी एक न सुनी और शादी ठीक हो गई। तिलक चढ़ गया और बारात दर्वाजे पर जा पहुँची, उस समय नरेन्द्रसिंह को मौका मिला और वे घोड़ा भगा किसी तरफ को निकल गए।

मोहनी वाह वाह ! अच्छा तब ?

लाल० आखिर रोते-कलपते सब लोग लौट आये। उसके बाद गुलाबसिंह ने दूसरी जगह रम्भा की शादी ठीक की, मगर यह बात रम्भा को मंजूर न हुई। लोगों ने बहुत-कुछ समझाया-बुझाया यहाँ तक कहा कि नरेन्द्रसिंह लगड़े हैं, बदसूरत हैं, बदमाश हैं, दूसरी शादी कर लेने में कोई हर्ज नहीं, मगर उसने एक न मानी। बोली, "अधे, लगड़े-लूले चाहे जैसे भी हों मगर मेरे पति तो हो चुके।"

मोहनी शाबाश, खूब किया !

लाल० रम्भा ने जब देखा कि अब उसके साथ जबरदस्ती की जायगी तो अपनी सखी तारा को साथ ले घर से निकल भागी।

मोहनी वाह रे हौसला ! धर्म का ध्यान इसे कहते हैं ! मगर खैर आगे कहो।

लाल० घूमती फिरती वे दोनो केतकी के यहाँ आ पहुँची, उन्होने अपना नाम श्यामा और भामा बतलाया, और मौका पाकर उन्होने नरेन्द्रसिंह से सब हाल कहा।

मोहनी (रग बदल कर) गजब हो गया, तब कोई आशा रखना नादानी है! खैर तब ?

लाल० केतकी ने जब देखा कि उसका पर्दा खुल गया बस बिगड बैठी। नरेन्द्रसिंह, रम्भा और तारा को पकडने का हुक्म दिया, मगर नरेन्द्रसिंह यकायक क्या हाथ आने लगे थे! हम लोगो को जख्मी होना पडा। अन्त मे धोखा देकर पीछे से उन पर वार किया गया तब गिरे।

मोहनी (चौक कर) क्या मर गये ?

लाल० नही नही, दो ही रोज मे सम्हल गए, मगर कैद मे डाल दिए गये। इसके कई दिन बाद न मालूम कहाँ से चार पाँच सौ आदमी ऐशमहल पर चढ आये और अच्छी तरह उस घर को लूटा, बल्कि जाती समय रम्भा और तारा को भी पकड कर लेते गए। यह हाल देख हम लोगो ने भी केतकी का साथ छोड दिया और वह नरेन्द्रसिंह को हाथ-पैर बधा उसी मकान मे छोड सखियो को साथ ले डरती काँपती गया जी की तरफ भाग गई।

यह सब हाल सुन थोडी देर तक मोहिनी चुप रही और बडे सोच मे डूब गई। उसका रग दम दम मे बदलता रहा, मगर धीरे धीरे गुस्से की निशानी उसके चेहरे पर आने लगी बल्कि थोडी देर मे उसका तमाम बदन क्रोध से काँपने लगा।

पानी बरसना बन्द हो गया था, हवा ठहर गई थी। मोहनी ने लालसिंह से कहा 'मुझे प्यास लगी है, पीने के लिए साफ पानी कही से लाओ।" लालसिंह के पास लोटा डोरी मौजूद थी, वह पानी लाने के लिए कुटी के बाहर हो एक तरफ को रवाना हुआ।

जब मोहनी अकेली रह गई तब आप ही आप सोचने और धीरे धीरे बुदबुदाने लगी—"बेशक रम्भा ने बडा काम किया! इतना जानकर भी बहादुर नरेन्द्रसिंह उसे किसी तरह नही छोड सकते है अगर छोडें तो उनसे बढकर बेमुरौवत कोई भी नही! मगर मैं अब किसका पल्ला पकडूँ? क्या मैं नरेन्द्रसिंह को जी से भुला दूँ? नही नही, मुझसे कभी न होगा। तो क्या रम्भा

की सौत बन कर रहूँ ? कभी नहीं, मुझसे सौत का मुँह न देखा जाएगा ! और इसमे भी शक नहीं कि नरेन्द्रसिंह रम्भा से जरूर शादी करेंगे। तब फिर मेरी क्या दशा होगी, सिवाय मरने के दूसरी बात नहीं सूझती ! मगर वाह मरने क्यों लगी ! अभी तो मुझे केतकी से बदला लेना है ! तो फिर लगे हाथ रम्भा की भी सफाई क्यों न कर डालूँ ? बेशक ऐसा ही करूँगी, अब तो वह मेरी सौत हो चुकी न मुझसे सौत के साथ रहा जाएगा और न नरेन्द्रसिंह का ध्यान भूलेगा तब जरूरी है कि मैं अपनी आदत बदल दूँ ! हाँ हाँ, मैं ऐसा ही करूँगी ! अपना काम साधती समय कहीं मेरा कोमल कलेजा दहल न जाय, इसका बन्दोबस्त क्या ? बस यही कि जो कुछ करना है उसके लिए कसम खा लूँ। (आग की तरफ हाथ उठा कर) हे अग्निदेवता ! तुम साक्षी रहना, मैं कसम खाती हूँ कि आज से अपनी आदत बदल दूँगी अच्छी से बुरी हो जाऊँगी, नेक से बद बनूँगी औरत से मर्द बनने की कोशिश करूँगी, सूधापन बिल्कुल छोड दूँगी, अपने मोम ऐसे दिल को पत्थर बना डालूँगी, एक चिउँटी को तकलीफ देते जी हिचकता था पर अब खूबसूरत से खूबसूरत आदमी का सर काटते न हिचकूँगी, चाहे वह मर्द हो या औरत। जितनी मैं नेक थी उतनी ही बद बनूँगी जो काम न कर सकती थी उसे बेधडक करूँगी, कुल-धर्म-मर्यादा को एकदम तिलांजली दे दूँगी, मगर जाहिर में अपनी हालत न बदलूँगी, देखने मे सूधी, नेक और धर्मात्मा ही बनी रहूँगी, पर अन्दर में [illegible] और गुस्सेवर नागिन की तरह रहूँगी। चाहे जो हो पर अपना [illegible] कुछ भी न उठा रखूँगी, हाँ मैं ऐसी तभी तक बनी रहूँगी [illegible] और रम्भा का नाम निशान इस दुनिया से न उठा [illegible] के मर। पर नरेन्द्रसिंह की हालत मेरे लायक न रहेगी [illegible] पहुँचाऊँगी और उस समय नेक और पतिव्रता बन [illegible]।

ऐसी कसम खाते-खाते मोहनी [illegible], [illegible] का रंग गुल हो गया, गुस्से से थरथर काँपने [illegible] अपने को सम्भाला और कुटी के बाहर [illegible], [illegible] सदी। थोडी ही देर मे [illegible], [illegible] पानी पी कर [illegible] हाथ धोया और वृद्ध [illegible] आशीर्वाद [illegible] लालसिंह, तो तुम [illegible]

लाल० जी जान से मैं आपका खिदमत करने को तैयार हूँ । आपको मैंने गोद मे खिलाया है, आपकी नेकचलनी मेरे दिल मे बैठी हुई है, ऐसा मालिक भला मैं कहाँ पाऊँगा ?

मोहनी अच्छा तो फिर एक काम करो। इस समय ऐशमहल जरूर सुन सान पडा होगा मैं उसी मे चल कर डेरा डालती हूँ । तुम मुझे पहुँचाकर उन उन सब आदमियो को बटोर लाओ जो हमारे पुराने नौकर हैं और जिन्हें केतकी ने निकाल दिया है । इसके बाद मैं केतकी से समझ लूगी । यह न समझना कि मेरे पास दौलत नही है इस हालत म भी मैं एक बडे खजाने की मालिक हूँ जिसका हाल किसी को भी मालूम नही है ।

लाल० आप इस बात का तरद्दुद न करें मैं, अपने पास से लाकर बर्षों तक आपकी खिदमत कर सकता हूँ, बस अब आप यहाँ से चलें ।

मोहनी चलो मैं तैयार हूँ ।

१८

कई दिनो के बाद आज ऐशमहल को हम फिर रौनक पर देखते हैं । पहिले की तरह कई सिपाही पहरे पर मुस्तद हैं, बाग भी रौनक पर है और दस-बीस लौंडियाँ भी इधर-उधर घूम रही हैं ।

मकान के अन्दर कमरे मे मसनद के ऊपर मोहनी बैठी कुछ सोच रही है। कोई दूसरी औरत उसके पास नही है । शाम हो गई, लौंडियों ने रोशनी का इन्तजाम किया और हुक्म पा कर फिर इधर-उधर फल गई । मगर न जाने क्या-क्या सोचती हुई मोहनी अकेली ही बैठी रह गई ।

यकायक ही वह उठी और यह कहती हुई नीचे उतर आई कि "आज जरूर उस खजाने को देखूगी जो मेरी माँ खास मेरे वास्ते छोड गई है ।"

नीचे उतर कर मोहनी ने कुल दर्वाजे अन्दर से बन्द कर लिए जिसमे कोई आकर यह न देख ले कि वह क्या कर रही है । इसके बाद वह एक छोटे कमरे मे पहुँची जो अच्छी तरह सजा हुआ था और जहाँ रोशनी खूब हो रही थी । उत्तर तरफ दीवार म पाँच अलमारियाँ बनी हुई थी, उसने बिचली अलमारी खोली जिसमे दस-पाँच तलवार-खजर और कटार आदि रक्खे हुए थे । एक कटार उठा लिया और दक्खिन पूरब के कोने मे पहुची । फर्श उठा कर कटार

से जमीन खोदना शुरू किया। जब लगभग दो हाथ के जमीन खुद चुकी, एक छोटी-सी डिब्बिया हाथ मे आई जिसे देखते ही वह खुशी के मारे उछल पड़ी और बोली, "शुक्र है कि मेरी दौलत अभी तक ज्यों की त्यो रखी है, किसी ने भी हाथ नही लगाया।" मोहनी ने डिब्बिया ले ली और गढ्ढे में मिट्टी भर जमीन बराबर कर ऊपर से फर्श जैसा था उसी तरह बिछा दिया। इस काम से छुट्टी पा उसने चारों तरफ के दर्वाजे खोल दिए और ऊपर के कमरे मे चली आई जहाँ वह पहिले बैठी हुई थी। गद्दी पर बैठ कर शमादान के सामने डिब्बी खोली जिसमे सोने की एक अंगुल की एक विचित्र चाभी रखी हुई थी। मोहनी ने चाभी निकाल कर चूम ली और धीरे से बोली, 'आज आधी रात को मैं अपनी जमा-पूजी अच्छी तरह सहेज लूंगी।" थोडी देर बाद मोहनी ने भोजन किया और निश्चित होकर सो रही मगर लौंडियो को हुक्म दे दिया कि आज इस मकान मे मैं अकेली ही सोऊँगी, मकान के बाहर बहुत-सी कोठडियाँ और दालान हैं, तुम लोग उसी मे जाकर आराम करो।

आधी रात का सन्नाटा होने पर मोहनी उठी और नीचे उतर कर फिर उसी कमरे में पहुची जिसमे से जमीन खोद कर डिब्बी निकाली थी। चारो तरफ के दर्वाजे बन्द करने बाद उसने पुन वही अलमारी खोली जिसमे से जमीन खोदने के लिए कटार निकाला था।

यह अलमारी खूब लम्बी-चौडी थी यहाँ तक कि इसके अन्दर दो आदमी बखूबी खडे हो सकते थे। मोहनी ने धीरे धीरे उस आलमारी को खाली किया जिसमें असबाब रखने के लिए तीन दर्जे बने हुए थे। नीचे वाले दर्जे की जमीन भी लकडी की और ऐसी साफ बनी हुई थी कि यह गुमान भी नही हो सकता था कि यह नीचे से पोली होगी। इस लकडी पर पीतल के बहुत से फूल-बूटे पच्चीकारी के काम के बने हुए थे जिनमे चारों तरफ चार कमल के फूल बने हुए थे। इनमे से एक फूल को मोहनी ने अगूठे से दबाया, साथ ही एक पीतल का टुकडा ऊँचा हो गया और उसके नीचे ताली लगाने की जगह दिखाई देने लगी। उसने वहाँ ताली लगाकर घुमाया। वह लकडी का तख्ता कुछ ऊपर उठ आया जिसे मोहनी ने निकाल कर अलग कर दिया। अब नीचे एक तह-खाना नजर आया जिसमे उतरने के लिए सीढियाँ बनी हुई थी। हाथ मे लालटेन लिए हुए मोहनी आलमारी मे घुस गई और उसी जीने की राह नीचे

उतर गई।

नीचे बीस हाथ लम्बी और इतनी ही चौडी एक कोठडी नजर आई जिस के अन्दर वह पहुची। यहाँ बीचाबीच म चादी का एक पलग था जिस पर दुशाला ओढे कोई आदमी सोया हुआ मालूम पडा। चारो तरफ बडे-बडे चाँदी के देग सरपोश से ढवे हुए नजर आ रह थे।

मोहनी ने पहिले उन बडे बडे देगो को एक एक करके सरपोश उठा कर देखा। अशर्फियो से भरा पाया। इसके बाद पलग के पास आई और उस सोये हुए आदमी को देखने के लिए उसके बदन पर से दुशाला हटाया।

यह एक लाश थी जिसके बदन पर चमडे और गोश्त का नाम निशान न था, सिफ हडडी का ढाचा सिर से पैर तक दुरुस्त रखा हुआ था।

इसे देख मोहिनी घण्टो तक खडी रोती रही। आखिर उसी तरह दुशाले से उसे ढाँप दिया और एक देग मे से थोडी-सी अशर्फियाँ ले उस तहखाने मे से बाहर निकल आई। आलमारी वगरह को जसा पहले था उसी तरह दुरुस्त कर दिया और ऊपर चली गई।

१६

आज हाजीपुर म खूब धूमधाम मची हुई है। जगह जगह बाजे बज रहे हैं। हर एक आदमी खुश और हसता हुआ दिखाई दे रहा है। बाजारो म दूकानदारो न दूकानें सज-सजा कर दुरुस्त कर रखी हैं। राजकमचारी चारो तरफ दौडते हुए दिखाई पड रहे हैं। इन्ही मे अगल-बगल निगाह दौडाते सुख पोशाक पहिरे बगल मे झोला लटकाये और हाथ मे भग घोटने का डण्डा लिए हमारे रगीले जवान बहादुरसिंह भी धीरे धीरे मस्तानी चाल से चलते दिखाई पड रहे है। हाजीपुर की धूम धाम देख ये ताज्जुब कर रहे हैं और इनकी अनोखी चाल और सूरत देख बाजारी लोग भी मुस्करा रहे हैं। बहादुरसिंह दूकानो की सर करते हुए एक दफे पूरब से पश्चिम जाते हैं और फिर पश्चिम से पूरब लौटते हैं।

शामत की मार कोई भला आदमी इनसे पूछ बठा कि—' क्यो साहब, आप किसे ढूढ रहे हैं!" बस इतना पूछना था कि आप भुझला उठे और बोले, "वाह इसी अकिल पर दूकानदारी करते हो और कहते हो कि हम

आदमी हैं! मेरी सूरत से भी नही पहिचानते कि मैं घूम घूम कर बाजार देख रहा हू या किसी को ढूढ रहा हू ! विजया देवी ने दोनो आँखें दे रक्खी हैं, बस शेखी मे ऐंठे जा रहे हैं ! मेरी तरह से एक आँख जर्राह ने बनाई होती तो दुनिया की कदर जानते और समझते कि इस बेचारे के पास एक ही आँख की तो पूजी ठहरी, एक दफे इधर से उधर जाता है तो एक ही तरफ की दुकानें दीख पड़ती हैं, दूसरी तरफ की दूकानो पर नजर डालने के लिए लाचार बेचारे को फिर लौटना पड़ता है। वाह वाह वाह ! क्या इस शहर मे ऐसे ऐसे ही बुद्धिमान बसते हैं ! मगर क्यो न बसें ! इतनी दूर घूमे मगर अभी तक भग की दूकान एक भी नजर न आई, हमारे मुल्क मे अब तक एक हजार एक सौ एक दूकानें भग की दिखाई दे गई होती !"

बहादुरसिंह की बातें ऐसी न थीं कि कोई रञ्ज होता। इधर-उधर के कई आदमी इनकी बात सुन हस पड़े और एक खुशदिल बजाज खुश हो अपनी दूकान से उतर इनके पास आकर बोला "आइए आइये, आप मेरी दूकान पर बैठिये, बड़े भागो से आप ऐसे सत्पुरुषो के दर्शन होते हैं !!"

बहादुर बस रहने दीजिए, मैं ऐसे आदमी के पास नही बैठता जो भग न पीता हो !

बजाज यह आप भला कैसे जानते हैं कि मैं भग नही पीता ? अजी मैं तो इतनी भग पीता हू कि आप भी न पीते होंगे। दुनिया मे भग से बढकर भी भला कोई चीज है ?

बस इतना सुनते ही बहादुरसिंह खुश हो गये और उसकी दूकान पर आ डटे।

बजाज से अब हुक्म कीजिए तो मैं भग बनाऊँ ?

बहादुर० नहीं नही, इस समय तो मैं सिद्धी पी चुका हू, अब सन्ध्या को दोहरया छनेगी। (कमर से एक रुपया निकाल और बजाज की तरफ फेंक कर) बस एक रुपये का गुलाब जामुन मगवाइए तो मैं खाऊ, बड़े जोर की भूख लगी है।

बजाज अजी इस रुपये को रहने दीजिए, मैं आपके लिए अभी खाने को मगवाता हूँ।

बहादुर (दोनो हाथ हिलाकर) नही-नहीं, ऐसा कीजिएगा तो मैं भाग

जाऊँगा, आपको भग ही की भारी कसम है जो इस बारे मे फिर बोलिए, बस इसी रुपये का मगवाइये !

बजाज अच्छा अच्छा, आप इतनी बडी कसम न दीजिए, मैं इसी रुपये का मगाता हू बल्कि खुद जा कर लाता हूँ, हाँ यह तो कहिए कि एक रुपये का मँगा कर क्या कीजियेगा ?

बहादुर० (चमक कर) अजी तो क्या एक रुपये का मन दो मन मिल जाएगा ! हम और तुम दो आदमी खाने वाले भी तो है !

बजाज नही मैं न खाऊँगा, अभी रसोई जेंव चुका हूँ एक रुपये का पाँच सेर गुलाबजामुन मिलेगा।

बहादुर० (ताज्जुब से) बस ! कुल पाँच सेर ! यहाँ बडा महगा सौदा मिलता है !! खैर आप न खाइये मैं ही कुछ जलपान करके रह जाऊँगा, पाँच सेर से होता ही क्या है ?

बहादुरसिंह की यह बात सुनकर बजाज हैरान हो गया कि यह बित्ते भर का आदमी कहता है कि पाँच सेर से होता क्या है! खर लाओ तो सही देखें क्योंकर खाता है। बजाज जरा खुशदिल और दिल्लगीबाज था। अपने नौकर को हलवाई की दुकान पर भेजा। वह दौडा हुआ गया और पाँच सेर गुलाबजामुन एक छितनी मे लाकर बहादुरसिंह के सामने रखता हुआ बोला "पानी एक घड़ा लाऊँ या दो घडा ?"

नौकर की इस बात को सुनकर बजाज भी हस पडा। बहादुरसिंह ने कहा, "अजी नही, बस आध पाव जल पीने के लिए और सेर भर हाथ धोने के लिए। जल ही पीकर पेट भर लेंगे तो खायेंगे क्या ?"

अब बहादुरसिंह सामने पत्ता रख गुलाबजामुन छीलने लगे। पाँच सेर गुलाबजामुन को छीलछाल के कुल एक छटाँक भर भीतर का गूदा निकाला और उसे खा पानी पी नौकर को हाथ धुलाने का इशारा किया।

बजाज बस खा चुके ! और इतना मुफ्त मे बर्बाद किया।

बहा० और नही तो क्या तुम चाहते हो कि छिलके समेत खा जाता और पेट में दद होता तो परदेश में वैद्य ढूढता फिरता ! वाह जी वाह, अच्छी सलाह देने लगे ! (नौकर की तरफ देखकर) इसे लेजा कर किसी बल के आगे डाल दे।

बजाज क्या आप रोज इसी तरह खाते हैं !

बहादुर नही तो क्या साल मे एक ही दिन खाते हैं !

बजाज ऐसे तो आपके खाने मे बहुत खर्च पडता होगा।

बहादुर० अजी हजारो रुपये महीने का भोजन करता हूँ, इसके इलावे भग बूटी का खर्च कहाँ तक बताऊँ। सच पूछिये तो मैं राजे महाराजो की तहसील खा जाता हूँ। मेरा पालना कुछ हसी ठट्ठा थोडी ही है। अब देखिए यहा आया ही हूँ आपसे जान पहिचान हो ही चुकी है, सब कुछ मालूम हो ही जाएगा।

बजाज अच्छा यह तो बताइए आपका नाम क्या है ?

बहा० (छाती ऊची करके) बहादुरसिंह !

बजाज और रहते कहाँ हैं ?

बहा० लका मे।

बजाज (ताज्जुब से) लका मे !

बहा० हाँ जी हाँ लका मे।

बजाज कौन लका ?

बहा० बडी लका।

बजाज (हस कर) बडी लका कौन है और छोटी कौन है ?

बहा० छोटी लका वह जहाँ शिवभक्त रहते हो और बडी लका वह शिव और उनके भक्त हो—अब समझे या कुछ और साफ-साफ समझाऊँ ?

बजाज जी हाँ, जरा खुलासा समझाइय।

बहा० छोटी लका वह जो सोने की थी और जहा रावण रहता था। बडी लका 'काशी' जो रत्न जडित है और जहाँ श्रीविश्वनाथ माई अन्नपूर्णा और उनके भक्त लोग रहते है। अगर अब भी न समझो तो हम जाते हैं, ऐसे नासमझ के पास रहना मुनासिब नहीं।

बजाज : (हस कर) नहीं-नही, आप खफा न होइये, मैं सब कुछ समझ गया, आपने पहले ही क्यो न कह दिया कि मैं काशीजी रहता हूँ साफ-साफ तो बात थी।

बहा० क्या साफ साफ कहना है, अजी कवि लोग बिना घुमाय फिराये

कभी बात कहते हैं ?

बजाज क्या आप कवि भी हैं ?

बहा० जी हा, बल्कि कपि भी हैं ।

इस 'कपि' के कहने पर खुशदिल बजाज तथा और भी कई आदमी जो बहादुरसिंह की सूरत देखने और बात सुनने के लिए आ गये थे हस पड़े । बजाज ने फिर कुछ पूछना चाहा, मगर बहादुरसिंह जोर से बोले, "बस बस-बस, अब मुंह मत खोलिये ! ऐसा न होगा कि जन्म भर तुम ही सवाल करते जाओ और मैं कुछ भी न पूछूँ !।"

बजाज अच्छा-अच्छा आपको जो कुछ पूछना हो आप भी पूछ लीजिये ।

बहा० यह बताइये कि आज इस शहर मे धूमधाम कैसी है, लोग दुकानो और मकानो की सजावट मे क्यो लगे हैं ? मैं तो कई दफे पहिले आ चुका हूँ मगर ऐसा तो कभी न देखा ।

बजाज अजी हमारे कुँअर साहब की शादी न होने वाली है ।

बहा० हाँ ! कब कब ?

बजाज यही आठ दस दिन मे ।

बहा० बारात कहाँ जायगी ?

बजाज बस इसी शहर मे घूमे फिरेगी ।

बहा० सो क्या ? राजो के लडको की शादी तो किसी राजे ही की लडकी या बडे तोंद वाले जमींदार की लडकी से होनी चाहिए, फिर शहर ही में किसकी लडकी से शादी होगी ?

बजाज जी वह एक जमींदार की ही लडकी है मगर लूट कर लाई गई है इसलिए इसी शहर मे बल्कि महल ही मे उसे रक्खा गया है और वहा ही शादी भी होगी ।

बहा० वह किस कम्बख्त की लडकी लूटी गई है ! क्या वह देने को राजी नही होता था ?

बजाज अजी राजा महाराजो के घर की बातचीत है, इस तरह आम सडक पर नही कही जाती, बल्कि इस बारे म ज्यादे कहना-सुनना भी मुनासिब नहीं ।

बहा० जी कहना-सुनना तो जरूर है मगर आम सडक का खयाल हो

तो चलिए कोठडी मे घुस चलें।

बजाज (हसकर) खूब कही !

बहा० अच्छा उस लडकी के बाप का तो नाम बताइयेगा या वह भी नही ?

बजाज इसमे क्या हर्ज है सुनिए, वह पटने के अमीदार गुलाबसिंह की लडकी है और उसका नाम रम्भा है। क्या तुम उसे नही जानते ? अरे वही जिसके लिए बिहार के राजा उदयसिंह के पुत्र नरेन्द्रसिंह से फसाद मच चुका है।।

बहा० वाह वाह ! उन लोगो को मैं खूब जानता हूँ और लडकी की तो नस-नस से वाकिफ हू ! (गरदन हिला कर) लेकिन बुरा हुआ, अगर यह नरेन्द्र सिंह के घर जाती तो अच्छा होता, उस शैतान की चाहे जो दुर्दशा होती हम कुछ रञ्ज न था, मगर यहा तुम्हारे राजा के लडके [illegible] ब्याही गई तो ठीक न होगा। हाय ! अब तो गई बेचारे बच्चे की जान ! बुरा हुआ, बहुत ही बुरा हुआ !।

रम्भा का हाल तो बहादुरसिंह से छिपा ही नही था, वह नरेन्द्रसिंह के लिए घर छोडकर निकल गई थी सो भी यह बखूबी जानते थे। आज वही बेचारी रम्भा इस मुसीबत मे आ पडी इसका बहादुरसिंह को बहुत ही रञ्ज हुआ मगर वे अपनी चालाकी से कब चूकने वाले थे ! कोई न कोई तर्कीब सोच ही तो ली।

बहादुरसिंह ने जब विचित्र मुद्रा से गरदन हिला कर कहा कि 'हाय, अब तो गई बेचारे बच्चे की जान ! बुरा हुआ, बहुत ही बुरा हुआ !।' तो वह बेचारे बजाज और वहां बठे हुए आदमी सभी घबडा गये कि आखिर यह कह क्या रहा है ! हमारे राजा के लडके की जान भला क्यो जाने लगी ? आखिर बजाज से न रहा गया उसने बहादुरसिंह से पूछा, "सो क्या, इसम जान जाने की कौन-सी बात है ?"

बहा० अजी यह राजो के घर की बातचीत है, इस तरह दस आदमी के बीच मे नही कही जाती ! लो अब मैं जाता हू, अब इस शहर मे रहना और सिसक कर किसी को मरते देखना मुझे मजूर नही। (उठने की तैयारी करने लगे)।

बजाज (हाथ पकडकर) अजी बैठो तो, घबरा क्यो गये, मुझे अभी तुमसे बहुत काम है।

बहा० राम-राम, काम से तो मैं कोसो भागता हू।

बजाज अच्छा ठहरिये तो।

बहा० अच्छा दो बात मानने का वादा कीजिये तो जरा-सा क्या दो तीन दिन तक ठहर जायें।

बजाज कहिए कहिए, मुझे पहिले ही से मजूर है, ऐसा कौन होगा जो आप ऐसे खुशदिल आदमी से अलग होना चाहेगा ?

बहा० अच्छा तो फिर वे बातें कह डालू ?

बजाज हाँ हाँ कहिये और बहुत जल्द कहिये।

बहा० एक तो यह कि मैं तुम्हार यहां दो-तीन दिन तक ०९। डालूगा और भग घोट घोट कर पीऊँगा, डरो मत, खाने-पीने मे मैं अपने पास से खर्च करू गा तुम्हारे रुपये बर्बाद न होने दू गा।

बजाज अजी, अब जल्दी कहो भी, कि लगे मुर्गी की टाँग तोडने! मैं इतना कगाल नही हूँ कि दो-चार महीने तुम्हारी दावत न कर सकू। खाओ न कितना गुलाब जामुन छील-छील कर खाओगे, दोस्ती हार मानो तो सही!

बहा० अच्छा खर तो मेरी दूसरी बात भी तो सुन लो।

बजाज उसे भी कह डालो।

बहा० वह यह है कि जो बात तुम मुझसे पूछ रहे हो उसके जानने की इस समय जिद न करो, निराले मे रात को या कल सब कुछ मुझसे सुन लेना अजी मैं त्रलोक्य का हाल बता सकता हू यह तो मामला ही क्या है। मैं बडे काम का आदमी हूँ, मरने के बाद भी मेरी एक-एक हड्डी दो लाख की नीलाम होगी।

बजाज क्या बात है आपकी!

बहा० नही नही, क्या बात किसी दूसरे की होगी मेरी बडी बात है।

बजाज अच्छा साहब मुझे यह भी मन्जूर है।

थोडी देर तक और मसखरेपन की बातचीत होती रही बहादुरसिंह की बातो से सभी हसते लोट-पोट हो जाते थे। दोपहर को बजाज ने दुकान बन्द

की ओर बहादुरसिंह को साथ ले घर गया। बहादुरसिंह ने उसके घर डेरा डाला और थोडी देर आराम करने के बाद घूमने फिरने के लिए बाहर निकले लेकिन बाजार का रास्ता छोड किले की तरफ रवाना हो गए।

किले की एक खिडकी ठीक गण्डक नदी के किनारे ही पडती थी और उस राह से बहुत से आदमी गण्डक किनारे आते-जाते थे, कई सरकारी लौंडियाँ भी उसी राह से जल भरने के लिए जा रही थी।

बहादुरसिंह चाहे कितना ही बडा मसखरा और बेवकूफ क्यो न समझा जाय मगर असल मे वह बडा ही चालाक और धूर्त था। वह बखूबी जानता था कि रम्भा जीत जी सिवाय नरेन्द्रसिंह के किसी दूसरे से शादी न करेगी। उन्ही के लिए तो वह जान पर खेल कर घर के बाहर निकल गई थी पर न मालूम किस तरह इन दुष्टो के हाथ लग गई। अब वह यह सोच रहा था कि कोई तर्कीब ऐसी करनी चाहिए जिससे यहा से उसकी रिहाई हो जाय। इसी धुन म डूबा हुआ वह एक किनारे बैठ गया और किले के अन्दर से आते जाते औरत-मर्दों का तमाशा देखने लगा।

जसे-जसे दिन बीतता जाता था लोगो की आमदरफ्त कम होती जाती थी यहाँ तक कि शाम होते-होते सिर्फ दो लौंडियो को साथ लिए हुए एक बूढी औरत घाट पर रह गई और चारो तरफ सन्नाटा हो गया। इस बूढी औरत की उम्र साठ साल स कम न होगी तो भी यह बदन मे बहुत से सोने के गहने पहिने हुए थी और इसके साथ वाली दोनो लौंडियों का बदन भी सोने के गहनो से खाली न था। बहादुरसिंह न समझ लिया कि यह बुढिया बेशक रानी साहेबा की खास लौडी बल्कि लौंडियो की सरदार होगी। वह बहुत देर तक छिप छिपे इन तीनों को देखता रहा। जब बुढिया नहा चुकी और साडी बदल दोनो औरतो को साथ ले किले म जाने के लिए सीढियाँ चढने लगी तब बहादुरसिंह दौडकर उसके पास पहुँचा और पैर पर गिरकर रोने लगा, 'हाय माँ, तू कहाँ चली गई थी! मैंने तेरा क्या बिगाडा था जो मुझे अकेला छोड कर चली गई। अब तेरी-सी माँ मैं कहाँ से लाऊँ! तू दिन मे चार चार पाँच-पाँच दफे मुझे प्यार करके और जिद्द करके खिलाया करती थी, अब कोई दो दफे भी खिलाने वाला न रहा! खुद अपने हाथ से चूल्हा फूकता और खाने को पकाता हूँ। इसम सन्देह नही कि तू लाखो रुपये मेरे लिए घर मे छोड गई, मगर अब

वह किस काम का है। तेरी पतोहू भी मर गई, अब वह सब धन कौन भोगेगा! मैं जानता हूँ कि तू मेरे बाप से लड और लाखो रुपये और जडाऊ गहनो पर लात मार कर चुपचाप चली गई थी, मगर अब तो बाप राम भी चल बसे, घर मे सिवाय मेरे और दूसरा कोई न रहा। माँ, मुझसे इतना धन-दौलत सभाला नही जाता, जिमीदारी का बन्दोबस्त किसी तरह नही होता, माँ, अब मैं न मानूगा, जरूर तुझे घर ले चलूगा! माँ, मैंने तो तेरा कुछ नही बिगाडा था, फिर तू मुझसे क्यो खफा हो गई? हाय माँ, हाय माँ!! अब जीते जी मैं तुझे कभी न छोडूंगा। तैने जिद् करके मेरे लिए जो सिकरी बनवा दी थी ले मैं उतार कर तेरे आगे फेंक देता हूँ, अब इसे कभी न पहिरूगा! (गले से सिकरी निकाल कर और उसके आगे फेंककर) तू अगर न चलेगी तो मैं सब धन दौलत फकीरो को बाँट साधु हो जगल मे चला जाऊँगा। मैं तेरी खोज मे वर्षों एक शहर से दूसरे शहर मारा फिराहूँगा, तू कही न मिली! आज राम ने तुझसे मिलाया, अब मैं तुझे कभी न छोडूगा चाहे जो हो, और बिना घर ले गये कभी न मानूगा। मैंने सुना था कि मेरे दो तीन भाई-बहिन भी थे जिन्हें तू अपने साथ ले गई थी, हाय! अब वे कहाँ हैं? मुझे जल्द दिखा, जो कुछ दौलत घर म है मैं उनके हवाले करूगा। वे ही गाँव गिराँव का भी बन्दोबस्त किया करेंगे, मुझसे अब किसी बात से सरोकार नही। मुझे धन-दौलत की परवाह नही, मैं तो दिन रात भग मे मस्त रहना चाहता हू, बस पाव भर भग और आधा सेर चीनी चाहिए और कुछ नही। माँ, अब तुझे घर चलना ही होगा, मैं किसी तरह न मानूगा!!"

इसी तरह की बहुत-सी बातें कहता हुआ बहादुरसिंह देर तक बुढिया का पैर पकडकर रोता और गिडगिडाता रहा। पहिले तो बुढिया घबडाई कि यह कहाँ की बला पीछे पडी मगर जब बेशुमार धन-दौलत और गाँव गिराँव का नाम सुना तो मुह म पानी भर आया। सोचने लगी कि यहाँ जितना माल दस जन्म मे पैदा करूँगी उतना एकदम बात की बात मे यह पगला देने को तैयार है। मालूम होता है कि इसकी माँ ठीक मेरी सूरत शक्ल की थी। यह कहता है मेरी बहिन और मेरे भाई को भी तू लेती गई थी चलो यह भी अच्छा ही है, मेरी एक लडकी और एक लडका तो हई हैं वही इसके भाई-बहिन बनें! फिर इतनी दौलत छोड बैठना नादानी नहीं तो क्या होगा? मेरी समझ में तो

यही आता है कि इसके साथ चली चलू, मगर इस बारे मे पहिले अपने लडके से सलाह लेना मुनासिब है।

इसी तरह की बातें बुढिया बडी देर तक सोचती रही। दोनो अपने-अपने मतलब की धुन मे थे। आखिर बुढिया ने कहा, 'खैर अब तू कहता है तो मैं तेरे घर चलूगी मगर पहिले तो तेरे भाई से सलाह कर लू।"

बहा० क्या मेरा भाई भी इसी शहर मे है? वह क्या काम करता है?

बुढिया महाराज के यहां सवारों मे नौकर है।

बहा० और बहिन?

बुढिया तेरी बहिन तो अपने ससुराल मे है।

बहा० हाय तो मैं उसकी सूरत आज न देख सकगा! माँ, हजार-दो हजार रुपया उसके पास भेज दे और घर चल के तुरन्त अपने यहा बुलावा भेज, भाई को भी साथ लेती चल, मैं उसकी अपने राजा से मुलाकात कराऊगा।

बुढिया तेरा राजा कौन है?

बहा० उदयसिंह।

बुढिया कौन उदयसिंह? बिहार का राजा?

बहा० हां वही।

बिहार के राजा उदयसिंह का नाम सुन बुढिया थोडी देर तक कुछ सोच मे पड गई मगर फिर सम्हल गई और बहादुरसिंह से बोली, "अच्छा अब देर होती है, इस समय तो मैं जाती हू लेकिन कल इसी समय इसी जगह तू मुझसे मिलियो, फिर जैसी राय होगी करूगी।"

बहादुर राय वाय मैं कुछ नही जानता, तुझे चलना ही होगा।

बुढ़िया हां हां मैं चलूगी!

बहा० अच्छा यह सिकरी तू लेती जा मेरे भाई को दे दीजियो।

बुढिया (सिकरी उठाकर) खैर जिसमे तू खुश हो मैं वही करूगी।

दो चार बातें और करके बुढ़िया वहां से चली गई और बहादुरसिंह भी अपना काम हो जाने की खुशी मे मस्त झूमते हुए अपने नये दोस्त बजाज के यहां पहुँचे जिसने अपने घर मे रखकर इनकी बडी खातिरदारी की। बहादुर-सिंह ने भी अपने मसखरेपन से बजाज को बहुत ही खुश किया बल्कि अपना दोस्त बना लिया।

दूसरे दिन बुढिया से मिलने के लिए बहादुरसिंह फिर उसी जगह पहुँचे। आज बुढिया के साथ उसका लडका भी था जो बहादुरसिंह से खुशी खुशी सगे भाई की तरह गले मिला और देर तक बातचीत करता रहा।

बहादुरसिंह को निश्चय हो गया कि अब मेरा काम अवश्य हो जाएगा। आखिर धीरे धीरे बहादुर ने अपने मतलब वाली बात छेडी।

बहा० अच्छा माँ बता अब घर कब चलेगी ?

बुढिया जब कहो तब चलूँ।

बहा० (अपने बनोए भाई अर्थात बुढिया के लडके की तरफ देख कर) भाईजान मैं तुम्हे चिट्ठी देता हूँ। उसे तुम बिहार के राजा उदयसिंह के पास ले जाओ। हमको वह अपने भाई की तरह मानते हैं। हमारा बहुत-सा रुपया उनके यहाँ जमा है हमारे घर की ताली भी उन्ही के यहाँ है वह तुमको हमारे घर की ताली और दस हजार रुपया नकद देंगे और हमारे नौकरों को बुलाकर तुम्हे सहज देंगे और कह देंगे कि वह बहादुरसिंह जवहरी का भाई है। फिर वे लोग तुम्हारा हुक्म मानेंगे। तुम घर का इतजाम करना और आज के ठीक पन्द्रहवें दिन घर म से चादी वाली पालकी और सोलह कहारो को लेकर शहर के पाँच कोस इधर चले आना जिसमे हम माताजी को इज्जत के साथ ले जाय। (कमर से एक चिटठी और दस अशर्फी निकाल कर) लो यह चिटठी राजा साहब को देना और यह अशर्फियाँ रास्ते मे खच करना। एक घोडा किराया कर लो और हाँका हाँकी चल जाओ।

बुढिया के लडके रामदास ने यह कह कर कि 'कल सरकार से छुटटी ले कर मैं जरूर चला जाऊँगा बहादुरसिंह के हाथ से अशर्फी और चिटठी ले ली। इसके बाद अपने अपने ठिकाने चले जाने के लिए तीनो आदमी खडे हो गए। बहादुरसिंह ने अपनी माताजी की तरफ देखकर पूछा, 'माँ यह तो बताओ यहाँ लोगो ने तुम्हारा नाम क्या रक्खा है ?'

बुढिया चमेला दाई।

बहा० राम राम, अच्छा भला नाम बदल कर क्या बुरा नाम रख दिया। बस चले तो सभो की नाक काट डालू। अच्छा इस वक्त तो जाता हूँ लेकिन कल जरूर यहाँ ही मिलना किसी से डरना मत।

चमेला० सो मैं डरने क्यो लगी। अपने लडके से मिलती हूँ इसमे भी

किसी का इजारा है !!

बहा० (पर छूकर) अच्छा तो अब जाता हूँ।

२०

हाजीपुर के राजा दौलतसिंह का लडका प्रतापसिंह बडा ही उजडड था। उसे पढने लिखने का शौक बिल्कुल न था यहा तक कि सिवाय दस्तखत करने के अपने हाथ से एक चिटठी भी नही लिख सकता था। दस-बीस गपोडी और बात-बात मे तारीफ करने वाले साथियो के साथ हाहा-ठीठी मे दिन बिताया करता था हां कविता का कुछ शौक इसे जरूर था। इन दिनो तो यह शादी होने की खुशी मे फूला हुआ है। रमा जब से इसके घर म आई है छिप कर दो दफे उसकी सूरत देख चुका है और अपने साथियो के बीच म बठकर उसकी खूबसूरती की तारीफ किया करता है। इसे भग और गांजे का बहुत शौक है, दिन मे तीन-तीन दफे बूटी छना करती है और दिन रात नशे मे चूर रहता है।

बहादुरसिंह ने इसके चाल चलन का पता अच्छी तरह लगा लिया था। इसलिये सन्ध्या को बूटी पीने का समय,विचार वह उसी नजरबाग के दरवाजे पर पहुँचा जिसमे नित्य प्रतापसिंह बूटी पी पहर रात गए तक गप्प उडाया करता था। पहरेवाले से कहा, "कुमार को बहुत जल्द खबर करो कि एक 'विजया के सिद्धजी' तुमसे मिलने आये हैं।"

पहरेवाले सिपाहियो को बहादुरसिंह की सूरत शक्ल पर बडी ही हसी आई। यह समझ कर कि हमारे कुँअर साहब ऐसी सूरत देख बहुत ही खुश होंगे—एक सिपाही दौडा हुआ बाग के अन्दर गया और कुँअर साहब को सलाम कर बोला

'सरकार आज एक विचित्र आदमी सरकार से मिलने के लिये आया है जिसकी सूरत देखने से मारे हसी के दम निकला जाता है। उसने अपना नाम 'विजया के सिद्धजी बतलाया है। हुक्म हो तो आने दिया जाय।"

कुमार० हां हां उन्हें बहुत जल्द हमारे सामने लाओ।

सिपाही हुक्म पाते ही लपका हुआ बाहर गया और बहुत जल्द बहादुरसिंह को लिए हुए कुँअर साहब के सामने हाजिर हुआ।

पाठक महाशय यह न समझें कि बहादुरसिंह को जिस सूरत म पहिले देख

दूसरे दिन बुढिया से मिलने के लिए बहादुरसिंह फिर उसी जगह पहुँचे। आज बुढिया के साथ उसका लडका भी था जो बहादुरसिंह से खुशी खुशी सगे भाई की तरह गले मिला और देर तक बातचीत करता रहा।

बहादुरसिंह को निश्चय हो गया कि अब मेरा काम अवश्य हो जाएगा।

आखिर धीरे धीरे बहादुर ने अपने मतलब वाली बात छेडी।

बहा० अच्छा माँ बता अब घर कब चलेगी ?

बुढिया जब कहो तब चलू ।

बहा० (अपने बनौए भाई अर्थात बुढिया के लडके की तरफ देख कर) भाईजान मैं तुम्हें चिट्ठी देता हूँ। उसे तुम बिहार के राजा उदयसिंह के पास ले जाओ। हमको वह अपने भाई की तरह मानते हैं। हमारा बहुत-सा रुपया उनके यहाँ जमा है हमारे घर की ताली भी उन्ही के यहाँ है वह तुमको हमारे घर की ताली और दस हजार रुपया नकद देंगे और हमारे नौकरों को बुलाकर तुम्ह सहज देंगे और कह देंगे कि यह बहादुरसिंह जवहरी का भाई है। फिर वे लोग तुम्हारा हुक्म मानेंगे। तुम घर का इंतजाम करना और आज के ठीक पन्द्रहवें दिन घर मे से चादी वाली पालकी और सोलह कहारो को लेकर शहर के पाच कोस इधर चले आना जिसमे हम माताजी को इज्जत के साथ ले जाय। (कमर से एक चिटठी और दस अशर्फी निकाल कर) लो यह चिट्ठी राजा साहब को देना और यह अशर्फियाँ रास्ते मे खर्च करना। एक घोडा किराया कर लो और हाँका हाँकी चले जाओ।

बुढिया के लडके रामदास ने यह कह कर कि 'कल सरकार से छुट्टी ले कर मैं जरूर चला जाऊँगा बहादुरसिंह के हाथ से अशर्फी और चिटठी ले ली। इसके बाद अपने अपने ठिकाने चले जान के लिए तीनो आदमी खडे हो गए। बहादुरसिंह ने अपनी माताजी की तरफ देखकर पूछा, ' माँ यह तो बताओ यहाँ लोगो न तुम्हारा नाम क्या रक्खा है ? '

बुढिया चमेला दाई।

बहा० राम राम, अच्छा भला नाम बदल कर क्या बुरा नाम रख दिया! बस चले तो सभो की नाक काट डालू। अच्छा इस वक्त तो जाता हूँ लेकिन कल जरूर यहा ही मिलना, किसी से डरना मत।

चमेला० सो मैं डरने क्यो लगी! अपने लडके से मिलती हूँ इसमे भी

किसी का इजारा है !!

बहा० (पैर छूकर) अच्छा तो अब जाता हूँ।

२०

हाजीपुर मे राजा दौलतसिंह का लडका प्रतापसिंह बडा ही उजड्ड था। उसे पढने लिखने का शौक बिल्कुल न था यहा तक कि सिवाय दस्तखत करने के अपने हाथ से एक चिट्ठी भी नही लिख सकता था। दस-बीस गपोडी और बात-बात मे तारीफ करने वाले साथियो के साथ हाहा-ठीठी मे दिन बिताया करता था, हा कविता का कुछ शौक इसे जरूर था। इन दिनो तो यह शादी होने की खुशी मे फूला हुआ है। रभा जब से इसके घर म आई है छिप कर दो दफे उसकी सूरत देख चुका है और अपने साथियो के बीच म बठकर उसकी खूबसूरती की तारीफ किया करता है। इस भग और गाँजे का बहुत शौक है, दिन मे तीन-तीन दफे बूटी छना करती है और दिन रात नशे म चूर रहता है।

बहादुरसिंह ने इसके चाल चलन का पता अच्छी तरह लगा लिया था। इसलिये सन्ध्या को बूटी पीने का समय, विचार वह उसी नजरबाग मे दरवाजे पर पहुँचा जिसमे नित्य प्रतापसिंह बूटी पी पहर रात गए तक गप्प उडाया करता था। पहरेवाले से कहा, "कुमार को बहुत जल्द खबर करो कि एक 'विजया के सिद्धजी' तुमसे मिलने आये हैं।"

पहरेवाले सिपाहियो को बहादुरसिंह की सूरत शक्ल पर बडी ही हसी आई। यह समझ कर कि हमारे कुँअर साहब ऐसी सूरत देख बहुत ही खुश होंगे—एक सिपाही दौडा हुआ बाग के अन्दर गया और कुँअर साहब को सलाम कर बोला

'सरकार आज एक विचित्र आदमी सरकार से मिलने के लिये आया है जिसकी सूरत देखने से मारे हसी के दम निकला जाता है। उसने अपना नाम 'विजया के सिद्धजी बतलाया है। हुक्म हो तो हाजिर किया जाय।'

कुमार० हाँ हाँ उन्हे बहुत जल्द हमारे सामने लाओ।

सिपाही हुक्म पाते ही लपका हुआ बाहर गया और बहुत जल्द बहादुरसिंह को लिए हुए कुँअर साहब के सामने हाजिर हुआ।

पाठक महाशय यह न समझे कि बहादुरसिंह को जिस सूरत मे पहिले देख

चुके हैं आज भी उसी सूरत-शक्ल मे देखेंगे। नही, नहीं आज वह एक नए ही ढग का बाका जवान बना है। सिर के पैर तक अपने को सिदूर से रग खासा महाबीर बना हुआ है, धोती-कुरते या टोपी स कुछ वास्ता नही आँधिया कसे और भाँग का झोला बगल मे लटकाये हुए हैं, हाथ मे भग घोटने का डडा और टोपी की जगह भग घोटने की बडी सी कूडी सिर पर औंधे हुए है।

कुअर साहब के सामने पहुँचते ही बहादुरसिंह ने आशीर्वाद मे यह दोहा पढा

महादेव को परम प्रिय, सिद्धन की सिधि जोय।
आवनहार अनिष्ट सुब, टारहि विजया सोय॥

भगेडी के सामने जब भग की तारीफ की जाय तो वह बडा प्रसन्न होता है। बहादुरसिंह के दोहे से कुअर साहब बहुत ही प्रसन्न हुए और समझ गये कि इसे विजयादेवी का इष्ट है मगर साथ ही इसके दोहे के तीसरे चरण से उन्हें खुटका भी हुआ लेकिन यह समझ कर कि सिद्धजी कही जाते तो हैं ही नही, फिर पूछ लिया जायगा कि इस दोहे का तीसरा चरण आपने ऐसा क्यों कहा, इस विषय मे कुछ न पूछा।

कुअर (हँसते हुए) आइये आइये सिद्धजी, यह आसन बिछा हुआ है बठिये, कहिये कुशल तो है?

सिद्ध० देहि विजय तुमको सदा, सो विजया वरदानि।
नित हम लहि जाकि कृपा, रहत अभय सुखमानि॥

कुअर वाह वाह सिद्धजी, क्या बात है! विजया ऐसी ही वस्तु है!

सिद्ध० इसम क्या सन्देह, अन्नदाता देखिये

देत अमन्द अनन्द दन्द दुख दूर बहाव।
भामिनी भोजन और दुचन्द चाह उपजाव॥
सप्त दीप को वर महीप छिन माहि बनावैं।
अष्ट सिद्धि सुख अनुभव बिनहि प्रयास करावै॥
नन्दन बन कलाश अरु स्वग विभव दुलभ जिते।
नरति सुलभ अपनी कृपा करत देखि विजया तिते॥

कुअर वाह वाह वाह, क्या बात है सिद्धजी! विजया देवी की महिमा अकथनीय है! कहिए आपका मकान कहाँ है?

सिद्ध० मेरा मकान तो कहीं भी नही है, मेरे बाप का मकान काशी था सो अब नही है।

कुअर (हँस कर) सो अब नही है इसका क्या मतलब ? क्या बाप के मर जाने से मकान भी टूट जाता है ?

सिद्ध० जी नहीं, मरने से तो मकान नही टूटता मगर वह तो काशी मे मर के मोक्ष हो गये इसलिये मिलने की अब कोई उम्मीद न रही, दादा का मकान दरभगे था सो उनको भी गया किए आ रहा हूँ इसलिए अब वह भी गया गुजरा हुआ। हाँ परदादा का मकान मुलतान था, सो गयाजी जाने पर भी मैंने उनके नाम का पिण्डा न दिया, आखिर अपने बुजुर्गों मे से किसी का पता-ठिकाना तो रहने देना चाहिए !

सिद्धजी की बेसिर पर की बातो पर सभी हँस पडे और कुअर साहब ने फिर पूछा, 'क्या गयाजी मे तुमने अपने परदादा का पिण्डा नही दिया इससे उनका मकान मुलतान म बचा रह गया ?

सिद्ध० आप समझे नही, मकान उसी को कहते हैं जहाँ कोई रहे चाहे जीता-जागता रहे या मरने के बाद भूत होकर रहे, जब मैंने गया मे उनके नाम का पिण्डा नहीं दिया तो आखिर भूत होकर तो वहाँ रहेंगे ! पिण्डा दे देता, उनकी भी गति हो जाती तो फिर मकान से उनका रिश्ता न टूट जाता।

कुअर तो क्या आपको निश्चय है कि वह भूत होकर वहाँ हैं ?

सिद्ध० जी हा, मुझसे कई दफे मुलाकात हो चुकी है।

कुअर फिर किस तरह मुलाकात हो चुकी है?

सिद्ध० बस किसी के सिर पर आकर दो चार बातें कर गये मुलाकात हो गई जसे गुलाबसिंह की दादी।

कुअर कौन गुलाबसिंह की दादी ?

सिद्ध० (हाथ उठा कर) अजी यही पटने के जमींदार गुलाबसिंह की दादी, मगर वह तो बडी ही बेढब है, साली अपनी परपोती रम्भा के सिर पर आया करती है।

कुअर (चौंक कर और डर कर) तुम्हें कसे मालूम कि रम्भा के सिर पर उसकी परदादी आया करती है ?

सिद्ध० मैं स्वय देख चुका हूँ और दु ख भोग चुका हूँ।

कुअर क्या रम्भा के सिर पर उसकी परदादी को आते खुद देख चुके हैं ?

सिद्ध० जी हाँ कहा तो देख चुका हूँ और दु ख भोग चुका हूँ ।

कुअर आपको क्या दु ख भोगना पडा ?

सिद्ध० सो न पूछिये, बडी लम्बी चौडी कथा है ।

कुअर भला कहिये तो सही ।

सिद्ध० आप जिद्द करते हैं तो सुनिये मैं कहता हूँ । रम्भा की परदादी के साथ और भी बहुत सी चुडैलें है । जब वह रम्भा के ऊपर आती है और रम्भा किसी के सिर पर हाथ रख देती है या धोखे से हाथ पड जाता है तो कोई न कोई चुडल उसके ऊपर भी आ जाती है और उसकी हड्डी-हड्डी हिला देती है । एक दिन मैं इसी तरह पटने मे गुलाबसिंह के यहाँ गया हुआ था । शाम होते होते महल मे खूब गुल शोर मचा जिसे सुन गुलाबसिंह घबडा गए । मैंन उनसे डरने का सबब पूछा । वे बेचारे सूधे आदमी साफ-साफ बोल उठे कि हमारी लडकी पर हर अमावस्या के दिन चुडैल आती है सो आज अमावस्या है मालूम होता है कि वही बखेडा फिर महल मे मचा है । शामत की मार मेरे मुह स निकल गया कि मैं भूत उतार सकता हूँ मुझे ले चलिए ! बस साहब, वह मुझे अपने जनाने मे ले गए । मैंने देखा कि रम्भा पर चुडैल सवार है और वह खूब हाथ पर मार रही है । मैंन जाते ही ललकारा, ' बस खबरदार ! ' इतना कहना था कि वह बिगडी और झट मेरे पास आकर मेरे सिर पर हाथ रख ही तो दिया । बस फिर क्या पूछना है, उसी समय मैं बदहवास हो गया । न मालूम मेरी क्या दुदशा हुई, दूसरे दिन जब होश आया तो अपने को गगा किनार बालू पर पडा हुआ पाया । हाय हाय ! वह दिन मुझे कभी न भूलेगा । पन्द्रह दिन तक मेरा ब द बन्द दुखता रहा ! मरते-मरते बचा । अब जो मुझे कोई कहे कि तुम्हें लाख रुपये दूगा तुम पटन चलो तो बस जाने वाले की सात पुश्त पर लानत भेजता हूँ, अब तो यह भी सुना है कि उन्होने लाचार होकर रम्भा का घर से निकाल दिया और बहाना कर दिया कि वह खुद कहीं भाग गई ।

सिद्धजी की बातें सुन कर कुअर साहब ता बदहवास हो गए । बदन के रोगटे खडे हो गए कलेजा धक धक करन लगा सोचन लगे कि हाय उसी रम्भा से ता मेरी शादी हाने वाली है ! कहीं सिद्धजी की बात सच हुई तो

मुफ्त मे जान गई । कही मेरे भी सिर पर हाथ रख देगी तो बस मैं गया गुजरा ! लेकिन कही सिद्धजी गप्प न उडाते हो—यह सोच कर कुअर साहब ने पूछा, "क्या सिद्धजी आप यह सच्च कह रहे हैं ? मुझे तो विश्वास नही होता ।"

सिद्ध० नही विश्वास होता तो मेरी बला से ! अगर आपको सच-झूठ मालूम करना है तो पता लगाइये कि रम्भा कहाँ है, फिर अमावस्या के दिन उसके पास चलिए और देखिए तमाशा !

कुअर रम्भा का पता तो मुझे मालूम है ।

सिद्ध० तो बस जिस शहर म वह हो वहाँ जाइये और अमावस्या की शाम को उससे मिलिये !

कुअर रम्भा इस समय इसी शहर मे है और अमावस्या को भी थोडे ही दिन हैं ।

सिद्ध० (चौंक कर) क्या रम्भा इसी शहर मे है ?

कुअर । जी हाँ बल्कि हमारे ही मकान मे है ।

हाय हाय ! बडा गजब हुआ ! हे परमेश्वर ! मैंने तेरा क्या बिगाडा था जो तू मुझको इस शहर मे ले आया ! अब जान बचा ! !" यह कहता हुआ बहादुरसिंह वहाँ से भागा । कुअर साहब पुकारते ही रह गए कि 'हाँ हा ! सिद्धजी, सुनिए तो सुनिए तो !' मगर सुनता कौन है ? यह तो कूडी-सोटा तक फेंक के भागे । दर्वाजे पर पहरेवालो ने रोका तो यह जमीन पर लोट गए और "मार डाला, मार डाला ! मरे रे मरे रे ! !" कह कर चिल्लाने लगे । लाचार सभी ने छोड दिया और बहादुरसिंह हाँफते हुए वहाँ से भागे ।

कुअर साहब के दिन की क्या हालत थी यह तो वे ही जानते होंगे । सिद्धजी के भागने के बाद वह घण्टो तक परेशान रहे और तरह-तरह की बातें सोचते रहे । शादी की खुशी गम के साथ बदल गई । यहाँ तक डरे कि माँ से मिलने के लिए भी महल म जाने की हिम्मत न रही । आखिर डरते डरते अपने एक दोस्त को साथ ले बाप के पास पहुचे और सिर नीचा कर चुपचाप बगल मे बठ रहे ।

उदासी का सबब बहुत पूछने पर कुअर साहब के दोस्त ने विजया के सिद्धजी का सब हाल कहा । राजा दौलतसिंह सुन कर चुप हो रहे लेकिन कुछ देर सोचने के बाद बोले, "ओफ, यह सब वाहियात बात है ! हम नही मानते

भूत प्रेत कोई चीज नही, सब ढकोसला है। तुम्हें लडका समझ के बहका दिया होगा। फिर तरददुद की बात ही क्या है ? अमावस्या को छ-सात ही रोज तो बाकी हैं, बस तुम्हारे दिल से शक दूर हो जाएगा।"

२१

पुनपुन नदी के किनारे पडे हुए लश्कर पर छापा मार जब नरेन्द्रसिंह और जगजीतसिंह दोनो औरतो को छीन लाये तो थोडी दूर पहुँचने बाद मालूम हुआ कि इन दोनो म रम्भा नही है। तारा और गुलाब को पाने से एक तरह की खुशी हुई मगर रम्भा के हाथ न लगने से वह खुशी नरेन्द्रसिंह की बढती हुई उदासी को किसी तरह कम न कर सकी। नरेन्द्रसिंह ने तारा से पूछा, "तेरे साथ ही तो रम्भा भी पकडी गई थी, वह कहाँ है ?"

तारा हम दोनो को जबदस्ती ले जाने वाले डाकुओ ने जब नदी के किनारे डेरा किया तो सब लोग अपने अपने काम की फिक्र में पडे। मेरी और रम्भा की डोली एक ही जगह रखी हुई थी, उस समय रम्भा ने मौका पाकर रात की पहली अधेरी मे डोली से उतर कर मैदान का रास्ता लिया और न मालूम कहाँ चली गई। मैंने भी भागने की कोशिश की मगर न हो सका क्योंकि रम्भा के भागने ही पहरे वालो को मालूम हो गया और "खोजो खोजो, धरो पकडो" की आवाज चारों तरफ से आने लगी, बल्कि थोडी ही देर बाद यह आवाज चारो तरफ से आने लगी मिल गई, मिल गई है।' मुझे विश्वास हो गया कि रम्भा भाग न सकी, पकडी गई। उसी के थोडी देर के बाद आप लोग आ पहुँचे और लडभिड कर हम लोगो की जान बचाई, मगर अब मैं अपनी प्यारी रम्भा के बदले किसी दूसरी ही औरत को देख रही हूँ।

जगजीत० (गुलाब की तरफ देखकर) तुम कसे फस गई ?

गुलाब मैं आफत की मारी अपनी बहिन मोहिनी के साथ मारी-मारी फिर रही थी, इत्तफाक से उसी नदी के किनारे पहुची जहाँ लडाई-दगा हुआ है। मैं पानी पीने के लिए नदी किनारे गई यकायक कई आदमी मेरे पास पहुचे और यह कह कर कि 'मिल गई मिल गई, यही है यही।' मुझे पकड लिया। मैंने बहुत कुछ कहा-सुना मगर सुनता कौन है। हाय, मेरे पकडे जाने के बाद न मालूम बहिन मोहिनी की क्या दुदशा हुई होगी।।

नरेंद्र मालूम होता है वह बच के निकल गई।

जगजीत॰ मुझे तो उम्मीद नहीं कि वह बच के निकल गई होगी। हम लोगों से लड़ने के बाद भागे और फैले हुए दुश्मनों के हाथ उसका फिर से फंस जाना ताज्जुब नहीं है।

नरेंद्र॰ शायद ऐसा ही हुआ हो, फिर अब क्या करना चाहिए ?

जगजीत॰ मेरी राय तो यही है कि घर चलिए, वहां से जो कुछ होगा बन्दोबस्त किया जायगा।

नरेंद्र नहीं मैं ऐसी हालत में घर तो नहीं जाऊँगा।

जगजीत आप बड़े हैं, मैं ज्यादे कुछ तो नहीं कह सकता, मगर इतना कहे बिना भी न रहूंगा कि आप जरूर घर चलें, मैं आपको घर छोड़ कर खुद उसकी खोज में निकलूँगा और वादा करता हूँ कि बिना पता लगाये आपको अपना मुँह न दिखलाऊँगा।

नरेंद्र॰ बेचारी मोहनी भी भारी दुर्दशा में फंस गई होगी।

जगजीत॰ (अपने मन में) भाई साहब ने तो इश्क के दो टुकड़े कर डाले ईश्वर ही बचावे! (जाहिर में) अपनी अपनी किस्मत का भोग सभी भोगते हैं, इसका ख्याल कहाँ तक कीजियेगा।

जगजीतसिंह की आखिरी बात नरेंद्रसिंह को बहुत बुरी मालूम हुई। माथे पर बल पड़ गए, रंगत बदल गई, आँखों में सुर्खी आ गई। होंठ बिचका कर बोले, "अगर यही खयाल है तो रम्भा या मोहनी का पता खूब ही लगाओ!"

आखिरी बात मुंह से निकल जाने पर जगजीतसिंह को भी बहुत कुछ अफसोस हुआ और भाई को मनाने के लिए उन्हें दूनी मेहनत करनी पड़ी। आखिर हर तरह से समझा-बुझा कर उन्हें घर ले ही गए। गुलाब और तारा भी साथ में गईं।

नरेंद्रसिंह के बाप उदयसिंह अपने लड़के के घर लौट आने से बहुत ही खुश हुए मगर जब अपने छोटे लड़के जगजीतसिंह की जुबानी सब हाल सुना तो कई तरह की फिक्र पैदा हो गई। यह तो उन्होंने निश्चय कर लिया कि जिस तरह हो रम्भा का पता लगाना बल्कि उसे लाकर नरेंद्रसिंह के साथ ब्याह देना चाहिए चाहे इसके लिए सर्वस्व जाय तो जाय, मगर साथ ही इसके यह भी सोच लिया कि भरसक मोहिनी का पता न लगने देंगे और अगर शायद

वह यहाँ आ भी जाय तो घुसने न देंगे, क्योंकि आखिर वह बदमाश और मक्कार केतकी की बहिन है, कहाँ तक खोटी न होगी। इस बात के सुनने से उन्हें बहुत रञ्ज हुआ कि नरेन्द्र का दिल रम्भा और मोहनी दोनों ही की तरफ खिंचा हुआ है।

उदयसिंह ने जो कुछ सोचा या खयाल किया था उसे किसी पर जाहिर न किया मगर अपने छोटे लड़के जगजीतसिंह से छिपा रखना भी मुनासिब न समझा क्योंकि जगजीतसिंह बहुत ही गम्भीर और नेक बद को अच्छी तरह समझने वाले थे यहां तक कि मुश्किल से मुश्किल विषय में इनके पिता इनसे राय लिया करते थे और इनकी राय बहुत ही भली समझी भी जाती थी।

गुलाब को देख कर जगजीतसिंह उस पर मोहित तो हो गए मगर अपने दिल को हाथ से जाने न दिया। उन्होंने अपना यह इरादा अच्छी तरह मजबूत कर लिया कि चाहे गुलाब के इश्क में जान चली जाय मगर साथ न करेंगे, हां अगर हर तरह से आजमाने पर वह अपनी बहिन केतकी के रंग-ढंग की साबित न होगी तो कोई मुजायका नहीं लेकिन तभी जब साथ ही इसके यह भी जाहिर हो जाय कि वह मुझसे मुहब्बत रखती है।

रम्भा का पता लगाने के लिए बहुत से आदमी चारों तरफ भेजे गए थोड़े दिन बाद यह खबर मालूम हुई कि वह हाजीपुर में है। सुनते ही जगजीत-सिंह अपने बाप से विदा हुए मगर घर से बाहर न निकलने पाये थे कि बहादुरसिंह की वह चिट्ठी वहां पहुँच गई जो उस मसखरे ने अपने बनावटी भाई के हाथ भेजी थी।

२२

हाजीपुर के राजकुमार प्रतापसिंह को डरा धमका कर हमारे बहादुरसिंह जो भागे तो फिर किसी को पता भी न लगा कि कहां गए और क्या हुए मगर भगेड़ो महाशय घूम फिर कर अपने दोस्त बजाज की दूकान पर पहुंच ही गए। कई दिनों की सोहबत में गोपालदास बजाज उनका दोस्त तो हो गया था मगर अपने काम की तरफ खयाल कर के और यह सोच कर कि हमारी वजह से बजाज बेचारे पर कोई आफत न आवे बाद में बहादुरसिंह ने उसके यहां का रहना भी छोड़ दिया और अब कोई भी नहीं कह सकता कि वह कहां रहता है या क्या करता है।

लेकिन बहादुरसिंह चाहे जहाँ भी रहता हो मगर वह चमेलादाई स रोज ही मिल कर माँ के रिश्ते को मजबूत करता रहा। पाँच चार दिन की मुलाकात म भी बहादुरसिंह ने चमेलादाई से अपन मतलब की बात न छेड़ी जब तक कि उसे यह निश्चय न हो गया कि चमेलादाई का लडका रामदास हाजीपुर स चला गया बल्कि बहुत दूर निकल गया होगा।

एक दिन दोपहर क सन्नाटे मे चमेलादाई अपने सपूत लडके बहादुरसिंह को उस घर म ले गई जिसम उसका कम्बख्त लडका रामदास रहा करता था और बहुत सी अच्छी-अच्छी खाने की चीजें बहादुरसिंह के आगे रक्खी जो रनवास स छिपा लुका के इसी काम के लिए लाई थी। बटेर के बराबर खाने वाले बहादुरसिंह न भोजन करना शुरू किया और समय पाकर अपने मतलब की बात भी छेड दी।

बहा॰ मा! सुना है कि तुम्हारे राजकुमार की शादी होने वाली है?

चम॰ हाँ बेटा शादी तो जरूर होने वाली है मगर लडकी बडी ही कमबख्त है।

बहा॰ सो क्या?

चमे॰ यही कि दिन-रात रोया-पीटा करती है।

बहा॰ वह तो पटने के जमींदार गुलाबसिंह की लडकी है न?

चम॰ हाँ गुलाबसिंह की लडकी है।

बहा॰ उसकी शादी तो हमारे राजकुमार नरेन्द्रसिंह से होने वाली थी?

चम॰ सो तो नही मालूम कि किसके साथ होने वाली थी मगर इतना देखती हूँ कि वह दिन रात नरेन्द्र-नरेन्द्र कह कर रोया करती है और यहाँ होने वाली शादी को बिल्कुल पसन्द नही करती।

बहा॰ माँ अगर तुम अपने साथ उसे अपने घर पर ले चलो तो बड़ा ही मजा हो। हम उसे अपने राजा के यहाँ भेज दें और बहुत सा-रुपया इनाम मिले।

चमे॰ अरे राम राम, ऐसा खयाल भी न करना। जिस रोज ऐसा सोचेंगे उसी रोज हमारी तुम्हारी दानो की जान चली जायगी।

बहा॰ हम तो अपनी जान रात-दिन हथेली पर लिए रहते हैं मगर अफसोस है कि तुम बुढ़िया हो कर मरने से इतना डरती हो?

घमे॰ तो क्या तुम मुझे मारने ही के लिये यहाँ आये हो और इसी लिए बेटा बने हो।

बहा॰ उमर मेरी बहुत कम है तो क्या हुआ मैं कभी किसी का बेटा नही बनता, अगर बनता भी हूँ तो बस पाँच-सात दिन, नहीं हमेशे सब का बाप ही बना रहता हू, आज तुम्हारा भी बाप बनने का जी चाहता है।

बहादुरसिंह की बात सुनकर बुढिया घबडा गई बल्कि कहना चाहिये कि बदहवास हो गई और समझ गई कि बहादुरसिंह बडा भारी मक्कार और धूर्त है। बहुत देर तक बहादुरसिंह का मुँह देखती रही, आखिर बोली, तुम बडे भारी बदमाश मालूम पडते हो ?

बहा॰ शाबाश, तुमने खूब पहिचाना ! अब तुम भी मेरे साथ लुच्ची व मक्कारा बनो तो काम चले !

घमे॰ खबरदार लौंडे, मुँह सम्हाल कर बात कर, मक्कार कही का ! निकल जा यहा से, नहीं तो कान पकड कर उखाड लूँगी !!

बहा॰ बेशक, मगर मुझमे एक बडा भारी गुण यह है कि जिससे मैं कोई काम लेना चाहता हूँ पहिले उसे अपने कब्जे मे कर लेता हूँ जिसमे नाकर नूकर करने न पावे। इसी तरह तुम्हें भी मैंने पहिले ही अपने कब्जे मे कर लिया है।

घमे॰ मैं क्योंकर तेरे कब्जे मे आ सकती हूँ ! मैं जब चाहू तुझे फाँसी दिला दूँ।

बहा॰ (हस कर) मैं तो फासी पड नही सकता मगर कही तुम्हारा लडका ही फाँसी न पड जाय ? मैं सच कहता हू कि तुम्हारी नकेल मैंने अपने हाथ मे कर ली है। अब तुम झख मारोगी और मेरा काम करोगी।

घमे॰ तू पागल तो नही हो गया है !!

बहा॰ क्या यह पागलों का काम है कि अस्सी बरस की खन्नास बुढिया को काबू मे कर ले ?

घमे॰ फिर वही बके जाता है !

बहा॰ अब तो तुम्हें साफ-साफ कह के समझाना पडा। लो सुनो मैं कहता हू—पहिले तो मैंने तुम्हें जो सिकरी दी है उसे बस कोरी जजीर ही समझना, और दूसरे जो तुम्हारे लडके को बिहार भेजा है सो यही समझना उसे यमलोक भेज दिया, अब वह फिर लौट कर नही आता। हा जब तुम

मेरा काम कर दोगी और मैं एक चिट्ठी अपने हाथ से लिख दूंगा कि उस लड़के को छोड़ दो तब उसकी जान छूटेगी नहीं तो बस उसकी खोपड़ी एक दिन किसी अघोरी के हाथ में दिखलाई देगी।

बहादुरसिंह की बातों ने तो बुढ़िया को मुर्दा कर दिया। वह अपने किये पर पछताने लगी और समझ गई कि वह बुरी फंस गई और अब किसी तरह बहादुरसिंह के हाथ से जान नहीं बचती लाचार के इसका काम करना ही पड़ेगा नहीं तो लड़के की जान बेशक चली जायगी।

बहादुरसिंह ने जब बुढ़िया को हर तरह से अपने कब्जे में कर लिया तो अपना काम निकालने की जो कुछ तर्कीब वह कर चुका था या किया चाहता था बुढ़िया को कहा और साथ ही इसके काम हो जाने पर बहुत कुछ इनाम दिलाने का भी वादा किया, और इसके बाद वहां से रवाना होकर मदान की तरफ चल पड़ा। बहादुरसिंह की राय के मुताबिक बुढ़िया ने क्या-क्या काम किया यह तो तभी मालूम होगा जब रम्भा के सिर पर भूत आवेगा हाँ इतना हम अभी कहे देते हैं कि अपनी मदद के लिये बुढ़िया ने कई एक जवान औरतों को रख लिया और कारवाई शुरू कर दी।

२३

हाजीपुर के राजा ने रम्भा के सिर पर भूत आने का हाल जिस समय अपने लड़के की जुबानी सुना तो बहुत ही हैरान हुआ। जाहिर में तो उसने अपने लड़के से कह दिया कि यह सब कोई बात नहीं है मगर उसके दिल में तरद्दुद बना ही रहा। रात के समय जब वह अपने महल में गया तो उसने अपने लड़के की जुबानी जो कुछ सुना था अपनी रानी से कहा। वह बेचारी सुनते ही काँप गई और बोली 'राम-राम, मैं कभी ऐसी लड़की के साथ ब्याह करके अपने बच्चे की जान पर आफत नहीं ला सकती, मैं आज ही उसे घर से बाहर निकाले देती हूँ, जाय अपने मा-बाप का घर तबाह करे।''

दौलत० घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं।

रानी० घबड़ाना कैसा, मैं तो प्रेत के नाम से कांपती हूँ। मुझे यह सब बखेड़ा मंजूर नहीं।।

दौलत० जल्दी क्यों करती हो? पहिले यह भी तो देख लो कि उस दिन

उस पर चुड़ैल आती है या नही, कही उस भगेडी ने धोखा न दिया हो '

रानी उस बेचारे को भला क्या पडी थी कि धोखा देता ?

दौलत० बदमाश लोग अक्सर ऐसा किया करते हैं। तुम इस बात को अपने दिल मे रक्खो किसी से कहो मत, और देखो कि उस दिन क्या होता है, अगर यह बात सच निकली तो उस लडकी को निकाल देना कौन बडी बात है।

रानी खर ऐसा ही सही, मगर मेरा कलेजा तो अभी से डर के मारे कॉप रहा है।

दौलत० डरने की कोई बात नही है, देखो तो क्या होता है।

डरते-कॉपते वह पॉच सात दिन तो निकल ही गए मगर अमावस्या के दिन सवेरे ही से रानी के पेट मे चूहे उछलने लगे। चमेलादाई अपनी सधी हुई लौंडियो के साथ रम्भा के ऊपर मुस्तद थी ही उसके इलावे और भी तीन चार लौंडियो को रानी ने मुस्तद कर दिया मगर वह भूत आने वाला हाल किसी के ऊपर जाहिर न किया।

रानी तो डर के मारे दिन भर उस कमरे मे न गई जिसमे रम्भा रहा करती थी मगर शाम होते होते चमेलादाई दौडी दौडी रानी के पास आई और हॉफते हॉफते बोली, महारानी ! रम्भा का तो अजब हाल है !!

रानी (डरकर) सो क्या ?

चमे० उसका चेहरा लाल हो गया है और बडा-बडी ऑखें खोलकर चारो तरफ देख और झूम रही है।

रानी उससे तैने कुछ पूछा भी ?

चमे० मुझे तो उसके पास जाते डर लगता है। दूर से जब मैं पूछती हूँ सो लाल ऑखें निकाल कर मेरी तरफ देखती है और दाँत पीस पीस के कहती है कि मैं इस घर भर को खा जाऊँगी !

रानी (हाथ उठाकर) हे परमेश्वर, तू ही बचाने वाला है ! हाय न मालूम कहा की आफत आई थी जो लाग उस लडकी को इस घर मे ले आये !

चमे० (हाथ जोडकर) मुझे तो मालूम होता है कि उसके ऊपर कोई जिन्न आया है।

रानी नही जिन्न नहीं है, जो है उसे मैं जानती हूँ, जरा चल तो सही मैं देखूं क्या हाल है।

चमे० भगवान के लिये आप न जाइये, कहीं ऐसा न हो कि कोई नया बखेड़ा मचे ।

रानी वह जो कुछ बखेड़ा मचा सकती है सो भी मैं जानती हूँ । मैं उसके पास जाने वाली नहीं हूँ दूर ही से तमाशा देखूँगी ।

चमेली दाई के साथ रानी साहबा उस कमरे के पास गई जिसमें रम्भा थी । रम्भा के पास जाना तो दूर ही रहा उन्होंने चौखट के अन्दर भी पैर न रक्खा दूर ही से झाँक के देखा । रम्भा उस समय खूब झूम रही थी और आँखें फाड़ फाड़ कर छत की तरफ देख रही थी ।

रानी चमेली, किसी को कहो तो सही उसके पास जाय और बाजू पकड़ कर हिलावे ।

चमे० बहुत अच्छा ।

चमेली कमरे के अन्दर गई और सधी हुई एक लौंडी से जिसका नाम परमेसरी था रम्भा के पास जाने के लिए कहा । परमेसरी रम्भा के पास गई और उसका बाजू पकड़ के हिलाने लगी ।

रम्भा (गुस्से भरी आँखें दिखाकर) भाग जा भाग जा, नहीं तो खा जाऊँगी ।

लौंडी तुम कौन हो, अपना नाम तो बताओ ?

रम्भा तू न मानेगी ? न मानेगी ? दिखाऊँ तमाशा ?

लौंडी अजी कहो तो सही तुम कौन हो ?

रम्भा फिर बकती है ! तू न मानेगी ? अच्छा तो देख तमाशा !!

"अच्छा तो देख तमाशा !" कहकर रम्भा ने उसके सिर पर हाथ रख ही तो दिया । बस कब क्या था । परमेसरी लौंडी तो लगी नाचने और चिल्लाने । चारों तरफ घूम घूम कर चिल्लाने और लौंडियों को चिकोटी काटने लगी । कुल लौंडियाँ जो उस घर में बैठी थीं 'बाप !!' करके बाहर निकल आईं, परमेसरी भी बाहर निकल आई और खूब उछलने कूदने लगी ।

यह हाल देखते ही रानी के तो होश उड़ गए । वह काँपती हुई वहाँ से भागी और अपने कमरे में आ धर्मी । एक लौंडी को कहा जल्दी जा और महाराज को बुला ला आकर देखें रम्भा का हाल, और उसके पास जाकर अपने सिर पर भी हाथ रखा लें । मैं उसी दिन कहती थी कि इस पुतले को आज

ही निकाल दो ! न माना, अब भोगें बैठ के !"

लौंडी दौडी हुई बाहर गयी और चोबदार की मारफत राजा दौलतसिंह को खबर कराई। राजा साहब पहिले ही से इसी सोच मे पडे हुए थे कि देखें रम्भा के सिर पर आज उसकी परदादी आती है या नहीं। खबर पाते ही घबडा कर उठ खडे हुए और डरते-डरते महल में गए। देखें तो रानी साहब घुस कर अपने कमरे मे बैठी हैं और भीतर से किवाड लगा लिया है तथा परमेसरी दाई खूब चिल्ला रही है और इधर से उधर नाच रही है। उसे अपने तनोबदन और कपडे तक की कुछ सुध नहीं है। बस समझ गए कि रम्भा की परदादी आ पहुँची। महाराज लौट कर उस कमरे के दरवाजे पर गए जिसके अन्दर रानी थी और केवाड खुलवाया।

रानी देखा घर मे क्या बखेडा मचा हुआ है ?

दौलत० बेशक वह बात सच निकली, अब क्या किया जाय ?

रानी बस आज ही उसे घर से बाहर निकाल देना चाहिए।

दौलत० इस समय तो उसके पास जाना आफत है, क्या जाने सिर पर हाथ रख दे तो बस

रानी ईश्वर आज का दिन कुशल से बितावे तो कल उस नानी से समझूंगी !

इतने मे एक लौंडी और उस कोठडी मे गई जिसमे रम्भा थी। रम्भा ने उसके सिर पर भी हाथ रक्खा और वह भी परमेसरी की तरह उछलती-कूदती बाहर निकल आई। अब तो महल मे बडी भारी धूम मच गई। जितनी औरतें महल मे थी सभी अपनी अपनी जान बचाने की फिक्र मे लगी सभी को यह खयाल हुआ कि कही रम्भा अपनी कोठडी मे से निकल कर हम लोगो के सर पर हाथ न रख दे।

महाराज दौलतसिंह अपनी रानी से बातचीत कर ही रहे थे कि एक लौंडी ने आकर अर्ज किया, डेवढी पर एक डोली आई है।

रानी उस पर कौन है ?

लौंडी उन्होने अपना नाम तो नही बताया मगर किसी रईस की लडकी मालूम पडती हैं।

रानी क्या यहाँ आना चाहती हैं ?

लौंडी जी हाँ, वह हाजिर हुआ चाहती है और कहती है कि रम्भा के बारे म महारानी साहबा को बिलकुल धोखा दिया गया है, उसका असल-भेद सिवाय मेरे और कोई नही जानता।

रानी (महाराज की तरफ देखकर) यह कुछ दूसरा ही तमाशा नजर आता है ! मैं कैसे विश्वास करूँ ? सब कुछ तो अपनी आँखो देख चुकी हूँ।

लौंडी वह कहती है कि अगर इस समय रम्भा के सिर पर चुड़ैल मौजूद हो तो अच्छी बात है मैं बहुत जल्द सब शक मिटा दूंगी। एक चिट्ठी भी उन्होंने दी है।

रानी ला कहाँ है चिट्ठी ?

लौंडी ने रानी साहबा के हाथ मे चिट्ठी दी। राजा दौलतसिंह ने बड़े गौर से उस चिट्ठी को पढा। यह लिखा था, रम्भा के सिर पर भूत प्रेत या चुड़ैल का आना सब झूठ है। यह फिसाद बहादुरसिंह भगेडी का मचाया हुआ है। वह नरेन्द्रसिंह का दोस्त है और आपकी लौंडियो को उसने मिला लिया है। बाकी हाल हाजिर होकर कहूँगी।"

दौलत॰ देखिए, मैं कहता था न कि यह सब धोखा है। अब उसे जल्द बुलाकर पूछना चाहिए।

महारानी का हुक्म पाते ही लौंडी दौड़ी-दौड़ी गई और डोली पर से सवारी उतरवा लाई।

२४

मोहनी ने अपने जी म जो कुछ ठान लिया है उसे हमारे पाठक अच्छी तरह जानते हैं। इसके पहिले जो कुछ हाल लिखा गया है उसके पढ़ने से तो आपको यही मालूम हुआ होगा कि इस उपन्यास के पात्रो म केतकी बड़ी ही बदकार और बुरी नायका है मगर अब हम कुछ कारवाई मोहनी की दिखाना चाहते हैं जिसे इस उपन्यास का असल पात्र कहना बहुत ही मुनासिब होगा।

श्यामा और भामा (रम्भा और तारा) के छिन जाने और मकान के लुट जाने के बाद जब केतकी भागी तो सीधे अपने जन्मस्थान खास गयाजी मे पहुँची और एक छोटे से मकान मे जिसमे कभी उसका बाप रहा करता था रहने लगी। पहिली सी भीड भाड अब उसके यहाँ नही है, सिर्फ पाँच-सात आदमी

जो उसका साथ किसी तरह छोड नही सकते थे मौजूद हैं। रुपये-पैसे की तरफ से चाहे उसे किसी तरह की तक्लीफ न हो मगर फिर भी उसका दिल किसी तरह खुश नही है। यह जानकर कि मोहनी और गुलाब की जान नरेन्द्रसिंह की बदौलत बच गई, उसे बडा ही कष्ट हुआ। उसने समझ लिया कि अब मेरी जान किसी तरह नही बच सकती, क्योंकि मोहनी और गुलाब बदला लिये बिना कभी न छोडेंगी। दिन रात इसी सोच मे पडी रहती है कि अब क्या किया जाय। थोडे ही दिन बाद उसे जब यह खबर मिली कि मोहनी ऐशमहल मे पहुँच गई तो वह और भी घबडाई और अपनी दो-तीन सखियो को पास बैठा कर सलाह करने लगी मगर इस बात का निश्चय किसी तरह न कर पाई कि मोहनी के साथ क्या बर्ताव करना चाहिये।

जिस मकान मे केतकी रहती थी उसके पीछे एक बाग था। आज वह चाहे कैसी ही बुरी अवस्था म क्यो न हो मगर उसके बाप की जिन्दगी मे वह बाग बहुत ही दुरुस्त रहता था। इस बाग के बीचोबीच म एक छोटा सा बगला भी था जो इस समय केतकी का बठक बन रहा था। अपने समय का बहुत ज्यादे हिस्सा इसी बगले में अकेले बठ कर वह बिताती थी।

इस बगले म किसी तरह की सजावट न थी, सिर्फ फर्श बिछा हुआ था और एक तरफ ऊची गद्दी पर गाव तकिये के इलावे कई छोटे-छोटे तकिए भी मौजूद थे। कोने म चौकी के ऊपर जल से भरी गगाजमनी सुराही और चाँदी का गिलास हर वक्त मौजूद रहता था।

आज आधी रात से ज्यादा बीत जाने पर भी केतकी अकेली उस बगले म गद्दी पर लेटी हुई कुछ सोच रही है। थोडी थोडी देर पर उसास ले ले कर और आखिर मे अफसोस करके रह जाती है। बगले के चारो तरफ वाले बाग मे एक दम सन्नाटा है। अधेरी रात की स्याही ने पूरी तरह अपना दखल जमा रक्खा है।

एकायक सामने का दरवाजा खुला और मर्दाने ठाठ म कमरे के अन्दर आती हुई एक औरत दिखाई पडी जिस पर नजर पडते ही केतकी ने पहिचान लिया और वह चौंक कर उठ बैठी।

यह औरत मोहनी थी जो हाथ मे एक बडा सा चमकता हुआ छुरा लिये केतकी के सामने जा खडी हुई और बोली, "अब क्या इरादा है ?"

इस समय मोहनी की भयानक सूरत देखकर केतकी का कलेजा धक धक करने लगा। पुराने पाप ने उसकी रग-रग ढीली कर दी। डर के मारे चारों तरफ देखने लगी और यहाँ तक घबड़ाई कि मोहनी की बात का कुछ भी जवाब न दे सकी। मोहनी ने फिर ललकार कर पूछा, 'क्यों, चुप क्यों है! कुछ बोल तो सही! तैने क्या सोचकर मुझ पर इतना बड़ा जुल्म किया था?"

केतकी कुछ भी जवाब न दे सकी और सिर्फ एकटक मोहनी के हाथ में मौजूद छुरे की तरफ देखती रही। आखिर मोहनी यह कहती हुई कि 'दस अब मेरी बारी है सभल बैठ!" उसके पास जा पहुँची और छाती पर सवार हो फुर्त उसके कलेजे में भोंक दो-तीन दफे अच्छी तरह हिलाया। दस-पाँच बार हाथ-पैर पटक कर केतकी ने दम तोड़ दिया और उसकी सुन्दर देह मुर्दों की गिनती में गिन जाने लायक हो गई।

मोहनी ने छुरा उसके कलेजे से निकाल लिया और उसी की साड़ी से पोंछ कर वहाँ से चल खड़ी हुई। बगले के बाहर निकल वह बाग में पूरब और दक्खिन कोने की तरफ गई जिधर की दीवार कुछ टूटी हुई थी और पैर अड़ा कर पार हो जाने का सुबीता था। वह बेतरद्दुद दीवार के पार हो गई और वहाँ अपने वफादार सिपाही लालसिंह को दो घोड़ों की बागडोर थामे मौजूद पाया। मोहनी को देखते ही लालसिंह ने पूछा, "काम हो गया?"

"हाँ' कहकर मोहनी एक घोड़े पर सवार हो गई और दूसरे घोड़े पर लालसिंह चढ़ बैठा। दोनों ने तेजी के साथ मैदान का रास्ता लिया। सुबह होने के घण्टे भर पहिले ही दोनों आदमी ऐशमहल में जा पहुँचे जिसे मोहनी का घर कहना चाहिए। घर पहुँचकर भी मोहनी ने आराम नहीं किया बल्कि सीधे नीचे के उस कमरे में पहुँची जिसमें तहखाने का रास्ता था और जिसके बारे में हम ऊपर खुलासा लिख आये हैं। यहाँ आकर उसने चारों तरफ से दरवाजे बन्द कर लिया।

मोहनी ने वही अलमारी खोली जिसे तहखाने का दरवाजा कहना चाहिए और हाथ में रोशनी लेकर नीचे अर्थात तहखाने में उतरी। पहिले थोड़ी देर तक उस लाश के पास खड़ी रही जो उस तहखाने में मौजूद थी और जिसका कुछ जिक्र हम कर चुके हैं। इसके बाद उसने सिरहाने की तरफ से बिछावन का कोना उलटा और लपटा हुआ कागज का एक मुट्ठा जो उसके बीच रक्खा

हुआ था निकाला। सरसरी निगाह से उलट-पलट कर उसे इसलिए देखा जिससे विश्वास हो जाय कि यह वही मुटठा है जिसे वह चाहती है। इस मुटठे म कई बन्द कागज भी नत्थी किये हुए थे जिनमे सुख रोशनाई से कुछ लिखा हुआ था।

मोहनी ने उस कागज के मुटठे को अपनी कुरती के अन्दर रख लिया और फिर से उन देगो का मुह खोल खोल कर देखने लगी जिनमे अशर्फियाँ भरी हुई थी। एक बग म से थोडी सी अशर्फिया निकाल ली और तहखाने से बाहर निकल कर उसका दरवाजा ज्यो का त्यो बन्द और दुरुस्त कर दिया।

इसके बाद उसने दूसरी अलमारी खोली और उनम से सादा कागज और कलमदान निकालकर गद्दी पर जा बैठी। इस कलमदान म स्याही रोशनाइ थी जिसम उसन एक सादे कागज के दोना तरफ कुछ लिखा और तहखाने के अदर लाश के सिरहाने से लाये हुए कागज के मुटठे को कुरती के अन्दर से निकाल कर उसी म अपने लिखे हुए इस कागज को भी नत्थी कर दिया फिर कुछ सोच कर उसने अलमारी म से मोमजामे का एक टुकडा निकाला और उसी म उस कागज के मुटठे को लिफाफे की तरह बन्द कर जोड पर मोहर कर दिया और उस लिफाफे का फिर अपनी कुरती के अन्दर रख लिया। मोहर और चपडा भी उसी कलमदान म मौजूद था।

जब तक यह सब काम मोहनी करती रही तब तक उसकी आँखो स बरा बर आँसू जारी थ। कुछ सोचने के बाद उसन वह मोहर उठा ली जिसम लिफाफा बन्द किया था और कमर के बाहर निकल आई उस समय भी उसन अपन सिपाही लालसिह को दरवाज के बाहर टहलने पाया।

मोहनी को बाहर निकलत देखकर लालसिह न पूछा 'अब क्या करना है ?'

"ठहरो म आती हूँ" इतना कह कर, मोहनी बाग के पूरब तक चली गई और एक कूएँ म उस मोहर को फेंककर तुरत लौट आई। सवेरा होन के पहल मोहिनी न इन सब कामो स छुटटी पा ली और इसके बाद वह लालसिह क पास आकर खडी हो गई।

लालसिह देखिए सुबह की सुफेदी निकली आती है।

मोहनी मुझे भी अब कोई काम करना बाकी नहा है। दोनो घोडे तयार

है ?

लाल० जी हाँ (हाथ का इशारा करके) उस पेड के साथ बधे हैं।

मोहनी (अशर्फियां लालसिंह को देकर) दिन को जो कुछ राय हो चुकी है उसी मुताबिक इन अशर्फियो को बाँट दो और सब आदमियो को समझा-बुझा कर तुम जल्द आओ, तब तक मैं आगे बढती हूँ।

घोडे पर सवार होकर मोहनी उस हाते से बाहर निकल गई।

२५

दो कोस निकल जाने के बाद मोहनी एक पेड के नीचे अटक कर लालसिंह की राह देखने लगी। थोडी ही देर बाद लालसिंह भी आ पहुँचा। मोहनी ने पूछा, "सभो को अच्छी तरह समझा-बुझा आये ?"

लाल० जी हां।

मोहनी अब वे लोग उस ठिकाने पहुँच जायगे ?

लाल० बेशक पहुँच जायगे।

मोहनी अच्छा तो फिर चलो।

लाल० यहाँ से दोनो तरफ जाने के लिए रास्ता है।

मोहनी अगर तुम्हें विश्वास है कि नरेन्द्रसिंह बिहार ही मे मौजूद है तो वहाँ ही चलने मे हमारा काम ठीक होगा।

लाल० इसमे तो कोई शक नही कि नरेन्द्रसिंह बिहार मे हैं मगर एक दफे मैं आपको जरूर समझाऊंगा और कहूंगा कि इतने बड़े काम पर आप कमर न बाँधें और मुफ्त म अपनी जान देने पर मुस्तैद न हो।

मोहनी लालसिंह, मैं जो कुछ इरादा कर चुकी हूँ उसे किसी तरह तोड नही सकती मगर तुम क्यों घबडाते हो ? तुम्हारे लिए बहुत दौलत रक्खे जाती हूँ जिसे तुम और तुम्हारी औलाद दस पुश्त तक आराम से बैठे खायगी तो भी किसी तरह की कमी न होगी।

लाल० यह ठीक है कि आप मेरे लिये बहुत दौलत रख जाती हैं मगर आप ऐसा मालिक फिर मैं कहाँ से पाऊगा ?

मोहनी यह तो दुनिया का कायदा ही है, कोई अमर होकर नहीं आया, आखिर एक दिन मरना ही है, फिर मैं अपने दुश्मनो को आराम करने के

लिए क्यों छोड़ जाऊ? मैं जो कुछ प्रण कर चुकी हूँ उसे अवश्य पूरा करूंगा। देखो लालसिंह, अब इस बारे में तुम मुझे कभी न टोकना, अपने वादे के मुताबिक चलो नहीं तो पछताओगे।

ला० मैं जो कुछ वादा कर चुका हूँ उसके खिलाफ कभी नहीं कर सकता। सर अब न टोकूंगा।

तीसरे दिन मोहनी बिहार पहुँची, एक सुन्दर मकान किराये पर लेकर उसमें डेरा डाला, तथा अपने जरूरी काम का कुल सामान बाजार से मंगवा कर दम लेने के बाद लालसिंह के हाथ एक पुर्जा नरेन्द्रसिंह के पास भेजा।

नरेन्द्रसिंह यह खबर पाकर कि मोहनी यहाँ पहुँच गई है बहुत ही खुश हुए और अपनी इज्जत का खयाल कुछ न करके उसी समय बेखटके उस मकान में चले गए जिसमें मोहनी ने अपना डेरा जमाया था।

हम ऊपर लिख आये हैं कि जब से तारा और गुलाब को लेकर नरेन्द्रसिंह अपने शहर में आए हैं तब से बहुत ही उदास रहा करते हैं। रम्भा और मोहनी दोनों ही का इश्क उनके दिल को मसोस रहा था और दोनों ही के साथ में दिन रात उदास रहा करते थे। पर आज ही बहादुरसिंह की भेजी हुई चीठी उनके पास पहुँची है जिसकी खुशी में वह फूले नहीं समाते। बहादुरसिंह के लिखे मुताबिक चमेला दाई के लड़के को कैद कर लिया और अब अमावस्या र पहिले ही हाजीपुर पहुँचने की फिक्र कर रहे थे कि मोहनी की चीठी लिए हुए लालसिंह पहुचा और एकान्त में मिल कर उनके हाथ में चीठी दी। मोहनी के आने की खबर पाकर और भी खुश हुए और बेखटके उस हरामजादी के मकान पर चले गए।

इनको घर में आते देख मोहनी खूब ही रंग लाई। दौड़ कर उनके गले में लपट गई और देर तक रोती रही। नरेन्द्रसिंह ने उसे बहुत कुछ समझा-बुझा कर चुप किया और देर तक बातचीत करते रहे। मोहनी ने अपना हाल बना कर इस तरह कहा कि उसकी मुहब्बत उनके दिल में और भी ज्यादे हो गई यहां तक कि थोड़ी देर के लिए बिचारी रम्भा का भी ध्यान उनके दिल से जाता रहा। बहुत कह सुन कर आखिर में मोहनी ने पूछा, "अब क्या हुक्म होता है?'

नरेन्द्रसिंह तुम हमारी हो हम तुम्हारे हैं मगर हाय जोड़ कर हम तुमसे

पाँच सात दिन की छुट्टी माँगत है, इतने दिन तक तुम इसी मकान में रहो, हम बहुत जल्द लौट आवेंगे।

मोहनी सो क्या ? कहीं जाने का इरादा है ?

नरेन्द्र० हाजीपुर।

मोहनी सो क्यो ?

इसके जवाब म नरेन्द्रसिंह रम्भा का कुल हाल रत्ती रत्ती कह गए और अत म बोले, "अब रम्भा हाजीपुर मे है और यह सब खबर मुझे उसी मसखरे ने भेजी है। उसन वहा पहुच कर बडा ही रग बाधा है। रानी की एक दासी चमेला दाई को उसने मिला लिया है और राजा दौलतसिंह के लडके प्रतापसिंह म मिल कर उसके दिल मे यह बात जमा दी है कि हर अमावस्या को रम्भा के सिर पर उसकी नानी या दादी चुडैल बनकर आती है और उस दिन वह जिसके सिर पर हाथ रख देगी उसके ऊपर भी भूत आ जाएगा। प्रतापसिंह के साथ रम्भा की शादी होने वाली थी पर वे लोग अमावस्या की राह देख रहे है। अगर उस दिन रम्भा के सिर पर चुडैल आई तो उसे निकाल देंगे और इसम कोई शक नही कि उस दिन उसके सिर पर चुडैल अवश्य आवेगी क्योकि चमेलादाई बहादुरसिंह से मिली हुई है, वह सब बन्दोबस्त कर रखेगी।"

यह हाल सुनते ही मोहनी का क्रोध चौगुना हो गया मगर उसन अपन को खूब सभाला और दिल का हाल जाहिर होने न दिया।

मोहनी अगर चमेलादाई बहादुरसिंह की मदद न करे तब ?

नरेन्द्र० वह नमक मारेगी और मदद करेगी। बहादुरसिंह ने धोखा देकर उस बेतरह फसा रखा है। न मालूम क्या समझा-बुझा कर उसने उसके लडके को मेरे पास एक चीठी दे कर भेज दिया है जिसमे लिखा है कि इस लडके को बद करके रखना। अब वह चमेलादाई को जरूर कहेगा कि अगर तू मेरी मदद न करेगी तो तेरा लडका जान स मारा जाएगा, और भला चमेलादाई कब चाहेगी कि उसका लडका मारा जाए।

मोहनी बेशक उस शैतान (बहादुरसिंह) न खूब ही धोखा दिया है।

नरेन्द्र० इसीलिए आज मैं हाजीपुर जाने वाला हूँ। अगर काम निकल गया तो अच्छा ही है, नही फौज लेकर राजा दौलतसिंह स लडाई करनी पडेगी।

मोहनी आप जरूर आइये, जहाँ तक मैं समझती हूँ आपका काम अवश्य हो जायेगा, ईश्वर करे बेचारी रम्भा यहाँ आ जाए मैं उससे मिल कर बहुत ही खुश होऊँगी।

नरेन्द्र० तुम्हारी बहिन गुलाब को मैं तुम्हारे पास भेज देता हूँ।

मोहनी नही-नही वह आपके घर मे है तो मुझे किसी तरह की चिंता नही है मैं इस समय उससे मिलना नही चाहती क्योकि जब तक आप हाजीपुर से लौट कर न आवेंगे तब तक मैं इस शहर मे गुप्त भाव से रहूँगी। आप भी किसी से मेरी चर्चा न कीजियेगा, आपको मेरे सर की कसम है।

नरेन्द्र० (हस कर) जसी तुम्हारी मर्जी।

और दो घण्टे तक बातचीत होती रही। इस समय मोहनी ने बनावटी मुहब्बत जतान म किसी तरह की कसर रखने न दी। आखिर नरेन्द्रसिंह मोहनी से बिदा हो कर घर चले आये और बहुत जल्द तयारी करके बीस पच्चीस आदमियो को साथ ले हाजीपुर की तरफ रवाना हो गए।

हम ऊपर लिख आये है कि हाजीपुर मे राजा दौलतसिंह के महल म पहुँच कर एक औरत न इस बात को जाहिर कर दिया कि रम्भा के सिर पर भूत चुड़न या जि न कोई नही आता यह सब उसका पाखण्ड है।

उस औरत न महारानी के पूछने पर अपना नाम 'सुन्दर' बतलाया था। महल म पहुँच कर उसने रानी को समझा दिया कि रम्भा के सिर चुडल नही आती और यह सब उसका नखरा है। यह जान कर रानी बहुत खुश हुई और सुन्दर से बोली तुमने मेरे साथ बडी नेकी की मैं उम्मीद करती हूँ कि तुम खुद यह सब हाल महाराज से कह कर उनके दिल का शक भी दूर कर दोगी क्या इसम कोई हर्ज है।"

सुन्दर नही हर्ज क्या है!

रानी तो मैं महाराज को बुलवाऊँ!

सुन्दर हा हाँ आप महाराज को बुलवावें मुझे उनके सामने बातचीत करने म किसी तरह का खौफ नही है वह राजा हैं मैं उनकी लडकी हूँ, मैं उन्ह समझा दूगी कि इस मामले म आपको धोखा दिया गया।

रानी ने महाराज को बुलाने के लिए उसी समय लौंडी भेजी और जब वे आ गए तो कहा "लीजिए सब भेद खुल गया, रम्भा के सिर पर चुडल-परी

कोई भी नही आती, यह सब धोखा है।"

राजा हाँ! तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

रानी (सुन्दर की तरफ इशारा करके) इन्होंने कहा।

राजा (सुन्दर से) तुम्हारा नाम क्या है?

सुन्दर सुन्दर।

राजा मकान कहाँ है?

सुन्दर पटने।

रानी तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि रम्भा नकल करती है?

सुन्दर नरेन्द्रसिंह के दोस्त बहादुरसिंह ने यहाँ पहुँच कर यह सब बखेड़ा मचाया है। उसी ने आपके लड़के का सिद्धजी बन कर धोखा दिया उसी ने आपकी चमेलादाई को मिला लिया और इस पाखण्ड का बन्दोबस्त कर लिया कि रम्भा के ऊपर चुडैल आती है। उसने सोचा था कि आप जब यह हाल सुनेंगे और जानेंगे तो उसे निकाल देंगे और तब रम्भा उन लोगों के पास पहुंच जायेगी जो इतना उद्योग कर रहे हैं। आपकी चमेलादाई का लड़का इन सब बातों की खबर पहुँचाने महाराज उग्रसिंह के पास बिहार गया है, रास्ते में मुझसे मुलाकात हुई। वह मुझे अच्छी तरह पहिचानता था, उसी की जुबानी यह सब हाल मैंने सुना है और अब इनाम की लालच में आपके पास आई हूँ।

राजा बेशक यह इनाम का काम है। (लौंडियों की तरफ देखकर) चमेला दाई कहाँ है? जल्द हमारे पास बुला लाओ।

हुक्म पाते ही कई लौंडियाँ चमेलादाई को बुलाने के लिए दौड़ गईं मगर चमेलादाई कब हाथ आने वाली थी। वह इन सब बातों की सुनगुन पाते ही वहाँ से निकल भागी। लाचार लौंडियों ने वापस आकर अर्ज किया कि 'चमेला दाई तो भाग गई!'

चमेलादाई के भागने की खबर सुन कर महाराज को सुन्दर की बातों पर विश्वास हो गया। महल के बाहर चले आये और चमेलादाई के लड़के की खोज की, पर उसका भी पता न लगा। क्रोध के मारे महाराज का शरीर काँपने लगा। अपने लड़के को बुला कर सब हाल कहा। धीरे धीरे यह बात तमाम शहर में फैल गई।

२६

हाजीपुर से कोस भर की दूरी पर आम की एक बाढ़ी में कई आदमियों को साथ ले नरेन्द्रसिंह टहल रहे हैं। इनके साथ जितने आदमी हैं सभी घोड़ों पर सवार हैं केवल नरेन्द्रसिंह पैदल टहल रहे हैं और इनके सवारी के घोड़े की लगाम एक सवार के हाथ में है। चांदनी अच्छी तरह छिटकी हुई है मगर इस आम की घनी बाढ़ी में उसका बहुत कम हिस्सा जमीन तक पहुंचता है, हां पत्तों में से छनी हुई चांदनी कहीं कहीं जमीन पर पड़ कर सुफेद बुंदकियों की सी दिखाई दे रही है।

नरेन्द्रसिंह को धीरे-धीरे टहलते और सोचते हुए दो घण्टे बीत गए। वह अपने विचार में यहां तक लीन थे कि इस बात का ज्ञान बिल्कुल जाता रहा था कि वे कहां हैं या किस लिए आये हैं लेकिन यकायक घोड़ों के टापों की आवाज ने इन्हें चौंका दिया सर उठा कर उस तरफ देखने लगे जिधर से कई सवार आ रहे थे।

नरेन्द्रसिंह के साथी एक सवार ने कहा, "आप भी घोड़े पर सवार हो जाएँ, क्या जाने ये आने वाले सवार हमारे दोस्त हों या दुश्मन!"

नरेन्द्रसिंह अपने घोड़े पर सवार हो गए और साथ ही एक आवाज हल्की बिगुल की सुन कर बोले, "ये तो हमारे ही आदमी मालूम पड़ते हैं, शायद हमीं लोगों को ढूंढ रहे हैं।"

सवार जी हां हम लोगों को भी बिगुल का जवाब देना चाहिए।

नरेन्द्र० अवश्य।

इधर से भी बिगुल की हलकी आवाज दी गई जिसे सुनते ही वे लोग तेजी के साथ नरेन्द्रसिंह के पास आ पहुंचे और बहुत जल्द मालूम हो गया कि नरेन्द्रसिंह के छोटे भाई जगजीतसिंह कई सवारों को साथ लेकर आये हैं।

नरेन्द्र० तुम क्यों आ गए?

जगजीत० पिता जी की आज्ञा से।

नरेन्द्र० देर हो जाने के कारण उन्हें चिन्ता हुई?

जगजीत० नहीं बल्कि विश्वास हो गया कि जिस काम के लिए आप आये हैं उसमें विघ्न पड़ गया।

नरेन्द्र० बेशक ऐसा ही हुआ।

जगजीत० तो क्या बहादुरसिंह से मुलाकात नही हुई ?

नरेन्द्र० बहादुरसिंह से तो मुलाकात हुई बल्कि रोज ही होती है मगर महल मे एक दुष्ट औरत ने पहुच कर बिल्कुल काम बिगाड दिया। उसने बहादुरसिंह और चमेलादाई की कार्यवाई का हाल खोल दिया। न मालूम उस हरामजादी को कैसे पता लग गया। डर के मारे चमेलादाई भी कही भाग गई, बहादुरसिंह की खोज हो रही है। एक हिसाब से काम बिगड ही गया।

जगजीत० फिर आप यहाँ क्यो अटके हैं ? अब तो घर चलना चाहिए और लड़ाई का सामान दुरुस्त करना चाहिए।

नरेन्द्र० बहादुरसिंह भी आता ही होगा जरा उससे राय मिला ली जाय।

जगजीत० हमारी समझ मे तो अब इस तरह की कार्यवाइयो से काम न चलेगा।

नरेन्द्र० क्या कहें, बना बनाया काम बिगड गया!!

थोडी देर तक बातचीत होती रही, इतने मे बहादुरसिंह भी आ पहुचे। देखते ही नरेन्द्रसिंह उनके पास गए और व्याकुलता के साथ पूछा "कहो कुछ काम होने का रंग है ?"

बहादुर० जी नहीं अब हम लोगो को यहाँ से जल्द भागना चाहिए, आपके आने की खबर यहाँ के राजा को हो गई। गिरफ्तारी के लिए फौज आती ही होगी। (जगजीतसिंह की तरफ देख कर) अच्छा हुआ जो छोटे कुमार भी आ गये।

नरेन्द्र० तो क्या क्षत्री हो कर डर के मारे भाग जाएँ!

बहादुर० जी बस इस वक्त बहादुरी को तो रहने दीजिए! ऐसे मौके पर क्षत्रीपना नही दिखाना चाहिए! बहादुर आपसे भी ज्यादे बहादुर है मगर मौका देख के काम करता है!

जगजीत० बहादुर भाई का कहना ठीक है, ऐसे मौके पर अटकना न चाहिए।

बहादुर० अभी घर चल कर तुरन्त फौज ले कर लौटेंगे। देखिए तो क्या होता है, हाजीपुर के राजा को सुख की नींद कभी जो सोने दिया तो बहादुर

नही !!

नरेन्द्र० बस शेखी की बातें रहने दीजिए, आप लोगो से न कुछ हुआ है न होगा, आप लोग जहाँ जी चाहे जाइये, मै नही जाना।

जगजीत० (हाथ जोड कर) इस समय ठहरने का मौका नही है, आप बस यह एक बात मेरी मान लीजिए।

नरेन्द्र (कुछ सोच कर और लम्बी सास लेकर) खैर !!

ये लोग वहाँ से विहार की तरफ रवाना हुए और सुबह होते होते दस बारह कोस के लगभग निकल गए। इसके आगे रास्ते ही मे एक सुन्दर तालाब देखकर नरेन्द्रसिंह ने स्नान ध्यान से छुट्टी पाने का इरादा किया, आखिर दो घण्टे के लिए वहाँ ठहरना पडा।

उसी जगह मौका मिलने पर एकान्त मे जगजीतसिंह ने बहादुरसिंह से हाजीपुर का हाल पूछा।

बहादुर० (चारो तरफ देख कर) कोई सुनता तो नही ?

जगजीत० कोई नही सुनता आप कहिए।

बहादुर० बडा ही गजब हुआ।

जगजीत (चौंक कर) सो क्या ?

बहादुर० बस कहने लायक बात नही है, देखें नरेन्द्रसिंह अब अपना क्या हाल करते है।

जगजीत० तुम्हारी बातें तो होलदिल पैदा करती है, ईश्वर के लिए जल्द कहो क्या हुआ ?

बहादुर० अभी हमे उस बात पर पूरा विश्वास नही है।

जगजीत० तो भी कहने मे देर न करो।

बहादुर० एक औरत ने महल मे पहुच कर काम बिगाड दिया यह हाल तो आपने सुना ही होगा ?

जगजीत० हा भाईजी ने कहा था।

बहादुर० हाय सुना है कि उस औरत ने बेचारी रम्भा का काम ही तमाम कर दिया और भाग गई।

जगजीत० हाय यह क्या गजब हुआ !!

बहादुर० अभी हम इस बात पर पूरा विश्वास नही होता मगर महल

एक लाश निकाल कर गंगा किनारे जलाई गई इससे विश्वास भी करना ही पड़ता है। यह बात नरेन्द्रसिंह से अभी मत कहियेगा नहीं तो गजब हो जाएगा।

जगजीत० हाय, बुरा हुआ ! मगर तुमने कैसे सुना ?

बहादुर० हमारी दोस्ती वहाँ के एक बजाज से हो गई है, राजदर्बार से उसका घना सम्बन्ध है, उसी की माफत यह सब बातें मालूम हुई हैं।

बहादुरसिंह की बातें सुन कर जगजीतसिंह के चेहरे पर उदासी छा गई और आँखों से आँसू की बूँदें गिरने लगी मगर इस ख्याल से कि नरेन्द्रसिंह को पता न लगे उन्होंने बहुत जल्द अपने को सम्हाला और मुँह हाथ धोकर दुरुस्त हो गए।

नरेन्द्रसिंह अपने घर पहुचे और फौज दुरुस्त करके हाजीपुर पर चढ़ाई करने की फिक्र में पड़े। मगर यह बात मुश्किल थी, क्योंकि जगजीतसिंह और बहादुरसिंह ने रम्भा के मारे जाने का हाल महाराज से कह दिया था। महाराज को भी इसका भारी गम हुआ खुल कर कुछ कर या कह भी नहीं सकते थे क्योंकि इस बात का खयाल था कि अगर नरेन्द्रसिंह सुनेंगे तो अपना बुरा हाल करेंगे और उनसे छिपाया भी जाय तो कब तक ? नरेन्द्रसिंह लड़ाई की तयारी किया चाहते है, उन्हें रोका जाय तो क्याकर ? क्योंकि जब रम्भा ही न रही तो लड़ाई किसके लिये ? इत्यादि बहुत सी बातो को सोचते हुए महाराज बहुत ही विकल हो रह थे साथ ही इसके बहादुरसिंह का यह कहना भी अजब तरह का खुटका पैदा कर रहा था कि अभी रम्भा के मरने का हम निश्चय नहीं कर सकते, ताज्जुब नहीं कोई चालबाजी की गई हो।

चाहे कितनी ही कोशिश क्यों न की जाय मगर जिगर में घाव करने वाले गम की हालत किसी तरह छिपाये नहीं छिपती। रम्भा के मरने की खबर अभी तक यहाँ सिर्फ तीन ही आदमी जानते हैं और तीनों ही उस खबर को छिपाने की कोशिश कर रहे हैं मगर उदासी उनके चेहरे का साथ नहीं छोड़ती जिसे देख देख नरेन्द्रसिंह भी बेचैन हो रहे हैं लेकिन उदासी का सबब उन्हें किसी तरह मालूम नहीं होता।

रात के समय नरेन्द्रसिंह मोहनी से मिलने के लिए उस मकान में गए जहा पहिले उससे मिले थे। इन्हे देख मोहनी बहुत खुश हुई और बड़ी खातिर और

मुहब्बत से पेश आई।

मोहनी० आप तो कह गए थे कि बहुत जल्द लौटेंगे !

नरेन्द्र० हाँ उम्मीद तो ऐसी ही थी मगर देर हो गई।

मोहनी० रम्भा को ले आये ?

नरेन्द्र० नहीं।

मोहनी० सो क्यों ?

नरेन्द्र० वह तर्कीब जो बहादुरसिंह ने की थी दुरुस्त न उतरी, अब फौज लेकर जाना पड़ेगा।

बहुत देर तक इन दोनों में बातचीत होती रही। जहाँ तक हो सका मोहनी ने मुहब्बत जताने में कोई बात उठा न रक्खी। अपने हाथ से कई चीजें खाने की बना नरेन्द्रसिंह को भोजन कराया और नित्य मिलने का वादा करा के विदा किया।

२७

आधी रात से ज्यादे जा चुकी है। एक सुन्दर सजे हुए कमरे में पलंग के ऊपर बेचारे नरेन्द्रसिंह बीमार पड़े हुए हैं। महाराज उदयसिंह और कुँवर जगजीतसिंह सुस्त और उदास उनके पास बैठे हैं। बहादुरसिंह भी एक तरफ बैठ रो रहे हैं। कई हकीम और वैद्य भी दवा इलाज की फिक्र में लगे हुए हैं मगर बीमारी क्या है इसका पता ही नहीं लगता। जाहिर में तो पेट और कलेजे में जलन की शिकायत करते हैं। चेहरा जर्द पड़ गया है घंटे घंटे बाद कै होती है मगर सिवाय खून के और कुछ नहीं निकलता। सभी के चेहरे पर उदासी छाई हुई है। लोग दौड़ धूप कर रहे हैं। इस समय किसी के आने जाने की रुकावट नहीं है जिसका जी चाहे आवे-जाये कोई कुछ नहीं पूछता। ऐसी ही अवस्था में लोगों ने देखा कि हाथ में कागज का एक मुट्ठा लिये हुए मोहनी उस कमरे में घुस आई और राजा उदयसिंह के हाथ में कागज का मुट्ठा देकर दूर खड़ी होकर बोली 'मुझे ऐसी अवस्था में इस ढंग से यहाँ पहुँचे हुए देख आपको आश्चर्य होगा मगर मैं इसका सबब और इसके अन्तर्गत जो जो बातें छिपी हुई हैं जुबानी न कह कर यह कागज का मुट्ठा आपके हाथ में देती हूँ। इसे किसी ऐसे के हवाले कीजिये जो शुरू से आखीर तक ऊँची

आवाज मे पढ के सुना द। मैं पुकार कर लोगो से कहे देती हू कि सब लोग ध्यान देकर सुनें कि इस कागज मे क्या लिखा है और मालूम करें कि मोहनी कौन थी और इस दुनिया मे आकर उसने क्या किया ! अफसोस, आज वह दिन है कि हजारो आदमी रोवेंगे और मोहनी को अर्थात मुझको गालियां देंगे। खैर मैं इसी को गनीमत समझती हूँ क्योंकि ये सब कांटे मेरे ही बोये हुए हैं और सब के पहिले इसका फल भोगन क लिये मैं तयार हू।"

इस समय मोहनी की अजीब सूरत थी, सर के बाल बिखरे हुए थे, आंखें सुख हो रही थी और बोलत समय होठ कांप रहे थे पर उसकी विचित्र बातो ने सभा का ध्यान अपनी तरफ खैंच लिया। राजा उदयसिंह, नरेन्द्रसिंह, जगजीतसिंह और बहादुरसिंह के दिल म इस समय क्या-क्या बातें पैदा हो रही थी उनका समझना मुश्किल है।

राजा उदयसिंह न वह कागज का मुट्ठा मोहनी के हाथ से ले लिया और पहिले स्वय खालकर देखा। यह मुट्ठा बहुत लम्बा और जन्मपत्री के तौर पर लपेटा हुआ था। इसम कई बन्द लिखे हुए कागज के गोद से नबरवार चिपकाये हुए थे। इसम पहिला बन्द कागज का जो सब से ऊपर था स्याह रोशनाई स और इसके बाद कई बन्द लाल रोशनाई से लिखे हुए थे। राजा उदयसिंह ने वह कागज का मुट्ठा मुन्शी के हाथ मे दिया और ऊंचे स्वर से पढने के लिये कहा। मुन्शी न पढना शुरू किया।

पहिले जो कुछ स्याह रोशनाई स लिखा हुआ था यह था

"इस कागज के पढने से आप लोगो को मालूम होगा कि मैंने इस राज्य के साथ बडी भारी बुराई की है। ऐसी अवस्था मे आप लोगो को पहिले यह मालूम होना चाहिये कि मैं किसकी लडकी हू और मेरे बाप ने इस दुनिया मे अपनी करतूतों का क्या बुरा फल उठाया था। इसके बाद आपको मालूम होगा कि मैंन औरत होकर क्या-क्या किया ! मेरे बाप ने अपनी जिन्दगी का हाल स्वय लिखा था, उसक बाद जो कुछ कसर रह गई थी उसे मैंने पूरा किया और उसी म अपना हाल भी मिला कर यह मुट्ठा पूरा किया। इसमे जहां तक लाल रोशनाई से लिखा हुआ है वह मेरे पिता के हाथ का लिखा है और पहिले उसी को पढना मुनासिब होगा, तथा उसी ढग से मैंने इस लेख का सिलसिला दुरुस्त भी किया है।"

साल रोशनाई म जो कुछ लिखा था वह यह था

"मेरा नाम हजारीसिह है। मैंने अपनी करनी से जो कुछ तक्लीफें उठाईं सक्षेप म लिख कर एक ठिकाने रख देना चाहता हू। इसमे सदेह नही कि इस कागज के पढने वालो पर मेरी बुराई खुल जावेगी और मैं बदनाम हो जाऊगा मगर यह समझ कर कि मेरे इस हाल को पढ कर लोगो को नसीहत होगी और वे वस काम न करेंगे जिनकी बदौलत मैंने तकलीफें उठाई और अभी तक जान का खौफ बना ही है मैं ऐसा महसूस करता हू। मैं नही कह सकता कि मेरी जिन्दगी का आखिरी दिन आज होगा या कल।

'मेरे पिता मेरे लिये पचास हजार की आमदनी की जमीदारी और बहुत कुछ दौलत छोड गए। मेरी शादी उन्होने अपनी जिन्दगी ही मे कर दी थी, मगर मरी औरत बदसूरत थी इसीलिये मैं उससे मुहब्बत नही करता था। मरी अवस्था उस वक्त बीस वष की थी जब मैं अपने बाप की दौलत का मालिक हुआ। मेरे यहाँ कई लौंडियाँ थी जिनम से एक लौंडी जिसका नाम शिवकुअरी था बहुत ही खूबसूरत और हसीन थी। मैं उसे बहुत प्यार करता और यही सबब था कि मेरी बदौलत उसे गहने कपडे की परवाह न थी।

"शिवकुअरी किसी दूसरे शहर या इलाके की रहने वाली थी। हमारे यहा वह केवल अपनी बूढी माँ के साथ आई थी और रहती थी। जब उसकी माँ मर गई मैं बहुत खुश हुआ और शिवकुअरी को अपनी जोरू के समान मानने लगा। हाँ यह कहना भूल गया कि शिवकुअरी भी मुझसे मुहब्बत रखती थी और हरदम मेरी खुशी के सामान मे लगी रहती थी।

"शिवकुअरी का हाल सुन कर मेरी स्त्री को बडा ही रज हुआ और उसने मुझे यह कह के धमकाया कि अगर तुम इस लौंडी को यहाँ से न निकालोगे तो मैं बिरादरी मे तुम्हारी करतूत का हल्ला मचवा दूँगी। मेरे लिये यह धमकी बहुत भारी थी क्योकि मैं अपनी बिरादरी का पच था।

'शिवकुअरी की मुहब्बत मैं किसी तरह कम कर नही कर सकता था। मैं चाहता तो अपनी स्त्री को जहर दिलवा कर तय कर देता मगर ऐसा करने से जब बिरादरी वालो को मालूम होता कि मेरी स्त्री मर गई है तब जबदस्ती मेरी दूसरी शादी कर दी जाती जो मुझे मजूर न था। मुझे तो शिवकुअरी ही को अपनी औरत बना कर रखना था इसलिये यह कारवाई न कर सका,

हाँ तीर्थयात्रा का बहाना करके अपनी स्त्री को बाहर ले गया और एक ऐसे ठिकाने खपा आया कि किसी को खबर न हुई और तब उस नेक औरत की जगह मैंने हरामजादी शिवकुंअरी को दे दी। कई तरकीबें ऐसी की गईं कि बिरादरी वालों को मेरी औरत के मरने का हाल मालूम नहीं हुआ और वे लोग बिल्कुल न जान सके कि मेरे घर में मेरी ब्याहता पत्नी है या कोई दूसरी। मगर अफसोस, थोड़े ही दिन बाद कम्बख्त शिवकुंअरी ने जहर उगलना शुरू किया और अपनी बदचलनी का तमाशा अच्छी तरह दिखाया जिसका हाल मैं आगे चल कर लिखता हूँ।

"गयाजी से थोड़ी दूर पर अपनी अमलदारी में मैंने एक बाग और एक मकान बनवाया और उसका नाम 'ऐशमहल' रख कर उसी में शिवकुंअरी के साथ खुशी-खुशी दिन बिताने लगा।

"सात वर्ष के अन्दर शिवकुंअरी से तीन लड़कियाँ पैदा हुईं। बड़ी का नाम बेतकी, मझली का नाम मोहनी, और सबसे छोटी का नाम गुलाब रक्खा गया। धीरे-धीरे शिवकुंअरी की बुरी चालचलन मेरे दिल में खटकने लगी और मुझे मालूम हो गया कि यह कई नीच लोगों से मुहब्बत रखती है जिसका हाल खुलासे तौर पर यहाँ लिखना मैं पसन्द नहीं करता।

"शिवकुंअरी को आजमाने के लिए एक दिन देहात पर दौरे जाने का बहाना करके मैं घर से निकल गया और रात को बेमालूम तौर पर लौट आया। नौकरों में अपने आने की चर्चा न होने दी। सीधा मकान के अन्दर चला गया और सीढ़ी पर धीरे-धीरे पैर रख ऊपर की मरातिब को चला। यकायक मेरे कानों में किसी के साथ बातचीत की आवाज आई जिसे मैं अच्छी तरह समझ नहीं सकता था। धीरे-धीरे कदम दबाये हुए ऊपर पहुँचा और कमरे के पास जिसका दरवाजा बन्द था जा कर खड़ा हो कान लगा कर सुनने लगा। अब साफ मालूम हो गया कि शिवकुंअरी किसी से बातें कर रही है। पहिली बात जो मैंने सुनी यह थी

"जो कुछ तुमने कहा मुझे मंजूर है, मैं खूब चिल्लाऊँगी जिसमें मुझ पर कोई शुबहा न हो फिर तुम्हारे साथ इसी महल में ऐश करूँगी ।"

"इससे ज्यादे मैं कुछ सुनने न पाया—गुस्से से काँपने लगा एकदम किवाड़ खोल अन्दर जा घुसा और अपने पलंग पर एक आदमी को लेटे और शिवकुंअरी

को उसके सर मे तेल लगाते देखा। मगर मैं उस दृश्य को अच्छी तरह देख न सका। मैं नही जानता था कि मेरे लिये यहाँ बहुत कुछ सामान इकट्ठे हो चुके हैं। चौखट से अन्दर पैर रक्खा ही था कि पीछे से आकर किसी ने मेरे गले मे कपड़ा डाल दिया और एक झटका देकर इस तरह खैंचा कि मैं बदहवास होकर पीठ के बल गिर पड़ा। घबराहट और चोट के सदमे से एकदम बेहोश हो गया और जब होश मे आया तब अपने को एक तहखाने मे बन्द पाया। मैं नही कह सकता कि वह समय रात का था या दिन का।

'इस तहखाने की दीवारें संगीन थी और इसकी महराबी छत बहुत नीची थी। एक तरफ आले मे चिराग जल रहा था। मेरे हाथ-पैर खुले थे। मैं घबड़ा कर उठ खड़ा हुआ और धीरे धीरे टहलने लगा। इस कोठरी मे दो तरफ दो दर्वाजे थे जिन्हे खोलकर बाहर निकलने का इरादा किया। पहिले एक दर्वाजे की तरफ गया और खोलने की कोशिश की, मालूम हुआ कि बाहर से बन्द है क्योंकि अन्दर की तरफ कोई जन्जीर या सिटकिनी बन्द करने के लिये न थी। लाचार लौट आया और दूसरे दर्वाजे की तरफ गया।

"यह दर्वाजा अदर से बन्द न था जिससे मैं आसानी से खोल सका मगर उस तरफ झांकने से बिल्कुल अन्धेरा पाया, लाचार फिर लौटा और हाथ मे चिराग लेकर उसके अन्दर गया। छोटी-सी कोठडी नजर पडी जिसमे नीचे उतर जाने के लिए सीढ़िया बनी हुई थी। मैं नीचे उतर गया मगर वहाँ की कैफियत देख एक-दम कांप उठा और थोडी देर के लिए बदहवास हो दीवार से ढासना लगा के बैठ गया। थोडी देर बाद अपने को सम्हाल कर फिर उठा और घूम घूम कर देखने लगा। यह कोठडी बहुत लम्बी-चौडी थी, चारो तरफ हड्डियो के ढेर लगे हुए थे, बीच मे एक सगमरमर का चबूतरा था जिसके ऊपर लोहे की एक मूरत आदमी के कद से बडी बनी हुई थी। उसके दोनो हाथ अन्दाज से भी ज्यादे लम्बे थे। यह मूरत बडी भयानक थी। और इसके चेहरे की तरफ निगाह करने से डर मालूम होता था। इस मूरत के तमाम बदन मे दोरुखे धारवाले नुकीले चाकू लगे हुए थे और आगे वाला हिस्सा तो चाकुओं से एक दम भरा हुआ था।

'इन चमचमाते हुए चाकुओ और मूरत के सिवाय चारो तरफ हड्डियो और मुर्दों के ढांचो को देख मैं कांप गया, दिल मे तरह-तरह की बातें पैदा

होने लगी ठहरने की हिम्मत न पडी, डरता और काँपता हुआ वहाँ से भागा और उसी कोठड़ी मे आकर बैठ रहा जिसमे बेहोशी दूर होने के बाद अपने को पाया था।

"मुझे विश्वास हो गया कि यह जरूर ऐसी जगह है जहाँ आदमी बडी बेदर्दी के साथ मारा जाता है। इस खयाल के साथ ही मेरा सिर घूमने लगा और मैं सोचने लगा कि क्या मैं भी यहाँ इसी लिए लाया गया हूँ। बेशक ऐसा ही होगा। इसमे कोई शक नही कि यह काम शिवकुँअरी के लगाव से किया गया है। इसके साथ ही मैं उस समय की बातो को सोचने लगा जब अपने मकान पर जबदस्ती और बेबस करके गिरफ्तार किया गया था।

"इन्हीं सब बातो को बठा सोच रहा था कि सामने वाला दर्वाजा खुला और दो आदमियो के साथ शिवकुअरी आती हुई दिखाई पडी। उन दोनो आदमियो की सूरत से बदमाशी और बेदर्दी साफ मालूम होती थी। उनका काला रग, स्याह चढी हुई मूछें, सुख आँखें और उलझे हुए घने बाल उनकी दुष्टता का परिचय दे रहे थे। ऊपर लिखी बातो के सिवाय कमर का जाँघिया और हाथ की भुजाली उन्हे साक्षात् काल रूप ही बनाए हुए थी।

"मगर आश्चय यह है कि ऐसे समय मे उन दोनो आदमियो के साथ रहने पर भी शिवकुअरी के चेहरे पर डर, घबराहट या उदासी का कोई निशान नही पाया जाता था बल्कि वह एक तरह पर खुश मालूम होती थी। तीनो आदमी मेरे सामने आकर बठ गए और शिवकुअरी मुझसे बातें करने लगी।

शिव० अफसोस कि मैं आपको ऐसी अवस्था मे देख रही हूँ।

मैं मगर तुम्हारी सूरत से किसी तरह का रञ्ज नहीं पाया जाता है।

शिव० ठीक है, मैं आपको इस कैद से छुडा सकती हू, मगर एक बात पर।

मैं वह क्या ?

शिव० तुम्हारे बाप का लिखा हुआ जो वसीयतनामा है वह मुझे दे दो और अपने हाथ से एक वसीयतनामा दूसरा मेरे नाम का लिख कर मुझे दे दो जिसके जरिए मैं तुम्हारी कुल जायदाद की मालिक बन सकू, क्योकि तुम्हारे बाप ने जो वसीयतनामा लिखा है उसके जरिए से तुम्हारे बाद तुम्हारा लड़का

और अगर लडका न हो तो तुम्हारा चचेरा भाई मालिक बन सकता है, तुम्हारी औरत या तुम्हारी लडकी को सिवाय खाने पीने के और कुछ नहीं मिल सकता।

मैं (क्रोध से) क्या तुमने इसी मतलब से मुझे ऐसी हालत मे डाल दिया है ?

शिव० बेशक।

मैं हाय मुझे तुझसे ऐसी उम्मीद कभी न थी ! मैं तुझे अपना समझता था ! अफसोस !!

शिव० रडियो या सुरतिनो को अपना समझना बिल्कुल नादानी है और उनसे किसी तरह की भलाई की उम्मीद रखने वाला पूरा बेवकूफ है।

मैं (जोश मे आकर) चाहे मेरा सिर काट लिया जाय मगर मैं ऐसा कभी नही कर सकता। साथ ही अगर जिन्दगी है तो जरूर तुझसे इसका बदला लूगा !!

शिव० (हसकर) अभी जिन्दगी की उम्मीद तुम्हे बाकी है ! मेरा कहना न मानकर तुम कभी जिन्दा नही रह सकते !

इसके साथ ही उन दोनो आदमियो मे से एक ने मुझे डपट के कहा, 'यह न समझना कि तुम सहज ही मे मार डाले जाओगे, तुम्हारी जान बडी तकलीफ से ली जाएगी। अच्छा देखो मैं तुम्हें मौत का मजा दिखाता हू !!'

"इतना कहकर उन दोनो ने मुझे मजबूती से पकड लिया और घसीटते हुए तहखाने म ले जाकर उस तेज चाकुओ से भरे हुए मूरत के सामने खडा कर दिया जिसका हाल मैं ऊपर लिख चुका हू और जिसे मैं तहखाने का दरवाजा खोल कर खुद ही देख आया था। उन दोनो ने कहा देखो, एक पेंच घुमाने स इस मूरत मे इतनी ताकत आ सकती है कि तुम्हें दोनो हाथो स अपनी छाती में साथ लगा ले और ये सब तेज चाकू तुम्हारे बदन म घुस जायें। हम लोग ऐसा कर सकते हैं और करेंगे कि तुम्हें उसी हालत म छोडकर चले जाय और तुम इस मूरत के साथ लगे हुए तडप-तडप कर मर जाओ। कोई तुम्हारे चिल्लाने की आवाज भी नही सुन सकता। अब तुम्हीं सोच लो कि अगर तुम मारे जाओगे तो किस तकलीफ स तुम्हारी जान जायगी !!"

"मैं यह बात सुनकर बदहवास हो गया और थोडी देर तक अपने म न

रहा, लेकिन यकायक मुझे एक बात याद आ गई जिससे मेरी बदहवासी जाती रही और मुझे अपनी जिन्दगी की कुछ कुछ उम्मीद हो गई। मैंने कहा खैर जो कुछ तुम लोग कहोगे मैं वही करूँगा।" इतना सुन वे लोग कुछ खुश हुए और मुझे फिर उसी कोठडी मे ले आए जहाँ मैं पहिले था।

शिव० अच्छा अब बताओ तुम्हारे बाप का लिखा हुआ वसीयतनामा कहाँ है? उसे पाने के बाद मैं कागज, कलम दवात लेकर तुम्हारे पास आऊंगी और तुम दूसरा वसीयतनामा लिख देना, बस फिर तुम छोड दिये जाओगे।

मैं वह वसीयतनामा मेरे पुराने खिदमतगार रामदीन के पास है, तुम उससे ले लो।

शिव० वह मुझे कभी न देगा जब तक कि तुम एक पुर्जा उसके नाम का न लिख दोगे।

मैं तुम उसे कहना कि वह वसीयतनामा दे दो जिसके साथ तीन सौ तेंतीस रुपये तेरह आने की थैली तुम्हारे सुपुर्द की गई है।

शिव० अगर इतना कहने से भी वह न दे, तब?

मैं तो जो चाहे मेरी सजा करना।

शिव० अच्छा आखिर मेरे कब्जे से निकल कर कहाँ जाओगे! यह भी करके देख लेती हूँ!

"इसके बाद वे तीनो वहा से चले गए और दरवाजा बन्द करते गए। भूखे प्यासे मुझे फिर उसी तहखाने मे रहकर सोचने और खयाल दौडाने का मौका मिला।

"मैंने सोच लिया था कि अगर वसीयतनामा न दूँगा तो बेशक बेदर्दी के साथ मारा जाऊंगा और वसीयतनामा देने और दूसरा लिख देने पर भी ये लोग मुझे जीता न छोडेंगे क्योंकि बिना मुझे मारे वे लोग वसीयतनामे का सुख नहीं भोग सकते यही सोच कर मैंने दूसरी चालाकी खेली थी कि शायद इस तर्कीब से जान बच जाय।

'रामदीन खिदमतगार मेरे पिता के समय का था। वह बहुत ही नेक, होशियार और दूरअंदेश था। मेरे पिता उसे बहुत ज्यादा चाहते और मानते थे। अपनी जिन्दगी मे मेरे पिता ने उसे एक भेद समझा रक्खा था। उस भेद अथवा इशारे की बदौलत कई दफे पिताजी की जान बच चुकी थी क्योंकि भारी

जिमीदार और अमीर होने के सबब उनके बहुत से दुश्मन थे। वही इशारा रामदीन ने मुझे समझा रक्खा था और ताकीद कर दी थी कि तुम्हारी चाल-चलन अच्छी नही है और मेरी नसीहत भी नही मानते हो ताज्जुब नही कि कभी किसी आफत मे फस जाओ। ईश्वर न करे अगर ऐसा मौका पड़े तो तुम भी अपने बाप की तरह हमारे साथ उसी इशारे का बर्ताव करना। वही बात मुझे याद आ गई जिससे जिन्दगी की कुछ उम्मीद हुई और वही तर्कीब मैंने की। साथ ही यहाँ मैं यह भी लिख देना चाहता हूँ कि रामदीन मेरा सब हाल जानता था और किसी समय भी मेरी तरफ से बेफिक्र नही रहता था।

"इसके बाद शिवकुअरी और रामदीन से जो बातें हुई और रामदीन ने अपनी कार्रवाई का जो कुछ हाल मुझसे कहा वह लिखता हूँ

'जब मैं इलाके पर जाया करता था तो शिवकुअरी अक्सर तीन-तीन चार चार घण्टे तक सिर्फ दो-तीन लौंडियो को साथ ले ऐशमहल के आस पास जगल और मैदान मे घूमा करती थी। अबकी दफे भी मैं हसब मामूल इलाके पर गया हुआ था मगर मेरे चुपचाप लौटने का हाल किसी को मालूम न हुआ और यकायक शिवकुअरी के जालिम पजे म फस गया। मैंने शिवकुअरी को (जब ऐशमहल मे रहने लगा था) घोड़े पर चढना अच्छी तरह सिखाया था क्योकि वहा एका त म और मण्डली या बिरादरी से दूर उसे घोड़े पर अपने साथ लेकर घूमने-फिरने म कोई हर्ज नही समझता था।

मेरी गैरहाजिरी मे शिवकुअरी घोड़े पर सवार हो हवा खाने के लिए बाहर गई और सात घण्टे के बाद लौटी। उसका यह काम रामदीन को बहुत ही बुरा मालूम हुआ सो भी ऐसी हालत म जबकि वह बराबर ही उससे बुरा मानता था और उसे मेरे लिये एक कलक समझता था।

"सुबह के वक्त शिवकुअरी अपने कमरे मे बैठी कुछ सोच रही थी। थोड़ी देर बाद उसने लौंडी भेज कर रामदीन को बुलवाया और उसे अपने पास बैठा कर इधर-उधर की बातें करने लगी। थोड़ी ही देर मे एक लौंडी न अर्ज किया कि सरकार का एक आदमी देहात पर से आया है और एक खत लाया है मगर मुझे नहीं देता है।

शिव० (रामदीन से) तुम उसके हाथ से खत ले लो।

रामदीन बहुत अच्छा।

रामदीन बाहर गया और सरसरी निगाह से उस आदमी को सिर से पैर तक देखने बाद चिट्ठी ले कर शिवकुअरी के पास आया। शिवकुअरी ने चिट्ठी पढ़कर रामदीन से कहा, सरकार ने हम वही बुलाया है।

राम० यहाँ बुलाने की क्या जरूरत थी?

शिव० क्या मालूम! और तुमसे एक चीज लेते आने के लिये भी लिखा है।

राम० वह कौन-सी चीज?

शिव० वसीयतनामा, जो उनके पिता ने लिखा था।

राम० वह वसीयतनामा उन्ही के पास है! मुझे उन्होंने कब दिया जो मांगते हैं!!

शिव० नहीं तुम्हारे ही पास है। लो चिटठी पढो, देखो उन्होंने लिखा है कि तीन सौ तैंतीस रुपये तेरह आने की थली के साथ जो वसीयतनामा रामदीन के पास है सो उससे लेकर चली आओ।

'तीन सौ तैंतीस रुपये तेरह आने' का नाम सुनते ही रामदीन काप उठा और एक दफे गौर से शिवकुअरी की तरफ देखकर बोला, 'अच्छा ठहरो मैं वसीयतनामा लाकर तुम्हे देता हू मगर यह चिट्ठी मुझे दे दो जिसमे सरकार यह न कहें कि हमने वसीयतनामा नही मगाया था!" शिवकुअरी ने चिटठी रामदीन को दे दी, चिटठी लेकर रामदीन बाहर आया और उस आदमी को जो चिटठी लाया था साथ लेकर एक तरफ चला गया।

"दो घण्टे बीत गए मगर रामदीन न आया। शिवकुअरी न उस आदमी को जो चिट्ठी लाया था अपने पास बुला लाने के लिए लौंडी भेजी। लौंडी ने वापस आकर जवाब दिया कि वह आदमी बाहर नही है, रामदीन उसे अपने साथ ले गया। यह सुनकर शिवकुअरी कुछ सोच मे पड गई और देर तक गौर करती रही आखिर कमरे के बाहर निकल आई और एक लौंडी को हुक्म दिया कि बहुत जल्द घोडा कसवा कर ले आ। लौंडी घोडा कसवाने के लिए चली गई मगर बहुत जल्द वापस आकर बोली, साईस का तो आज दिमाग ही नही मिलता, वह कहता है कि मैं इस समय घोडा कसकर न लाऊगा।

शिव० (लाल आँखें करके) क्या उसकी इतनी हिम्मत हो गई!!

लौंडी जी हाँ।

शिव० अस्तबल के दारोगा को तूने इस बात की इत्तला की थी ?

लौंडी की थी मगर वे भी कुछ नही सुनते, कहते हैं कि बिना हुक्म रामदीन के घोडा नही कसा जा सकता।

शिव० (दाँत पीस कर) रामदीन कौन है जो ।

"इतना कहते कहते वह रुक गई जैसे उसे यकायक कोई बात याद आ गई हो।

शिवकुअरी दूसरे कमरे मे चली गई और हवाखोरी की पौशाक पहिन, कमर मे खञ्जर छिपा मुह पर नकाब डाल एक लौंडी को साथ ले हाते के बाहर चली, मगर दरवाजे पर रोक दी गई। वे ही आदमी जो उसका हुक्म मानते थे और उसके नाम से कॉपते थे इस समय मुकाबला करने को तयार हो गए और साफ कहने लगे कि आप इस फाटक के बाहर नही जा सकती। लाचार शिवकुअरी वहाँ से लौटी और अपने कमरे मे आकर बैठ गई। थोडी ही देर बाद एक लपेटा हुआ कागज हाथ मे लिये रामदीन भी आ पहुँचा।

राम० वसीयतनामा तो मैं ले आया हूँ।

शिव० (हाथ बढाकर) मेरे हवाले करो।

राम० मैं आपके साथ चलता हू अपने हाथ से सरकार को दूगा।

शिव० क्या मेरा एतबार नही है ?

राम० नही बिल्कुल नही ! (कुछ सोचकर) खर बात बढाने की कोई जरूरत नही, अब साफ-साफ बता दो कि सरकार कहाँ हैं ?

शिव० (कुछ घबडा कर) मैं क्या जानू सरकार कहाँ पर हैं ?

रामदीन ने जोर से ताली बजाई जिसकी आवाज उस ऊचे छत वाले कमरे मे गूँज गई और इसके साथ ही हाथ मे कुछ लिए दो आदमी उस कमरे मे घुस आये जिन्हें देखते ही शिवकुअरी ने पहिचान लिया कि ये दोनों रामदीन के लडके हैं।

रामदीन (शिवकुअरी से) देखो अब साफ-साफ बता दो नहीं तो तुम्हारी दुगत की जायगी। तुम यह न समझना कि तुम इस घर की मालिक हो। मैं बखूबी जान गया कि तुमने मेरे मालिक को धोखा दिया है। जो आदमी खत लाया था उसे मैंने कब्जे मे कर लिया और सजा देकर सब हाल मालूम कर लिया।

शिव० रामदीन ! मालूम होता है तुम पागल हो गये हो !!

" इतना सुनते ही रामदीन ने अपने दोनो लडको को कुछ इशारा किया। उन दोनो ने शिवकुअरी को मुश्कें बाँध ली और बेंत से मारना शुरू किया।

'मैं अपना हाल बहुत ही मुख्तसर से लिखा चाहता हू इसलिए इतना ही लिखना बहुत है कि शिवकुअरी और उस नकली चिटठी वाले आदमी को मारपीट कर रामदीन ने मेरा कुल हाल मालूम कर लिया और जिस तरह बना मुझ उस कद से छुडाया।

"मैं उस तहखाने मे कसम खा चुका था कि अगर यहा से बच कर किसी तरह निकलू गा तो शिवकु अरी से बेतरह समझू गा। घर पहुच मैंने अपनी कसम पूरी की।

"ऐशमहल मे मैंने एक तहखाना बनवाया था जिसमे अपना खजाना रखता करता था। शिवकु अरी को उसी तहखाने मे ले गया और कुत्तो से नुचवा कर उसे यमलोक की तरफ रवाना किया। साफ करा कर उसकी हड्डियो का ढाँचा उसी तहखाने मे रखवा दिया जो उम्मीद है कि बहुत दिन तक रहेगा और किसी न किसी को मेरे हाल की खबर देकर कुलटा स्त्रियो से बचने के लिए नसीहत करेगा क्योंकि यह कागज भी मैं उसी के साथ रखता हू"।"

यहाँ पर मोहिनी के बाप का हाल जो उसने अपने हाथ मे सुर्ख रोशनाई से लिखा था समाप्त हो गया। अब उस लेख का वह हिस्सा पढा जाने लगा जो स्याह रोशनाई से मोहनी ने अपने हाथ से लिखकर पूरा किया था और अब चिपकाया था। इस जगह महाराज ने उस मु शी को जो पढ रहा था दम लेने के लिए कहा क्योकि हजारीसिंह के विचित्र हाल ने उनके कोमल कलेजे को दहला दिया था। नरेन्द्रसिंह भी पलग पर पडे-पडे इस अनूठे किस्से को सुन के बहुत परेशान हुए। मोहनी की तरफ से उन्हें नफरत हो गई यहा तक कि मु ह फेर लिया और दूसरी तरफ देखने लगे। वह तकलीफ से बहुत ही बेचैन हो रहे थे, दम दम भर पर दवा दी जा रही थी मगर नब्ज कमजोर ही होती जाती थी, फिर भी उन्होंने मु शी की तरफ देखकर आगे पढने का इशारा किया और मु शी ने पढना शुरू किया

"मेरा नाम मोहनी है। मैं हजारीसिंह की मझली लडकी हू। मेरी बडी

बहिन का नाम केतकी और छोटी का नाम गुलाब है। यों तो माँ के मिजाज का असर हम तीनों बहिनों पर पड़ा मगर केतकी उन ऐबों से अच्छी तरह भरी हुई थी जो दुनिया में भले लोगों के हिसाब बुरे गिने जाते हैं। हमारे बाप हजारीसिंह को मुनासिब तो यही था कि हमारी माँ के साथ-साथ हम तीनों बहिनों को भी मार डालता क्योंकि बुरों की औलाद और हरामी पैदाइशों से किसी तरह की भलाई की उम्मीद नहीं हो सकती, मगर हमारे बाप ने हम लोगों पर रहम किया और परवरिश कर के बड़ा किया। थोड़े ही दिन बाद केतकी जवानी पर आई और उसकी शादी की गई, मगर उसकी चालचलन ने हमारे बाप को होशियार कर दिया और उसने निश्चय कर लिया कि इन तीनों लड़कियों से भी सिवाय बुराई के भलाई की उम्मीद किसी तरह नहीं हो सकती, इन तीनों को भी खपा ही देना चाहिये।

"न मालूम किस तरह से अपने बाप का इरादा केतकी ने मालूम कर लिया और वह अपनी जान बचाकर उनकी जान लेने पर मुस्तद हो गई, मगर यह समझ कर कि उनके मरने बाद जायदाद का मालिक उनका भाई या भतीजा होगा, चकी और पहिले उन्हीं दोनों की जान लेने पर मुस्तद हुई। आखिर उन लोगों से मेल और दोस्ती बढ़ाकर जिस तरह हो सका एक ही दफे जहर दिलवा कर उन दोनों का काम तमाम किया और इसके दो ही चार दिन बाद अपने खसम को मारा, तथा तब रसोइये ब्राह्मण से मिल के अपने बाप की जान ली।

हम तीनों बहिनें अपने बाप की जायदाद की मालिक हुईं, मगर केतकी अकेली ही सुख भोगना चाहती थी इसलिये हम छोटी दोनों बहिनों का रहना भी उसे नापसन्द हुआ और उसने बदमाशों के हाथ यह काम सुपुर्द किया। मेरी और गुलाब की जान नरेन्द्रसिंह ने बचाई उसके लिखने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि यह बात बहुत मशहूर हो रही है और महाराज भी उसे अच्छी तरह जानते होंगे। नरेन्द्रसिंह का अहसान मुझे मानना चाहिए था मगर नहीं, अब मैं उनका अहसान नहीं मान सकती और उन्हें किसी तरह माफ भी नहीं कर सकती। अपनी बड़ी बहिन से तो बदला ले ही लिया और उसे जहन्नुम में पहुँचा ही दिया मगर नरेन्द्रसिंह को भी अपनी आँखों के सामने दम तोड़ते देखा चाहती हूँ।"

मुंशी ने यहां तक पढ़ा था कि सभों की हालत बदल गई, क्रोध के मारे बदन कांपने लगा, आँखें सुर्ख हो गईं तलवारों के कब्जा पर हाथ जाने लगे और दांत पीस-पीस कर मोहनी की तरफ देखने लगे। बड़ी कोशिश करके महाराज ने अपने को सम्भाला और आगे पढ़ने के लिये मुंशी को इशारा किया। मुंशी ने फिर पढ़ना शुरू किया।

नरेंद्रसिंह की मुहब्बत देख कर मुझे उम्मीद थी कि मैं उनके साथ ब्याही जाऊंगी क्योंकि मैं भी उन पर जी जान से मरती थी मगर जब मैंने सुना कि व रम्भा के लिये मर रहे हैं तो वह उम्मीद जाती रही क्योंकि मैं अपने साथ किसी सौत का होना पसन्द नहीं करती और न मुझे यह मंजूर ही है। जब मैं स्वयं नरेंद्रसिंह से मिली और बातचीत की नौबत आई तो मुझे निश्चय हो ही गया कि ये अवश्य रम्भा से ब्याह करेंगे, लाचार मुझे भी कसम खानी पड़ी कि रम्भा और नरेंद्रसिंह दोनों ही को इस दुनिया से उठा दूंगी।

अपनी बड़ी बहिन मैतकी से बदला लेकर और उसे जान से मारकर जब मैं बिहार में अर्थात यहां आई तो गुप्त रीति से नरेंद्रसिंह से मिली। उन की बातचीत से यह तो जरूर मालूम हुआ कि वे मुझे भी चाहते हैं और मुझसे शादी करने पर राजी हैं, मगर साथ ही इसके यह भी निश्चय हो गया कि पहिले वह रम्भा से ही शादी करेंगे और तब मुझसे। खैर मुझे अपनी कसम पर मजबूत रहना पड़ा।

"नरेंद्रसिंह की जुबानी मालूम हुआ कि रम्भा हाजीपुर में कैद है और बहादुरसिंह भी हाजीपुर में विराज रहे हैं और वहां उन्होंने चमेलादाई पर अपना कब्जा करके गप्प उड़ाई है कि रम्भा के सिर पर चुड़ैल आती है— इत्यादि जिसमें वहां का राजा रम्भा को निकाल दे और वह सहज ही में नरेंद्रसिंह के हाथ लग जाय।

जब नरेंद्रसिंह रम्भा को लेने गए तो मैं भी भेष बदल कर हाजीपुर पहुँची। अपना नाम सुंदर रख कर महल में गई और बहादुरसिंह और चमेला दाई का भेद खोल दिया। वहां मेरी बड़ी खातिर हुई और रम्भा के बगल ही में एक कोठड़ी मुझे रहने को मिली। महल भर की लौंडियों पर मेरी हुकूमत कायम की गई जिससे मुझे अपना काम करने का बहुत कुछ मौका ।

"रात के समय मैं अपनी कोठड़ी से बाहर निकली महल को

सोता पाया। रम्भा की कोठड़ी में घुस गई मगर वहाँ बिल्कुल ही अंधेरा था। टटोलती हुई रम्भा की चारपाई तक पहुँची और उसे नींद में बेहोश पाकर खञ्जर से उसका काम तमाम किया। यह खबर उसी रोज चारों तरफ फैल गई बल्कि बहादुरसिंह ने भी सुना हो तो ताज्जुब नहीं।"

"मुझे महल से बाहर निकलने में किसी तरह की तकलीफ न हुई। मैं तुरन्त वहाँ से निकल भागी और नरेन्द्रसिंह के पहिले यहाँ आ पहुँची। जब नरेन्द्रसिंह यहाँ आये तो मुझसे मिले। मैंने अपने हाथों से कई चीजें खाने की बनाई और उन्हें खिलाया जिनमें ऐसा जहर मिलाया हुआ था कि जिसका असर किसी तरह और किसी भी दवा से दूर नहीं हो सकता। मेरी मुराद पूरी हुई नरेन्द्रसिंह भी घण्टे-दो घण्टे में इस दुनियाँ को छोड़ा चाहते हैं, अब मैं भी मरने के लिए तयार हूँ जिस तरह चाहे मेरी जान ली जाय कुछ परवाह नहीं।" इति

इस आखिरी लेख के पढ़ने और सुनने पर सभों का अजब हाल हो गया। जितने लोग वहाँ मौजूद थे सभों के मुँह से हाय हाय की आवाज निकलने लगी और सभों के मुँह पर उदासी और मुर्दनी छा गई। महाराज ने अपने दोनों हाथ सिर पर मारे और 'हाय बेटा नरेन्द्र !" कह के बेहोश हो गए।

जगजीतसिंह की आँखों से आँसुओं की नदी बह चली। दीवान, मुत्सद्दी और मुसाहब लोग जो वहाँ मौजूद थे सभी रोने और चिल्लाने लगे। सब तरफ हाहाकार मच गया। बिजली की तरह यह बात चारों तरफ फैल गई। हर तरफ से रोने और चिल्लाने की आवाज आने लगी। धीरे-धीरे नरेन्द्रसिंह के चेहरे पर भी मुर्दनी छाने लगी। और नाड़ी ने जगह छोड़ दी।

पाठक, यह मौका बड़े ही रंज और गम का है। ऐसे किस्सों का लिखना मुझे पसन्द नहीं और न मेरे कलेजे में इतनी मजबूती ही है। इस समय जो हालत है मैं अपनी कलम से किसी तरह नहीं लिख सकता तो भी उम्मीद है कि यह भयानक समा अवश्य पाठकों की आँखों में घूम जाएगा और वे जान जायँगे कि यह कैसा नाजुक मौका है। बहुतों को दुःखान्त नाटक और उपन्यास पसन्द आते हैं। उन लोगों से प्रार्थना है कि बस इसके आगे न पढ़ें और इस उपन्यास को दुःखान्त ही समझ कर इसी जगह छोड़ दें।

मगर उन लोगों के लिए जो कोमल कलेजे रखते हैं, जिन्हें दुःख की कहानी

पसन्द नही, थोडा और लिखे देता हूँ।

आधे घण्टे मे बाहर-भीतर सभो मे यह बात फैल गई और सायत-सायत मे 'हाय हाय' की आवाज बढती गई। महाराज होश मे आये और छाती पर दुहत्थड मार मार रोने लग। नौकरो ने मोहनी की मुश्कें बाँध ली और राह देखने लगे कि जरा सा इशारा हो और इसकी बोटी बोटी काट कर कुत्तो को खिला दें।

इसी समय दो आदमी सिपाहियाना ठाठ से ढाल-तलवार और खञ्जर लगाये मुँह पर नकाब डाले बेधडक भीड को चीरते हुए वहाँ आ पहुचे जहाँ नरेन्द्रसिंह की आखरी हालत देख-देख लोग चिल्ला और रो रहे थे। इन दोना मे से एक ने अपने दोनो हाथ उठाये और चिल्ला कर कहा, "आप लोग चुप रहें, किसी का गम न करें, और विश्वास रखें कि नरेन्द्रसिंह किसी तरह नहीं मर सकते। मैं आ पहुचा हू। आप लोगो के देखते ही देखते इन्हें आराम करूँगा और थोडी ही देर मे यहाँ खुशी के बाजे बजते होंगे।"

इस आदमी के यकायक पहुचने और इस तरह चिल्ला कर ढाढस देने से सभी चौकन्ने हो गए। एक तरह की उम्मीद की झलक सभों के चेहरों पर मालूम होने लगी। महाराज उठ खडे हुए और ताज्जुब के साथ-साथ उम्मीद भरी निगाहो से उस आदमी की तरफ देखने लगे। इस समय मोहनी की मुश्कें बधी हुई थी और वह हर तरह से बेबस एक कोने मे खडी थी मगर किसी तरह की परेशानी उसके चेहरे से मालूम नही होती थी। इस नये आए हुए आदमी के मुँह से निकली हुई बातो को सुन कर वह हँस पडी और बोली, "अगर ब्रह्मा भी उतर कर आवे तो नरेन्द्रसिंह को आराम नहीं कर सकते! दुनिया मे ऐसी कोई दवा ही नहीं जो मेरे जहर को दूर कर सके।"

मोहनी की इस बात ने फिर सभो को परेशान कर दिया। जो कुछ थोडी-सी उम्मीद बँधी थी वह भी जाती रही, महाराज दोनो हाथों से कलेजा थाम "हाय!" करके बठ गए और आँसू भरी आँखों से उस आदमी की तरफ देखने लगे। उस आदमी ने फिर हाथ उठाकर कहा, 'आप लोग मोहनी की बात सुन कर निराश न हो और दिल लगा कर सुनें कि मैं क्या कहता हू। एक समय रम्भा और उसकी सखी तारा को बेतकी के यहाँ रहने का अवसर मिला था। बेतकी इन लोगो से हिल मिल गई थी कि उसने अपना रत्ती रत्ती

कह दिया था। केतकी की एक सखी की जुबानी रम्भा को मालूम हुआ कि केतकी को एक वैद्य ने एक विधि ऐसे जहर के बनाने की बता दी है कि जिस के खाने से आदमी किसी तरह नही बच सकता। कोई दवा उस जहर के असर को दूर नही कर सकती थी, मगर साथ ही इसके उस वैद्य ने यह भी कह दिया था कि अगर उस आदमी को जिसे जहर दिया गया हो आराम करने की जरूरत पड ही जाय तो उसे एक रत्ती सखिया खिलाना चाहिए। जरूर है कि इस उल्टी तर्कीब से लोग हिचकेंगे मगर उस जहर को दूर करने के लिए दुनिया म सिवाय इसके और कोई तर्कीब नही है। मुझे यह हाल खास रम्भा की जुबानी ही मालूम हुआ है। मोहनी केतकी की बहिन है, यह उस दवा को बखूबी जानती होगी और इसने बेशक यही जहर नरेन्द्रसिंह को खिलाया होगा। अब आप बेधडक इन्हें एक रत्ती सखिया खिलावें। इसम कोई शक नही कि ये आराम हो जायेंगे। जब इनकी तबीयत कुछ ठहर जाएगी तो मैं रम्भा का भी हाल आप लोगो से कहूगा जिसके मारने मे मोहनी ने धोखा खाया।'

इतना सुनते ही मोहनी का रग उड गया उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई और उसने चीख कर कहा 'हाय! अब नरेन्द्रसिंह के मरने की उम्मीद नही! अब मुझे अपने मरने का बेशक गम होगा!"

उसकी इस बात के सुनने से लोगो को बहुत कुछ उम्मीद हो गई। महाराज ने कहा, "आखिर तो मेरा बच्चा हाथ से जाता ही है! अब इस बेचारे नेकमर्द के कहे मुताबिक सखिया खिलाने म मैं किसी तरह का हर्ज नही समझता।" नरेन्द्रसिंह मे बोलने की ताकत न थी मगर आँखें बद किये पडे पडे सब कुछ सुन रहे थे।

हुक्म की देर थी। सखिया लाकर नरेन्द्रसिंह को खिलाया गया। उसने तो अक्सीर का काम किया। पेट मे जाते ही नरेन्द्रसिंह की आँखें खुल गईं और नब्ज भी उभड आई। उन्होंने घूम कर उस आदमी की तरफ देखा और चाहा कि उसके मुँह से अब रम्भा का हाल सुनें जिसका उसने वादा किया था मगर बाप के लिहाज से खुल कर कुछ पूछ न सके। महाराज जिनकी निगाह बराबर नरेन्द्रसिंह के चेहरे पर पड रही थी इस भाव को समझ गए और उस आदमी की तरफ देख कर बोले, 'तुमने मुझ पर जो कुछ अहसान किया उस का बदला मैं किसी तरह नही चुका सकता। मैं अपना राज्य, अपना घर और

अपने लड़कों को भी तुम्हारी नजर करने पर सन्तुष्ट नही हो सकता क्योंकि तुम्हारा एहसान इससे भी बढ़ा-चढ़ा है। अब उम्मीद है कि रम्भा का हाल भी कह कर तुम रहे-सहे तरद्दुद को भी दूर करोगे।"

इसके जवाब मे उस आदमी ने एक दफे अपना सर झुकाया और तब इस तरह कहना शुरू किया, "नरेन्द्रसिंह जब केतकी के यहाँ गये थे तो उसे मोहनी समझ कर भुलावे में पड़ गये थे क्योंकि दोनों बहिनो की सूरत-शकल एक ही सी थी। यह हाल वहाँ रहने के सबब रम्भा अच्छी तरह जानती थी। अब हाजीपुर राजमहल मे मोहनी पहुँची और रम्भा की निगाह उस पर पड़ी तो वह तुरत पहिचान गई कि यह केतकी की बहिन है। इसके बाद मोहनी ने जो कुछ वहाँ किया उससे तो रम्भा को उसकी दुश्मनी का और भी पूरा-पूरा सबूत मिल गया। जब मोहनी का डेरा रम्भा के बगल वाली कोठड़ी मे पड़ा तो रम्भा चौंकी और उसने सोचा कि यह जरूर कोई न कोई उत्पात करेगी। रम्भा के घर मे दो चारपाइयाँ थी, एक पर रम्भा सोती थी और दूसरी पर एक दूसरी औरत जो असल मे रम्भा की निगाहबानी पर छोड़ी गई थी सोती थी। रात के समय जब रम्भा की निगाहबान औरत सो गई तो रम्भा ने अपनी चारपाई धीरे-धीरे से उठा कर एक कोने मे खड़ी कर दी और दिया बुझा कर आप उस चारपाई के नीचे जा पड़ी जिस पर उसकी निगाहबान औरत सो रही थी। यह काम रम्भा ने मोहनी के डर से किया था। रम्भा की आँखो मे नींद न थी और वह बराबर जागती रही।"

उस आदमी ने यहाँ तक कहा था कि मोहनी चिल्लाई और बोली, "हाय-हाय! बेशक धोखा हुआ! मेरे हाथ से दूसरी ही औरत कत्ल की गई और हरामजादी रम्भा चारपाई के नीचे छिप कर बच गई! अफसोस, मेरी बिल्कुल कार्रवाई मिट्टी हो गई, और जीते जी मुझे अपने कर्मों का फल भोगना पड़ा!"

इसके जवाब मे उस आदमी ने मोहनी की तरफ मुंह करके कहा, 'बेशक ऐसा ही हुआ और तेरे पीछे-पीछे रम्भा भी महल से निकल भागी जिसके लिए वह तेरा एहसान मानती है। (महाराज की तरफ देख कर) अब थोड़ा सा हाल और कहने को रह गया है मगर उसे मैं इतने आदमियों के सामने नही कह सकता। उम्मीद है कि आप कुंअर जगजीतसिंह, बहादुरसिंह और मोहनी को

छोड़ कर और सभों को यहाँ से बाहर चले जाने का हुक्म देंगे।"

यह सुन महाराज ने सभों की तरफ देखा। इशारा पाते ही सब लोग बाहर चले गये और बहादुरसिंह ने भीतर से दर्वाजा बन्द कर लिया।

अपनी इच्छानुसार निराला पाकर उस आदमी ने मुंह पर से नकाब उतार दूर फेंक दिया और दौड़कर महाराज के कदमों पर गिर कर बोला, "मेरा ही नाम रम्भा है। वह कम्बख्त मैं ही हूँ और मेरे साथ यह मेरा चचेरा भाई अर्जुनसिंह है जो अकस्मात् हाजीपुर में महल से बाहर निकलने पर मुझे मिला था।"

महाराज, नरेन्द्रसिंह, जगजीतसिंह और खैरख्वाह बहादुरसिंह की खुशी का भी अब कुछ ठिकाना न था।

यह सब हाल सुनते ही मोहनी ने इस जोर से अपना सर दीवार पर मारा कि दो टुकड़े हो गया और उसकी आत्मा अपने पतित देह को छोड़कर नरक की तरफ रवाना हो गई।

अन्त में इतना और कह देना मुनासिब है कि यह हाल सुन कर महल में गुलाब ने भी छत पर से कूद कर अपनी जान दे दी।

चारों तरफ खुशी के बाजे बजने लगे और दो ही चार दिन में बड़े धूमधाम से नरेन्द्रसिंह की शादी रम्भा के साथ हो गई।

०॰०